तृतीय वर्ष कला

सत्र - VI (CBCS)

हिंदी प्रश्न पत्र क्र.५

स्वातंत्र्योत्तर हिंदी साहित्य

POST INDEPENDECE HINDI LITERATURE

विषय कोड : UAHIN-602

© UNIVERSITY OF MUMBAI

प्राध्यापक डॉ. डी. टी. शिर्के
स्थानापन्न कुलगुरू,
मुंबई विद्यापीठ, मुंबई

प्राचार्य डॉ. अजय भामरे
स्थानापन्न प्र-कुलगुरु,
मुंबई विद्यापीठ, मुंबई

प्राध्यापक प्रकाश महानवर
संचालक,
दूर व मुक्त अध्ययन संस्था, मुंबई विद्यापीठ, मुंबई

कार्यक्रम समन्वयक : **श्री. अनिल आर. बनकर**
सहयोगी प्राध्यापक इतिहास एवं कला शाखा प्रमुख,
दूर व मुक्त अध्ययन संस्था, मुंबई विद्यापीठ, मुंबई

अभ्यास समन्वयक एवं संपादक व लेखक : **डॉ. संध्या शि. गर्जे**
सहायक प्राध्यापक,
दूर व मुक्त अध्ययन संस्था, मुंबई विद्यापीठ
सांताक्रुझ (पू), मुंबई - ४०० ०९८

लेखक : **डॉ. सुधीर चौबे**
सहाय्यक प्राध्यापक, हिन्दी विभाग,
के.सी. महाविद्यालय, चर्चगेट, एच. एस. एन. सी.
विश्वविद्यालय, मुंबई

डॉ. अर्चना रामजीत दुबे
हिंदी विभागाध्यक्ष,
द. केट्स वी. जी. वझे महाविद्यालय, कला, वाणिज्य व
विज्ञान (स्वायत्त), मुलुंड (पू), मुंबई

एप्रिल २०२३, मुद्रण - १

प्रकाशक : संचालक, दूर व मुक्त अध्ययन संस्था, मुंबई विद्यापीठ,
विद्यानगरी, मुंबई -४०० ०९८.

अक्षर जुळणी व मुद्रण : मुंबई विद्यापीठ मुद्रणालय,
विद्यानगरी, सांताक्रुझ (पू), मुंबई

अनुक्रमणिका

क्रमांक	अध्याय	पृष्ठ क्रमांक
१.	कविता अर्थ, परिभाषा, स्वरुप	०१
२.	स्वातन्त्र्योत्तर कविता संवेदना और शिल्प	१४
३.	काव्य सौरभ (कविता संग्रह) यात्री (सच्चिदानन्द हीरानंद वात्स्यायन अज्ञेय उनको प्रणाम (नागार्जुन) नया कवि (गिरिजा प्रसाद माथुर)	३३
४.	काव्य सौरभ (कविता संग्रह) प्रमथ्यु गाथा (धर्मवीर भारती) इस तरह तो (बाल स्वरुप राही) पानी में घिरे हुए लोग (केदारनाथ सिंह)	४४
५.	काव्य सौरभ (कविता संग्रह) थोड़े से बच्चे और बाकी बच्चे (चन्द्रकान्त देवताले) सिलसिला (धूमिल) रात किसी का घर नहीं (राजेश जोशी)	५५
६.	काव्य सौरभ (कविता संग्रह) चुप्पी टुटेगी (ओमप्रकाश वाल्मीकि) बाजारे - नुमाइश में (दीक्षित दनकौरी) बूढ़ी पृथ्वी का दुःख (निर्मला पुतुल)	६६
७.	हिंदी निबंध का क्रमिक विकास	७६
८.	निबंध विविधा (निबंध संग्रह) बाजार दर्शन - जैनेन्द्र पाप के चार हथियार	९०
९.	निबंध विविधा (निबंध संग्रह) मनुष्य की सर्वोत्तम कृति : साहित्य हिम्मत और जिंदगी	९९
१०.	निबंध विविधा (निबंध संग्रह) अगर मुल्क में अखबार न होते रसायन और हमारा पर्यावरण	१०८
११.	निबंध विविधा (निबंध संग्रह) आंगन का पंछी व्याख्या/ समीक्षा पाँत का आखिरी आदमी	११६
१२.	निबंध विविधा (निबंध संग्रह) मनुष्य और ठग ओ वसंत तुम्हें मनुहा रता कचनार	१२६

❖❖❖❖

NAME OF PROGRAM	T. Y. B. A. (C.B.C.S.) VI
NAME OF THE COURSE	T.Y.B.A. HINDI
SEMESTER	VI
PAPER NAME	POST INDEPENDENCE HINDI LITERATURE स्वातंत्र्योत्तर हिंदी साहित्य
PAPER NO.	V
COURSE CODE	UAHIN–602
LACTURE	60
CREDITS & MARKS	CREDITS - 4 & MARKS -100

स्वातंत्र्योत्तर हिंदी साहित्य

इकाई- I

- कविता : अर्थ, परिभाषा एवं स्वरूप
- स्वातंत्र्योत्तर कविता : संवेदना और शिल्प

इकाई- II **निर्धारित पाठ्य पुस्तक-**

- काव्य–सौरभ (कविता-संग्रह)-**संपादन:** हिंदी अध्ययन मंडल, मुंबई विश्वविद्यालय,मुंबई, राजकमल प्रकाशन,दरियागंज,नई दिल्ली

पाठ्यक्रम के लिए निर्धारित कविताएँ–

- यात्री – सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय'
- उनको प्रणाम – नागार्जुन
- नया कवि – गिरिजाकुमार माथुर
- प्रमथ्यु गाथा – धर्मवीर भारती
- इस तरह तो – बालस्वरूप 'राही'
- पानी में घिरे हुए लोग – केदारनाथ सिंह
- थोड़े-से बच्चे और बाक़ी बच्चे – चंद्रकांत देवताले
- सिलसिला – सुदामा पाण्डेय 'धूमिल'
- रात किसी का घर नहीं – राजेश जोशी
- चुप्पी टूटेगी – ओमप्रकाश वाल्मीकि
- बाज़ारे-नुमाइश में – दीक्षित दनकौरी
- बूढ़ी पृथ्वी का दुख – निर्मला पुतुल

इकाई- III

- निबंध : अर्थ, परिभाषा,भेद और तत्त्व
- हिन्दी निबंध साहित्य का विकास

इकाई- IV निर्धारित पाठ्य पुस्तक–

- निबंध–विविधा (निबंध–संग्रह)– **संपादन:** हिंदी अध्ययन मंडल, मुंबई विश्वविद्यालय,मुंबई, नयी किताब प्रकाशन,दरियागंज,नई दिल्ली

पाठ्यक्रम के लिए निर्धारित निबंध–

- बाज़ार-दर्शन – जैनेन्द्र कुमार
- पाप के चार हथियार – कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'
- मनुष्य की सर्वोत्तम कृति-साहित्य – हजारीप्रसाद द्विवेदी
- हिम्मत और ज़िंदगी – रामधारी सिंह 'दिनकर'
- अगर मुल्क में अख़बार न हो – नामवर सिंह
- रसायन और हमारा पर्यावरण – डॉ. एन. एल. रामनाथन
- आँगन का पंछी – विद्यानिवास मिश्र
- पाँत का आख़िरी आदमी – कुबेरनाथ राय
- मनुष्य और ठग – प्रेम जमेजय
- ओ वसंत तुम्हें मनुहारता कचनार – श्रीराम परिहार

संदर्भ ग्रंथ सूची–

1. काव्यशास्त्र – भगीरथ मिश्र, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
2. साहित्यिक निबंध – गणपतिचन्द्र गुप्त, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
3. हिंदी का गद्य साहित्य – रामचंद्र तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
4. प्रतिनिधि हिन्दी निबंधकार – ज्योतीश्वर मिश्र, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
5. छायावादोत्तर हिंदी गद्य साहित्य – विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
6. हिन्दी–निबंधकर – जयनाथ नलिन, आत्माराम एंड संज, दिल्ली
7. हिन्दी कविता का अतीत और वर्तमान – मैनेजर पाण्डेय, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
8. स्त्री कविता पहचान और द्वंद्व – रेखा सेठी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
9. आज की कविता –विनय विश्वास, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
10. समकालीन कविता : सृजन और संदर्भ–डॉ. सतीश पांडेय, शैलजा प्रकाशन,कानपुर
11.हिन्दी साहित्य : संवेदना के धरातल–सं. डॉ.अनिल सिंह,सीमा प्रकाशन,परभणी
12.चंद्रकांत देवताले की कविताओं में युगबोध –डॉ. गजानन भोसले,अमन प्रकाशन,कानपुर
13.आधुनिक कविता का पुनर्पाठ-डॉ.करुणाशंकर उपाध्याय
14.जनकवि नागार्जुन एवं प्रयोगवदी कवि –डॉ.वीणा दाढ़े,अमन प्रकाशन,कानपुर
15.ललित निबंध : स्वरूप एवं परंपरा –डॉ. श्रीराम परिहार,किताब घर प्रकाशन,नई दिल्ली
16.हजारीप्रसाद द्विवेदी : समग्र पुनर्वालोकन–चौथीराम यादव, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
17.समकालीन नवगीत का विकास –डॉ. राजेश सिंह,वाणी प्रकाशन, दिल्ली
18. समकालीन लेखन और आधुनिक संवेदना –कल्पना वर्मा,राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
19. धूमिल और उनका काव्य –संघर्ष–ब्रम्ह्देव मिश्र,राजकमल प्रकाशन,दिल्ली
20. नागार्जुन : अंतरंग और सृजन–कर्म- सं. मुरली मनोहर प्रसाद सिंह ,राजकमल प्रकाशन,दिल्ली
21. हिन्दी कविता का वर्तमान परिदृश्य–डॉ. हरि शर्मा,प्रकाशन संस्थान,नई दिल्ली
22. कविता का शहर–राजेश जोशी,राजकमल प्रकाशन,दिल्ली
23. कविता की जमीन और जमीन की कविता– डॉ. नामवर सिंह,राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
24. कविता के नए प्रतिमान– डॉ. नामवर सिंह,राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
25.नागार्जुन और उनकी कविता– नंदकिशोर नवल,राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
26.आधुनिक साहित्य मूल्य और मूल्यांकन–डॉ.अनिल कुमार सिंह,साहित्यभूमि,प्रकाशन,नई दिल्ली
27. हिन्दी-उर्दू कविता संदर्भ और प्रकृति–डॉ. एम.एच.सिद्दीकी,ज्ञान प्रकाशन,कानपुर
28. ललित निबंध विधा की बात–डॉ. हूबनाथ पांडेय,अनभै प्रकाशन,मुंबई
29. ललित निबंधकार कुबेरनाथ राय–डॉ. हूबनाथ पांडेय,अनभै प्रकाशन,मुंबई
30. कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'–डॉ. जयप्रकाश नारायण सिंह,साहित्य रत्नाकर,कानपुर
31. हिन्दी गजल के नवरत्न–मधु खराटे,साहित्य रत्नाकर,कानपुर
32. केदारनाथ सिंह का काव्य लोक–डॉ.शेरपाल सिंह,साहित्य रत्नाकर,कानपुर

१

कविता अर्थ, परिभाषा, स्वरूप

इकाई की रुपरेखा

१.० इकाई का उद्देश्य

१.१ प्रस्तावना

१.२ कविता अर्थ और परिभाषा के संबंध का कालानुरूप अध्ययन

१.३ कविता का अर्थ

१.४ कविता की परिभाषा

१.५ कविता के तत्व

१.६ कविता का स्वरूप

१.७ सारांश

१.८ दीर्घोत्तरी प्रश्न

१.९ लघुत्तरी प्रश्न

१.० इकाई का उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन से विद्यार्थी निम्न लिखित मुद्दों से अवगत होंगे -

- कविता का अर्थ समझ सकेंगे
- कविता की परिभाषा से अवगत होंगे
- कविता के तत्वों को जानेंगे
- कविता के स्वरूप का अध्ययन कर सकेंगे

१.१ प्रस्तावना

कविता कहे या काव्य प्राचीनकाल में दोनो ही पर्याय रूप में थे | भारत देश में परम्परानुसार अनेकों ग्रंथ लिखे गए जो आज के समय में भी प्रेरणादायी साबित होते है | उन - ग्रंथो के प्रति भक्ति - आस्था का भाव तो था ही लेकिन उनकी प्रसिद्धी का माध्यम लेखन पद्धति भाषायी सौष्ठव और लयात्मकता भी था | यही कारण है कि हिन्दी भाषी प्रदेशों में 'रामचरित् मानस' जैसे विशाल ग्रंथ का पारायण (वाचन) २४ घंटे में पुरा कर

लिया जाता है | 'रामचरित्र मानस ग्रंथ के २४ घंटे में वाचन पुरा होने का कारण इसकी काव्य सघनता है और दूसरा कारण यह भी है कि यह और इस जैसे अनेक ग्रंथ जितनी आत्मीयता के साथ पठन किये जाते है उससे कई अधिक आत्मीय भाव के साथ लिखे भी गए है क्योंकि उनमें कवि के अंर्तमन के भाव है उनका कौशल, आत्म निष्ठा और समर्पण भाव है जिनकी बदौलत आज इतने उच्च दर्जे का काव्य हम पढ़ सुन रहे है |

कबीर दासजी जैसे महानकवि के विषय में यह मान्यता है कि वे पढ़े - लिखे नहीं थे उनके पदों को व्यक्त करने का माध्यम वे रास्ते में चलते चलते पद गाते जाते थे और उनके शिष्य उन पदों को लिख लेते थे | इस प्रकार अनेको ग्रंथ पाण्डूलिपि में ही उपलब्ध थे |

आज बदलते समय के साथ काव्य रूप में परिवर्तन आया है | प्राचीन काल कहे या कहे कि काव्य के उगम से ही काव्य का पद्द रूप ही हमने पढ़ा सुना | आधुनिक काल तक आते काव्य के गद्द रूप का विकास बहुत तत्तरता से बड़े पैमान पर हुआ | लेकिन यह सच है कि काव्य के पद्द रूप को आज भी कौशल्यपूर्ण माना जाता है | रस, छंद, अलंकार से सजी कविता श्रेष्ठ समझी जाती है |

१.२ कविता अर्थ और परिभाषा के संबंध का कालानुरूप अध्ययन

सर्वप्रथम कविता का अर्थ **प्राचीन काल** के संदर्भ से भी ज्ञात करना हमारे लिए आवश्यक है | क्योंकि कविता का सिद्ध और पूर्ण अर्थ अभी तक अज्ञात ही है | २०० से ३०० वर्ष पहले का काव्य भी आज हमारे सामने प्रस्तुत है और हम सहज ही अनुमान लगा सकते है कि इसके पहले भी काव्य होगा | हम जिन प्राचीन काल के आचार्यो के काव्य और काव्य दृष्टि से अवगत है उनमें भामह, दण्डी, भरतमुनि, रुद्रट, उद्भट, संघ आदि विद्वानों के नाम प्रमुख है |कविता की व्याख्या शायद कविता लिखने से अधिक जटिल हो सकती है |

भक्तिकाल के विषय में यदि हम बात करें तो इस काल में हमें किसी काव्यशास्त्र की आवश्यकता ही नहीं पड़ी | क्योंकि सभी भक्त कवि अपनी अनुभूति, अपने अनुभावों से प्रेरित होकर स्वातं सुखाय काव्य रचना कर रहे थे | उन्हें काव्य के नियम और उसके अर्थ परिभाषा की आवश्यकता ही नहीं थी इसी कारण काव्य शास्त्र की परिभाषा देने की चेष्टा इस काल में नहीं हुई क्योंकि इस समय का काव्य आत्मा से परमात्मा के मिलन का काव्य है यह काव्य ईश्वर की भक्ति का काव्य है | ईष्ट का मार्ग प्रशस्त करने का काव्य है |

रीतिकाल की यदि हम चर्चा करे तो इस काल में शब्द अर्थ अलंकार, रीति, वक्रोक्ति आदि अनेक प्रकार से कविता की व्याख्या की केशव, मतिराम आलम आदि लक्षण ग्रंथकारों ने काव्य की विस्तृत व्याख्या की है|

आधुनिक काल में भारतेन्दु हरिश्चंद्र ने साहित्य में अमुल्य योगदान दिया कई विधा और साहित्य सृजन उनके द्वारा हुआ लेकिन कविता क्या है इस विषय में कोई व्याख्या भारतेन्दुजी ने नहीं की | इस काल में महावीर प्रसाद द्विवेदीजी ने काव्य को व्याख्यायित किया और कहा ज्ञान राशी के संचित भाव को ही काव्य कहते है,इस प्रकार उन्होने

कविता में ज्ञान आवश्यक माना | आगे चलकर रामचंद्र शुक्ल ने ज्ञान की महत्ता को माना लेकिन काव्य के लिए बस ज्ञान होना ही पर्याप्त नहीं है इसके लिए रस भाव की आवश्यकता पर उन्होने बल दिया और कविता को हृदय की मुक्ति की साधना के लिए मनुष्य की वाणी जो शब्द विधान करती है उसे कविता कहते है | इस प्रकार शुक्लजी ने कविता के लिए रस को अनिवार्य तत्व माना है |

सभी कालों में कविता की व्याख्या को लेकर हमने जो चर्चा की उससे सिद्ध होता है कि जब तक कविता जनसामान्य की समझ में आती रही उसकी व्याख्या या कोई अर्थ लगाने की आवश्यकता नहीं पड़ी जैसे भक्तिकाल | और कविता जब जनसामान्य से दूर हो गई उसका अर्थ जानने की आवश्यकता हुई |

आधुनिक काल में नगेन्द्र और नंददुलारे वाजपेयी ने कविता को परिभाषित किया और रस भाव की अनिवार्यता पर जोर दिया |

आगे चलकर नई कविता, प्रयोगवाद का दौर आया उस समय के विद्वानों में अज्ञेय जी का नाम प्रमुखता से लिया जाता है जिन्होनें तारसप्तक के माध्यम से कविता को एक नए आधुनिक भाव बोध को जन्म दिया जिसमे अनेक भाव समाहित थे जो मनुष्य के आन्तरिक और बाहरी दोनो भाव की बात करता था आंतरिक भाव वैयक्तिक था जो अपने मौन, एकांत क्षणबाद और कुंठाओं की बात करता था | बाहरी भाव - बहिर्जगत से जुड़ने वाला था | जिस पर मुक्तिबोध ने अधिक कार्य किया | लेकिन कविता का अर्थ भावार्थ दोनो की दृष्टि में एक ही था कि कविता वही है जो हमारे अस्तित्व पर अंकित हो जाये, मिट न पाये | आधुनिक काल में हरिवंशराय बच्चनजी ने 'कवि हू' नामक कविता लिखी है वे कहते है -

'जो सब मौन भोगते जिते

मैं मुखरित करता हूँ

मेरी उलझन में दुनिया सुलझा करती है

एक गाँठ जो बैठ अकेले खोली जाती

उससे सबके मन की गाँठें खुल जाती है

एक गीत जो बैठे अकेले गाया जाता

अपने मन का पाती दुनिया दुहराती है |

इस प्रकार बच्चनजी ने कविता के माध्यम से कविता के अर्थ और महत्व की उलझन सुलझा दी है |

इस प्रकार हम कह सकते है कि कविता एक प्रतिक्रिया है बहूरंगी विविध रुपी जिंदगी के प्रति प्रतिक्रिया और प्रक्रिया है जिसमे जागरुकता, संवेदनशीलता, चेतना अनुभूति, सहानुभूती, कल्पना, आदि तो चाहिए ही लेकिन इन सबसे ऊपर मकसद होना बहुत

जरुरी है यह एक सांस्कृतिक प्रक्रिया भी है जिससे साहित्य जन्मता है जो यादगार शब्द और अर्थ के रूप में युगों तक जाना जाता है समझा जाता है, |

१.३ कविता का अर्थ

कविता के अर्थ के संदर्भ में जानने की जिज्ञासा यदि हमारे सामने उपस्थित हो तो इस प्रश्न के उत्तर के लिए शब्द अपुरे पड़ जाये | क्योंकि कविता का वृहमान इतना विशाल है कि ये किन्ही शब्दों में समाहित नहीं हो सकता | क्योंकि कविता कवि के हृदय में विचरने वाले मनोवेग को शाब्दिक स्वरूप में पिरोता है | ये विचार एक या दो नहीं अनगिनत हो सकते है और हर एक भाव - विचार दुसरे से भिन्न हो सकता है | कविता सभी भावो - विचारों में समाहित हो जाती है ये भाव - ख़ुशी - गम, लोभ, विप्सा इच्छा, तृष्णा, मोह, क्रोध, मोक्ष आदि अनेकों प्रकार के हो सकते है |

कविता मानव के आस- पास के वातावरण पर भी निर्भर होती है क्योंकि मन में आने वाले या आवा- जाही करने वाले भाव सुख - दुख, आशा - निराशा प्रेम - घृणा, दया - क्रोध आदि चलायमान भाव है जो समय परिस्थिति के साथ बदलते है आते जाते रहते है और इन्ही सर्वभाव का सृजन - संवर्धन काव्य में या कविता में होता है | कविता कवि की भावना - विचार का सुरेख प्रस्तुतीकरण है | और एक ऐसी दृष्टी जो दुनिया को समझने, जानने में हमारी मदद करती है | और कुछ कविताएँ तो हमारा आत्मिक दर्शन कराने की क्षमता भी रखती है | इस प्रकार कविता की अहमियत समाज और सामाजिकता के लिए महत्वपूर्ण है |

कविता और काव्य एक दुसरे के पर्यायवाची समझे जाते है और यह है भी पर्यायवाची बस अंतर इतना ही है कि काव्य शब्द संस्कृत भाषा का है और कविता हिन्दी भाषा का | दोनो ही भाषा में कविता और काव्य शब्द का प्रयोग साहित्य के लिए ही होता है | हिन्दी की तरह प्राचीनकाल में संस्कृत भाषा में भी काव्य के दो भेद किये गये गद्द काव्य और पद्द काव्य | काव्य का एक तीसरा प्रकार भी होता है जिसे चम्पू काव्य कहते है | चम्पू काव्य में गद्द और पद्द दोनो रूप नीहित होते है |

१.४ कविता की परिभाषा

कविता मन उठने वाली उमंग है जो शब्दों के माध्यम से अर्थ को समहित करती है और कभी इसका स्वरूप समय- परिस्थिति के अनुरूप बदलता है तो अर्थ के लिए नए शब्द की उत्पत्ति भी करनी पढ़ती है | लेकिन सिर्फ शब्द और अर्थ से कविता का निर्माण नहीं होता आचार्य - भामह और दण्डी ने इसके लिए भावों की अनिवार्यता की ओर भी लक्ष्य केंद्रित किया | और सर्वोपरि काव्य में भाव को प्रधानता देते क्योंकि अर्थ यदि भाव भरा हो तभी कविता को पूर्णता मिलती है | और उसका रसास्वादन पाठक को मिलता है | कविता शब्द, अर्थ रसहीन हो तो कवि का लिखना ही व्यर्थ है | भामह ने काव्य को परिभाषित करते हुए लिखा है |

"शब्दार्थो सहितौ काव्यम्"

अनेक विद्वानो ने भी भामह की परिभाषा का अनुगमन किया और इसे काव्य की सम्पूर्ण समाहित परिभाषा माना | भरतमुनि ने पहली बार यह संकल्पना सामने रखी कि बिना भाव, बिना रस के काव्य हो ही नहीं सकता - क्योंकि अन्दर के भाव, अनुभूति, संवेदना अधिक आवश्यक है तुलना में रूप सौंदर्य अलंकार के उन्होंने कहा -

'न हे रासाद्वते कश्चिदर्थ प्रवर्तते' इस प्रकार भरतमुनि ने भाव विहिन, रस विहिन शब्द के बिना काव्य को नरर्थक माना |

कविता को पर्याय रूप काव्य में अनेक आचार्यो ने परिभाषित किया है साथ ही आधुनिक काल के आचार्यो, विद्वान और पश्चिमी विद्वानों ने भी कविता को परिभाषित करने का प्रयास किया है इस संदर्भ में सर्वप्रथम आचार्य कुन्तक का नाम आता है जिन्होने काव्य को इस प्रकार परिभाषित किया है –

'वक्रोक्ति काव्यजीवितम्' |

आचार्य वामन ने रीति के अनुसार रचना को ही काव्य मानते हुए लिखा है –

"रीतिरात्मा काव्यस्य" |

आचार्य विश्वनाथ रस युक्त वाक्य को ही काव्य मानते है उन्होने कहा है – "वाक्यम रसात्मकम् काव्यम् "|

पंडित जगन्नाथ कहते है –

"रमणीयार्थ प्रतिपादक: शब्द: काव्यम्"

पंडित अंबिकादत्त व्यास के अनुसार –

"लोकोन्तरानन्ददाता प्रबंध: काव्यानाम् यातु" अर्थात आनंद देनेवाली रचना ही काव्य है |

आचार्य श्रीपतिजी ने कहा है -

"शब्द अर्थ बिन दोष गुण, अहंकार रसवान

ताको काव्य बखानिए क्षीपति परम सुजान" |

इस प्रकार संस्कृत काव्य शास्त्र में और भी विद्वान हुए उनमे प्रमुख है | मम्मट, राज शेखर पंडित राज जगन्नाथ आदि इसके अलावा कविता की व्याख्या निरंतर होती रही | संस्कृत काव्य शास्त्र के अतिरिक्त जब हिन्दी आदि भाषा में साहित्य लिख गया |

आचार्य रामचंद्रशुक्ल के अनुसार - "जिस प्रकार आत्मा की मुक्तावस्था ज्ञानदशा कहलाती है, हृदय की इसी मुक्ति साधना के लिए मनुष्य की वाणी जो शब्द विधान करती

आई है, उसे कविता कहते है कविता के संदर्भ में आचार्य शुक्लजी ने 'कविता क्या है' शीर्षक निबंध में कविता को 'जीवन की अनुभूति' कहा है |

महादेवी वर्मा ने कविता का स्वरूप स्पष्ट करते हुए कहा है - 'कविता कवि विशेष की भावनाओं का चित्रण है |'

पाश्चात्य विद्वान - पाश्चात्य विद्वानो ने कविता पर विचार किया है उनके अनुसार कविता की परिभाषा इस प्रकार है -

मैथ्यु आर्नोल्ड - "कविता के मूल में जीवन की आलोचना है "

शैले के अनुसार - 'कविता कल्पना की अभिव्यक्ति है |'

वडर्स वर्थ :- वडर्सवर्थ ने भाव और स्वतः स्फुर्त सृजनात्मकता पर बल देते हुए कहा है कि - " सम्पूर्ण श्रेष्ठ कविता तीव्र मनोवेगो का सहज उच्छलन है |"

१.५ कविता के तत्व

साहित्य की पहचान कविता और काव्य है क्योंकि प्राचीन काल में साहित्य काव्य का पर्यायवाची रूप रहा है | परिवर्तित समय की प्रवृत्ति ने साहित्य का स्वरूप अथाह कर दिया | गद्य और पद्य स्वरूप ने साहित्य को नया आयाम दे विस्तृत किया और कविता को अपना एक अलग नाम मिला - विधा के रूप में | प्राचीन काल में काव्य को कई विद्वानों ने अपने अपने तरीके से संबोधित किया है |

कविता के अर्थ परिभाषा और स्वरूप का अध्ययन करना जितना महत्त्वपूर्ण है उतना ही महत्त्वपूर्ण काव्य के भेद को भी जानना है | इसीलिए सर्वप्रथम हम काव्य के तत्वों अध्ययन करेंगे |

काव्य के तत्व :- काव्य के प्रमुखत: चार तत्व माने जाते है | १. भाव २. कल्पना, ३. बुद्धि ४. शैली

१. भाव तत्व :-

भाव का संबंध हमारे मन से जुड़ा है और मन हमारे प्रत्येक कार्य की पुष्टि करता है उसी प्रकार भाव तत्त्व का संबंध केवल काव्य से नहीं अपितु संपूर्ण साहित्य से है | क्योंकि साहित्य और काव्य में रचनात्मक भाव तत्त्व द्वारा ही आती है | इस संबंध में आचार्य राम चंद्र शुक्ल कहते है - 'नाना विषयों के बोध का विधान होने पर उससे संबंध रखने वाली इच्छा की एक रुपता के अनुसार अनुभूति के जो भिन्न - भिन्न योग संगठित होते है वे भाव या मनोविकार कहलाते है "| इस प्रकार भाव का संबंध संवेदना से होता है और संवेदनात्मक अनुभूति काव्य का प्रमुख तत्व है | इस प्रकार प्रेम, करुणा, क्रोध, हर्ष, उत्साह आदि विभिन्न परिस्थितियों का मर्म स्पर्शी चित्रण ही भाव है और इसी भाव सौंदर्य को विद्वानों ने रस कहा है |

और इसी आधार पर प्राचीन आचार्यो ने रस को काव्य की आत्मा माना है और नव रासों को काव्य में स्थान दिया गया है | कालांतर में आचार्यों ने भक्ति और वात्सल्य को भी काव्य में स्थान दिया और प्रमुखतः ग्यारह प्रकार के रस माने है |

विचार या कल्पना तत्त्व :-

कविता या काव्य में सौंदर्य का माध्यम कल्पना है | जो मानव और साहित्यकार के भाव में निष्ठित होती है और उसकी अभिव्यक्ति का माध्यम बनती है | कल्पना का संबंध भी मन से होता है | जो कवि की अनुकूल भावनाओं को रंग - रूप – आकार - प्रकार देती है और नव- सृष्टि का निर्माण करती है कल्पना बंधन रहित होती है उसमें जोड़ - तोड़, उलट - फेर की पूरी गुंजाइश होती है | इस संबंध में शेक्सपिअर का कथन है :- कल्पना अज्ञात वस्तुओं को आकार प्रदान करती है | शून्य को भी सत्ता और आकार देती है "|

कल्पना कैसी भी या किसी भी प्रकार की हो सकती है कभी नियंत्रित और कभी अनियंत्रित भी हो सकती है | यह भाव कवि के विचार और व्यक्त करने के माध्यम पर निर्भर होता है | कबीर, रहीम, नानक के विचारों में नीतिपरकता थी वहीं सूर तुलसी की कल्पना उनके भाव भंगिमा से जुड़ी थी जो भक्ती मयी थी |

ज्ञान और बुद्धि :-

बुद्धि और ज्ञान भी काव्य तत्त्व के निर्माण में अहम भूमिका निभाता है | यह तत्त्व कल्पना को अनियंत्रित होने से बचाता है, विचारो को सही दिशा में ले जाता है | यह तत्व सत्य की सृजनता करता है | विषय को उत्तम प्रकार से प्रस्तुत करता है आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने कविता में ज्ञान तत्व की अनिवार्यता पर बल दिया है व ज्ञान बुद्धि हीन काव्य निरर्थक माना है | क्योंकि बुद्धि से ही औचित्य का विस्तार होता है | कवि की भावनाएँ जब गलत दिशा में उड़ान करती है तो बुद्धि और ज्ञान द्वारा ही उसकी सीमा निर्धारित होने में सहायता मिलती है | और ज्ञान, बुद्धि उपजित काव्य समाज के लिए भी प्रेरक होता है |

नाद अथवा शैली तत्व :-

साहित्यकार को असली पहचान उसके द्वारा व्यक्त शैली से मिलती है प्रत्येक साहित्यकार के अभिव्यक्ति का माध्यम अलग होता है और इसी माध्यम के द्वारा वह पाठकों से जुड़ता है इसके अंतर्गत उसकी भाषा, शब्द रचना अर्थ के साथ ही शब्द - शक्ति, अलंकार, छंद, गुण आदि का समावेश होता है | इसके द्वारा ही कविता में लय, तुक, गति की दिशा प्रवाहमय होती है उक्त सभी घटको का यदि कविता में विन्यास हो और संगीतात्मकता भी साथ हो तो कविता का सौंदर्य द्विगुणित बढ़ जाता है | यही तत्व पाठक के हृदय को आकर्षित करता है | इसी प्रकार अन्य तत्वों के साथ शैली तत्व की अनिवार्यता को नकारा नहीं जा सकता यदि भाव, अर्थ, अनुभूति काव्य के प्राणतत्व है तो शैली तत्व काव्य का शरीर है |

चार तत्व की अनिवार्यता काव्य को सुगम सुन्दर मनमोहक बनाने के लिए आवश्यक है | किसी एक तत्व की कमी काव्य को निरूह बना सकती है |

१.६ कविता का स्वरूप

कविता भाव, विचार, कल्पना, प्रतिक्रिया, अनुभूति और संवेदना है लेकिन इससे कहीं ऊपर उठकर वह किसी भाषा के शब्दो का मेल, अर्थ, ध्वनि और ताल है इस प्रकार कविता या साहित्य सृजनात्मक अभिव्यक्ति है जो कथ्य, विचार, भाव, कल्पना से पूरित होती है इन्ही सब तत्वो के आधार से ही काव्य या साहित्य पाठक के हृदय में अपना स्थान तय करता है | और इसी कारण कविता बाह्य स्वरूप के साथ मनुष्य के आन्तरिक स्वरूप से भी जुड़ी होती है | कविता के स्वरूप का विस्तृत अध्ययन में इसके आन्तरिक और बाह्य दोनो स्वरूप को जानना नितांत आवश्यक है |

कविता का बाह्य स्वरूप :-

कविता के बाह्य स्वरूप के अध्ययन में छः तत्वों का प्रमुखता से समावेश किया गया है जो इस प्रकार है -

१. लय :-

लय कविता का प्रमुख तत्व है | जिस प्रकार हमारी दिनचर्या और जीवन शैली में सूर्योदय सूर्यास्त, ऋतुएँ आदि अनेक बाते नियोजित और निर्धारित है यह क्रम जीवन के लिये आवश्यक है और इनका फेर उलट होना सब कुछ बिगाड़ भी सकता है | उसी प्रकार कविता में लय अर्थात शब्दो का नियोजन अनिवार्य है जो कविता में विशेष प्रभाव उत्पन्न करता है कविता का सम्पूर्ण आनंद उसके लय पर ही निर्भर है |

इस संदर्भ में हम उदाहरण स्वरूप कैलाश वाजपेयी की कविता की कुछ पंक्तियाँ देखते है :-

"सबको रोशनी नहीं मिलती

समझौता कर लो

अंधियारे से

हर भटके राही को सिर्फ यही उत्तर एक मिला ध्रुवतारे से |"

२. तुक :-

तुक का अर्थ होता है कविता, गीत आदि के चरण का वह अंतिम व्यंजन, शब्द या पद जिसके अनुप्रास का निर्वाह आगे के चरणों या पदों में करना आवश्यक होता है, तुक द्वारा कविता, गीत का कोई पद, चरण या कड़ी जिसमें अंत की ध्वनि साम्य हो तुक कहलाता है |

हिन्दी साहित्य के आदिकाल से ही कविता तुकांत होती आयी है इसके कारण कविता में गेयता आ जाती है | लेकिन आधुनिक कालीन कविता में तुकांत नहीं है और यह आवश्यक भी नहीं है कि तुक हो | एक तुकांत कविता का सीधा - सरल उदाहरण इस प्रकार है -

'एक दो तीन चार

आओ चले कुतुब मिनार |

पांच छः सात आठ

देखे चल के राजघाट |

नौ, दस, ग्यारा, बारा

चले चाँदनी चौक फव्वारा |

तेरा, चौदा, पंद्रह, सोला

कनाट प्लेस में मुर्गा बोला |'

३. छंद :-

छंद का सर्वप्रथम उल्लेख हमें ऋग्वेद में मिलता है | जिसका अर्थ होता है आल्हादित करना खुश करना | काव्य में वर्णो या मात्राओं की नियमित संख्या के विन्यास से जो आल्हाद उत्पन्न होता है उसे छंद कहते है | आचार्य रामचंद्र शुक्लजी छंद को परिभाषित करते हुए लिखते है-

"छंद वास्तव में बंधी हुई लय के भिन्न भिन्न ढाँचों का योग है जो एक निश्चित लंबाई का होता है |"

हिन्दी साहित्य में परम्परागत रचनाएँ इन नियमों का पालन करते हुए रची जाती थी यदि छंद को विस्तार से देखे तो इसके दो अंग है |

१. चरण और पाद :- एक छंद चार चरणों का होता है | चरण को ही पाद कहा जाता है | हर पाद में वर्णो या मात्राओं की संख्या निश्चित होती है | चरण दो प्रकार के होते है

i) समचरण ii) विषम चरण

२. वर्ण और मात्र :-

छंद में जो अक्षर प्रयोग होते है उन्हे वर्ण कहते है | छंद के चरणों को वर्णो की गणना के अनुसार व्यवस्थित किया जाता है | मात्रा की दृष्टि से वर्ण दो प्रकार के होते है |

i) लघु या ह्रस्व ii) गुरु या दीर्ध

इसी आधार पर छंद के दो प्रकार तय किये गये है :-

i) मात्रिक छंद, ii) वार्णिक छंद

इस प्रकार छंद नियमों से बद्ध है और मध्ययुग तक की संपूर्ण हिन्दी कविता विभिन्न चरणों में लिखी गई जिनमे चोपाई, दोहा, सोरठा, कविता, सवैया, कुण्डलियाँ आदि प्रमुख है | लेकिन आज की कविता में छंद प्राय: समाप्त हो गए है यंत्र तंत्र आवश्यकतानुसार छंद बनाकर उसमें मात्राओं का संयोजन किया जाता है |

४. शब्द योजना :- कविता का सौंदर्य शब्द चयन पर निर्भर होता है इसीलिए कविता में उपयुक्त शब्द चयन बहुत आवश्यक है | भारतीय काव्य शास्त्र में तीन प्रकार की शब्द शक्तियो का उल्लेख है – अभिधा, लक्षणा और व्यंजना | अभिधा का प्रयोग सामान्य अर्थ के लिए लक्षणा का संबंधित अर्थ और व्यंजना दोनो ही अर्थो में विलक्षण अर्थ का बोध कराती है | व्यंजना काव्य का सौंदर्य बढ़ाने का कार्य करती है | कविता में शब्द संयोजन की कुशलता चमत्कार का कार्य करती है | एक उदाहरण इस प्रकार है :-

'मन में विचार इस विधि आया |

कैसी है यह प्रभूवर माया |

क्यों आगे खड़ी है विषम बाधा |

मैं जपता रही कृष्ण - राधा |

५. चित्रात्मक भाषा :-

कविता की लोकप्रियता का एक कारण चित्रात्मक भाषा भी है | इस प्रकार की भाषा के प्रयोग से कम शब्दो में अधिक भाव व्यक्त किये जा सकते है |

जैसे -

'हाँ मुझे स्मरण है :

दूर पहाड़ों से काले मेघों की बाढ़

हाथियों का मानो चिंघाढ़ रहा हो युथ |

घरघराहट चढ़ती बहिया की |

रेतीले कगार का गिरना छप - छड़ाप |

झंझा की फुफकार तप्त,

पेड़ो का अररा कर टूट - टूट कर गिरना |

ओले की कर्री चपत |'

६. अलंकार :-

आचार्यो के अनुसार बिना अलंकार के कविता संभव नहीं है | अलंकार का शाब्दिक अर्थ आभूषण है स्त्री की शोभा जिस प्रकार आभूषणों से बढ़ जाती है | उसी प्रकार काव्य की शोभा अलंकार से बढ़ती है |

संक्षेप में हम कह सकते है कि काव्य अर्थात भाषा को शब्दार्थ से सुसज्जित तथा सुन्दर बनाने वाले चमत्कार पूर्ण ढंग को अलंकार कहते है | ये प्रमुखतः दो प्रकार के होते है :- i) शब्दालंकार ii) अर्थालंकार

इन अलंकारो के भेद व उप भेद भी है जिन्हे इस प्रकार समझा जा सकता है :-

अप्रस्तुत वस्तू योजना के अलंकार - उपमा, रूपक उत्प्रेक्षा आदि |

वाक्य, वक्रता के अलंकार - व्याज स्तुति, समासोक्ति वर्ण - विन्यास के अलंकार - अनुप्रास आदि |

आन्तरिक स्वरूप :-

कविता के आन्तरिक स्वरूप का तात्पर्य कविता की आत्मा से है | क्योंकि साहित्य वह गद्य हो या पद्य उसके बाहरी रूप के माध्यम से नहीं आन्तरिक व्याप्ति के कारण ही पाठक को आकर्षित करता है | इसे विभिन्न तत्वो द्वारा समझा जाना जा सकता है |

१. अनुभूति :-

जैसा कि हम सभी जानते है कि वही साहित्य या वही काव्य श्रेष्ठ होता है जिसका सिद्ध संबंध हृदय से हो और ऐसा तभी होता है जब काव्य में अनुभूति हो | और अनुभूति निर्भर करती है कवि की संवेदना पर | काव्य तभी सफलता पाता है जब कवि जिस संवेदना से लिखे उसी की अनुभूति पाठक को हो | उसमे किसी भी प्रकार का परिवर्तन न हो | कवि भवानी प्रसाद मिश्र ने कवियों के विषय में कुछ पंक्तियाँ कही है जो इस प्रकार है :-

' कलम अपनी साध

और मन की बात बिल्कुल ठीक कह एकाध |

यह की तेरी - भर न हो तो कह

और बहते बने सादे ढंग से तो बह

जिस तरह हम बोलते है, उस तरह तू लिख

औ इसके बाद भी हमसे बड़ा तू दिख |'

इस प्रकार अपने सीधे साधे ढंग से भी कवि एकाध बात कविता के माध्यम से लिखने का प्रयत्न करता है |

विचारों की व्यापकता :- हिंदी में एक कहावत बहुत ही प्रचलित है 'जहाँ न पहुंचे रवि वहाँ पहुंचे कवि'इस कहावत से आपने अंदाज लगा लिया होगा कि कवि के मन के आवेग या गति कितनी अथाह ओ सकती है | कवि का ज्ञान का विस्तार और उसकी दृष्टि, सोच, विचारों को व्यापक बनाता है|और पाठक को भी जागृत करने का कार्य करता है |

कल्पना :- कवि की सोच उसका अनुमान और शब्दरचना का प्रयोग पाठक की कल्पना शक्ति को बढ़ाने का कार्य करती है | उत्तम शब्दावली और शब्द रचना कविता को उत्तम बनाती है उसी प्रकार पाठक के कविता पठन के उपरांत उसी विश्व में ले जाने का कार्य करती है | प्राचीन आचार्यो ने कहा है - कथन शैली मन की आत्मिक शक्ति को स्वतः उद्भूत करती है |यदि कल्पना का सम्बन्ध ह्रदय की संवेदना से समन्वयित हो तो वह कविता उच्च कोटि की कहलाती है |

रस और सौन्दर्यता :- शब्द और अर्थ कविता का निर्माण करते है लेकिन रस,अलंकार और भाव के बिना कविता अधूरी है इसीलिए आचार्यो ने रस को काव्य की आत्मा माना है |कविता पठन के समय पाठक के मन में जागृत होने वाली अनुभूति हि रस है |इस प्रकार रस कविता का परम ध्येय है |इसमे व्यक्ति विभिन्न प्रक्रियाओ से होकर गुजरता है |भाव ,विभाव,अनुभाव | भाव के दो पक्ष होते है आलम्बन और उद्दीपन और अनुभव की भी एक स्थिति होती है इस प्रकार इन तीनो के संयोजन से रस की उत्पत्ति मानी गयी है |कविता में यदि सुंदर मनोहर दृश्य का वर्णन हो तो पाठक अपने आप ही उस दृश्य में लीन हो जाता है |

उदात्तिकरण भाव :- कविता सिर्फ सौन्दर्य,उद्देश्य,उपदेश आदि विषयों पर ही हो ऐसा नहीं है |कविता जीवन की परेशानी,उलझने, अनुत्तरित प्रश्न आदि को भी सक्षमता से दर्शाती है |साथ ही घृणा,ईर्ष्या,निर्दयता,कुटिलता धूर्तता, आदि विषयों को लेकर और इनके कारणों को लेकर आगे बढती है | तो पाठक का ह्रदय परिवर्तन भी कर सकती है और समाज में सत्य,अहिंसा,सहिष्णुता आदि का भाव समाज में रुजू हो सकता है और इन्ही भावों की उदात्तता कवियों द्वारा अनुग्रहित होती है |इसलिए इतिहास ,महापुरुषों की जीवनी आदि पर काव्य रचा जाता है |

१.७ सारांश

इस प्रकार हम कह सकते है कि कविता एक प्रतिक्रिया है बहूरंगी विविध रुपी जिंदगी के प्रति प्रतिक्रिया और प्रक्रिया है जिसमे जागरुकता, संवेदनशीलता, चेतना अनुभूति, सहानुभूती, कल्पना, आदि तो चाहिए ही लेकिन इन सबसे ऊपर मकसद होना बहुत जरुरी है यह एक सांस्कृतिक प्रक्रिया भी है जिससे साहित्य जन्मता है जो यादगार शब्द और अर्थ के रूप में युगों तक जाना जाता है समझा जाता है |

१.८ दीर्घोत्तरी प्रश्न

१. कविता का अर्थ परिभाषा समझते हुए उसके स्वरूप को विस्तृत लिखिए |

२. कविता के तत्व का परिचय देते हुए ,उसके स्वरूप पर चर्चा कीजिए |

३. कविता का कालानुरूप अध्ययन करते हुए अर्थ और परिभाषा को विस्तार से लिखिए |

१.९ लघुत्तरी प्रश्न

१. प्राचीन काल में साहित्य का कौनसा रूप अधिक प्रचलित था ?

उत्तर - पद्द रूप

२. 'वाक्यं रसात्मकम काव्यम' उक्त परिभाषा में काव्य में कौनसे भाव की अनिवार्यता मानी गयी है ?

उत्तर - रस

३. 'कविता कवी विशेष की भावनाओं का चित्रण है |' उक्त परिभाषा किसकी है ?

उत्तर - महादेवी वर्मा

४. कौनसे पाश्चात्य विद्वान ने कविता को कल्पना की अभिव्यक्ति माना है ?

उत्तर - शैल

❖❖❖❖

२

स्वातन्त्र्योत्तर कविता संवेदना और शिल्प

इकाई की रुपरेखा

२.० इकाई का उद्देश्य

२.१ प्रस्तावना

२.२ स्वातन्त्र्योत्तर कविता

२.३ स्वातन्त्र्योत्तर कविता संवेदना

२.३.१ पूंजीवादी व्यवस्था का विरोध

२.३.२ साम्प्रदायिकता, जातिवाद, रूढि और अन्धविश्वास

२.३.३ नारी के प्रति दृष्टिकोण

२.३.४ किसान,मजदूर ब गरीबो के प्रति उदार दृष्टिकोण

२.३.५ यथार्थ,पीड़ा,निराश और अवसाद वाद

२.३.६ मार्क्सवादी स्वरूप

२.३.७ गाँव की मिटटी के प्रति लगाव

२.३.८ प्रकृति वर्णन में सामाजिक रूप

२.३.९ कवि की भूमिका

२.४ स्वातन्त्र्योत्तर कविता में शिल्प

२.४.१ भाषा

२.४.२ बिम्ब

२.४.३ प्रतीक

२.४.४ उपमान

२.४.५ मुहावरे व लोकोक्ति

२.४.६ सारांश

२.५ दीर्घोत्तरी प्रश्न

२.६ लघुत्तरी प्रश्न

२.७ सन्दर्भ ग्रन्थ

२.० इकाई का उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन से विद्यार्थी स्वातन्त्र्योत्तरकवियों की कविताओ को जान सकेंगे | साथ ही उस समय के सामाजिक ,आर्थिक ,राजनीतिक परिवेश और उस परिवेश को सुधरने में साहित्य का क्या योगदान था यह भी जान सकेंगे |साथ ही मानवीय संवेदना को किस प्रकार कवियों ने कविता में जिवंत किया है |साथ ही स्वातन्त्र्योत्तर कवियों की कविताओ का शिल्पगत अध्ययन से भी अवगत होंगे |

२.१ प्रस्तावना

देश की आजादी का जश्न पूरे देश के लिए एक बढ़े त्यौहार सा था | क्योंकि ३०० साल की परतन्त्रता के बाद देश को आजादी मिली यह आजादी आसानी से नही मिली थी | इसके पीछे अनेक स्वतन्त्रता सैनिकों के लहु बहे थे न जाने कितने घर और गाँव मिटे थे आन्दोलन और संघर्ष हुए | आजादी मिलने के बाद एक टीस अभी तक सबके मन में थी कि देश के दो टुकड़े भी हुए थे | लेकिन ३०० साल के परतंत्र को स्वतन्त्रता में बदलने के लिए कुछ तो कीमत चुकानी ही थी | यदि हम स्वातन्त्र्योत्तर साहित्य की बात करे खास कर हिंदी कविता की तो इस समय हिंदी कविता का भी एक नए युग का सूत्रपात हुआ था कवि परिस्थितियों से भलीभांति परिचित थे |सभी कवियों के काव्य में कई स्थानों पर समानता देखी जा सकती है। सारे विश्व में और खासकर देश में विचारों की जो नई बयार बह रही थी, उससे तार सप्तक के कवि भली-भांति परिचित थे और तेजी से बदलते हुए घटनाचक्र पर सतर्क दृष्टि रखे हुए थे। कहा जा सकता है कि कवि समय के साथ चल रहा था। कई कवि तो स्वतन्त्रता संग्राम की लढाई में हिस्से दार भी थे इसलिए अपने दौर की राजनैतिक हलचलों से स्वयं को अलग नहीं रख सकना उनके लिए असम्भव था |

२.२ स्वातन्त्र्योत्तर हिंदी कविता

स्वातन्त्र्योत्तर हिंदी कविता में सर्वप्रथम जिक्र होता है तार सप्तक के प्रकाशन का एवं स्वाधीनता प्राप्ति के उपरांत रची गई हिंदी कविता का इस विषय पर विचार करते हुए पहले तो यह अध्ययन करना होगा कि सात-आठ के दशक की इस लंबी यात्रा में कविता अनेक मोड़ों से गुजरी है, कई ठोकरे खायी है अनेक पड़ावों पर ठहरी है और इस बीच उसने नए-नए आयाम भी हासिल किए हैं। इस समय के विचार, कथ्य, भाषा, शिल्प, सभी दृष्टियों से कविता कई विषयों को लेकर साझा हुई है किसी एक विषय पर टिकी नहीं रही, निरंतर अपना विकास करती रही। इस अवधि राष्ट्रीय क्षितिज पर जो परिवर्तन हुआ , कविता उनसे भी अछूती नहीं रही। सामाजिक-राजनैतिक परिदृश्य में आए परिवर्तनों से कविता प्रभावित होती रही है ।सबसे बड़ा जो परिवर्तन था वह था भारत तीन सौ साल की गुलामी से मुक्ति पाकर स्वाधीन हुआ। यह अध्ययन का विषय है कि इस एक बड़ी घटना ने कविता को किस सीमा तक प्रभावित किया। ऐसे समय में परवर्ती घटनाओं, प्रसंगों व परिस्थितियों की लंबी श्रृंखला है जिसने विश्वजन के साथ-साथ कवि मन को भी आंदोलित किया जाना स्वाभाविक है।

कहा जाता है कि कवि समय के साथ चल रहा था। दूसरे, यह तो स्वीकार्य है कि रचनाकार अपने दौर के सामाजिक राजनैतिक परिवेश को लेकर आगे बढ़ता है उसका प्रभाव तो किसी न किसी रूप में काव्य पर पड़ता ही है, तार सप्तक के प्रकाशन एवं स्वाधीनता प्राप्ति के उपरांत रची गई हिंदी कविता के विषय पर विचार करते हुए पहले तो यह जानना होगा कि सम्वेदनाओ से तादात्म्य रखने वाला कवि स्वयं की चार दिवारी से बाहर निकलकर समाज व जीवन के गूढ़ यथार्थ व सत्य से साक्षात्कार कर उनमे वियाप्त विसंगतियो,विषमताओं व विडम्बनाओ के मूल कारण को खोजकर अपनी कविता के माध्यम से उन्हें उजागर करता है|

आज के तकनीकी युग ने विश्व की दुरी बहुत कम करदी है लेकिन मानवता ने अपनों को अपनों से दूर कर दिया है | वह भौतिकता में मग्न हो मानवता को तिलांजली दे रहा है एसी स्थिति में सम्वेदनात्मक साहित्य मानव का हितचिन्तक साहित्य के रूप में उभरा है जिसके परिणाम स्वरूप साहित्य में अत्यधिक बौद्धिकता दिखाई देती है | इन लोक सम्वेदनाओं में भारतीय संस्कृति के मूल्य समाहित है जो सामान्य जन को सही दिशा देने का कार्य करते है इस साहित्य की प्रमुखता है - निश्चलता, त्याग की भावना,परस्पर सोहार्द की भावना, धर्म परम्पराओं के प्रति अनुराग की भावना आदि | भौतिकवादी युग में सम्वेदना से युक्त काव्य मानव के आंतरिक संतुलन अनुशासन और उसके उत्कर्ष के लिए मंगलकारी साबित हुआ है | साहित्य के आकर्षण से उपजी अनेक समस्याओं ने जन मानस के साथ-साथ कवियों को भी गॉव की ओर आकृष्ट किया।

ग्रामीण जीवन व सुषमा के बीच वह सहजता दिखी, जो शहरी कृत्रिमता से कोसो दूर थी। कुछ कवियों ने गॉव की प्रकृति, वहाँ के जीवन की उन्मुक्तता, सरलता, सहजता को जीवन- आदर्श के रूप में अपनाने की प्रेरणा देते हुए अपनी लेखनी मे प्रमुख स्थान दिया।

स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी कविता झंझावातों के झेलने की शक्ति प्रदान करती है। इस काल का नायक कोई राजकुमार नहीं, वरन् वह आम आदमी है जो सत्ता व व्यवस्था की दुर्नीतियों से सबसे अधिक पीड़ित है। इस आम-आदमी को सुदृढ़ करना व उसमे आत्म-विश्वास जागृत करना इन कवियों के कविता का एक महत्वपूर्ण पहलू है।

स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी कविता में निराशा, कुण्ठा, हताशा दिखाई पडती है, लेकिन इसका कारण "मात्र व्यक्तिगत दुख-दर्द" ही नही है। आम-जनता का पुराने जड-मूल्यो से चिपके रहना भी है। पर यह निराशा स्थायी नहीं रहती। अन्तह कवि आशावादी दृष्टिकोण के साथ नये परिवेश में नये व सार्थक मूल्यो की स्थापना के प्रति आश्वस्त दिखाई पडते है।

स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी कविता की एक प्रमुख विशेषता "लोक के प्रति उनकी निष्टा' है। उसका सहज रुझान लोक जीवन व उसकी संवेदनाओ की ओर है। सामान्य-जन के प्रति उसका लगाव आजादी-पूर्व के काव्य-सन्दर्भो से भिन्न है। आजादी के पूर्व की कविता में तत्कालीन परिवेशानुरूप आन्दोलन का स्वर प्रमुख है, पर स्वातन्त्र्योत्तर कविता में व्यक्त लोक जीवन विविध सहजानुभूतियों व सवेदनाओं से भरा है। गॉव का

सहज प्राकृतिक रूप, वहाँ की मिट्टी की सोंधी महक ने कवियों को विशेष रूप से प्रभावित किया।

२.३ स्वातन्त्र्योत्तर हिंदी कविता में सम्वेदना

देश के लिए स्वतन्त्रता प्राप्ति एक वरदान था, भारत माता सदियों के बंधन से आजाद हुई थी। सबको आशा थी कि अब सब कष्ट -दुःख मिट गये नयी भोर हुई है अब सब सजल होगा पर हुआ इसके विपरीत सब कुछ आसान नही था। सरकारी नीतियाँ समानता की थी लेकिन सरकार की कथनी और करनी में अन्तर था। इसका परिणाम यह हुआ कि देश का आम-आदमी आज भी बडे-बडे नगरों के फुट-पाथों पर अपनी जिन्दगी की रोटी सेकता हुआ जाडे की रात मे भी उसी पर सोता हैं और अपने जीवन को मौत के मुँह में स्वय झोंकने के लिए विवश है।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के उपरान्त हिन्दी साहित्य मे एक अद्भुत आन्दोलन का प्रादुर्भाव हुआ। स्वातन्त्रयोत्तर कवियो की सशक्त लेखनी ने स्पष्ट शब्दों मे शासन व्यवस्था पर प्रहार करना प्रारम्भ कर दिया। कविताएँ कवियों के हृदय की वेदना की मर्मभेदिनी ध्वनि है। यह ध्वनि खोखली नहीं है वरन् आम-आदमी की असहनीय पीडा की सहायक ध्वनि है, जिसे कविता का स्वर प्राप्त हुआ है। कवियो ने इस पीडा का प्रत्यक्षीकरण के आधार पर चित्रण नहीं किया है वरन् स्वानुभूत सत्य को कविता की भाषा के माध्यम से प्रस्तुत किया है। इसे अभिव्यक्त करने के लिए इन कवियो ने नयी शैली की सर्जना की है। नूतनता सृष्टि, चेतना और विकास-प्रक्रिया के माध्यम से। जडता को तोडना इन कवियो का लक्ष्य है। यह जडता आम-आदमी, शोषितो, दलितो और सताये हुए सामान्य जनो की है, क्योकि वह यथास्थिति को स्वीकार कर नारकीय जीवन जीने के लिए बाध्य है अथवा इसे वह अपनी नियति मान कर संघर्षशीलता को तिलाजलि देकर जडता को अपनी जिन्दगी की सॉस मान कर जी रहा है। स्वातन्त्रयोत्तर कवियों मे नागार्जुन, धूमिल, त्रिलोचन, केदारनाथ अग्रवाल तथा गिरिजा कुमार माथुर ,अज्ञेय, रघुवीर सहाय,आदि अनेक कवियों की कविताओं मे आम-आदमी के जीवन की यथार्थता चित्रित की है। इन कवियों ने इसी प्रकार के जीवन की जिया है, इसलिए इन्हें जिस पीड़ा की अनुभूति हुई है उसकी सजीव अभिव्यक्ति उनकी कविताओ में दिखाई पड़ती है।

२.३.१ पूंजीवादी व्यवस्था का विरोध :

स्वातन्त्र्योत्तर कवि पूँजीवादी-व्यवस्था के उद्दाम शत्रु कवि है | ये कवि कविता के माध्यम से पूंजीपतियों के क्रूर क्रिया कलापों का वर्णन कर पीडितो का सम्वेदना पूर्ण चित्रांकन करते है | लोकतान्त्रिक व्यवस्था में आम-आदमी की यह दशा शर्मनाक है। पूँजीपतियों ने लोकतन्त्र का सर्वनाश कर दिया है।भारत का जनतन्त्र केवल मुखौटा मात्र है।इस शासन व्यवस्था मे गरीबों का शोषण और धनियों का पोषण होता है |स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद सभी जन यह आशा कर रहे थे कि हमारी शासन व्यवस्था में समानता होगी शोषक वर्ग सिंहासन से दूर होगा और आम जनता के अनादिकालीन दुख दूर होंगे।अब स्वतन्त्र भारत मे शोषण का अन्त हो जाने से आम आदमी, जिन्हें पशु से भी

हेय समझा जा रहा था अब आदमी की भॉति स्वतत्रता की सॉस लेगे। किन्तु पूँजीपतियों या शासको ने ऐसा नही होने दिया आज भी भारत का नागरिक शोषित ही रहा अंतर बस इतना था पहले गैरों के हाथों दहन हो रहा था और अब अपने ही लुट रहे थे | उसकी आह को स्वातन्त्र्योत्तर कवियों ने पहचाना नागार्जुन , केदारनाथ और अन्य स्वातन्त्र्योत्तर कवि के अतिरिक्त कौन सुनने और देखने वाला था ऐसा उस समय का मंजर था |

“रामराज मे अब की रावण नंगा होकर नाचा है ,

सूरत सकल वही है भैय्या, बदला केवल ढॉँचा है,

गॉधी जी की कसमे खा-खा, कौन किसे ठग सकता है,

ठण्डा चूल्हा फूटी हाडी, नहीं कहीं कुछ पकता है"

इसी सम्बन्ध में कवि त्रिलोचन कहते है -

“बीज क्रान्ति के बोता हूँ मै,

अक्षर दाने है,

घर बाहर जन समाज को नये सिरे से

रच देने की रूचि देता हूँ,

घिरे-घिरे से

रहना असम्मान है

जीवन का अनजाने

अगर घुटन हो प्राण

छटपटाये तो घेरा

तोड फोड दो क्योकि हुआ नया सबेरा |”?

२.३.२ साम्प्रदायिकता, जातिवाद, रूढि और अन्धविश्वास :

स्वातन्त्र्योत्तर कवियों ने साम्प्रदायिकता, जातिवाद, रूढि और अन्धविश्वासो का निरन्तर विरोध करते रहे है। इनकी दृष्टि मे छुआछूत, रूढियाँ, अन्धविश्वास आदि सामाजिक बुराइयाँ दीन-दलितो की प्रगति में बाधक है | केदारनाथ अपनी कविता “भारत माँ का गीत” मे साम्प्रदायिकता के विरूद्ध प्रभावकारी आवाज उठाते हुए भारतमाता के स्वर मे कहते है कि

"हिन्दू और मुसलमान में मेरा ही रक्त बहता है

इसीलिए जब तुम एक दूसरे का खून करते हो,

तो मेरा ही खून बहता है|"

स्वातन्त्र्योत्तर कवियों ने आजीवन साम्प्रदायिकता का विरोध करते रहे। उनकी दृष्टि में धर्म की कट्टरता, विध्वंशकारिणी प्रवृत्ति, आम जनता को ही अपना शिकार बनाती है। और उसे फैलाने वाले मूक-दर्शक बने रहते है। शास्त्र और मानवता मे यदि विरोध है तो शास्त्र की क्या आवश्यकता है। मानवता ही मनुष्य की अमूल्य धरोहर होनी चाहिए जिसे सजोकर रखना हम सबका धर्म है।

इस सम्बन्ध में कवि धूमिल मोचीराम कविता में कहते है | आदमी एक जोडी जूता मात्र है। उसके पास आने वाले दो विपरीत स्वभावी ग्राहक कवि की संवेदना को अलग-अलग ढंग से प्रभावित करते है एक गरीब है जिसके प्रति मोची की सहानुभूति है ।उसके चकत्तीदार जूतो पर मोची अपनी आँखे टॉक देना चाहता है|" यहाँ कवि स्वयं शोषित, दलित ,अभावग्रस्त वर्ग के एक व्यक्ति के रूप मे दिखाई पड रहा है, जो दूसरो के दुख से दुखी है। दूसरा वह व्यक्ति है जो गरीबो पर अनायास रौब दिखाता है। ऐसे लोगो के लिए कवि का तर्क है- 'जैसा काम वैसा दाम! । बेवजह गरीबो को सताने वाले व्यक्ति के प्रति कवि के मन मे कोई संवेदना नहीं है |

इस प्रकार स्वातन्त्र्योत्तर कवियों ने धर्म व जाति के आधार पर बनी व्यवस्था की अमानवीय कहा है | क्योंकि वह हर एक को दूसरों से अलग करने मे जुटी है। ऐसे मे सच्चा लोकतन्त्र भला कैसे जीवित रह सकता है क्योकि जातिगत भेदभाव के रहने से समानता कैसे रह सकती है?

२.३.३ नारी के प्रति दृष्टिकोण :

स्वातन्त्र्योत्तर कवियों ने नारी के विभिन्न रूपों का वर्णन किया है इन रूपों में नारी का त्यागमय रूप सर्वाधिक उल्लेखित है | इनकी कविता के शब्द प्रवेश कुल्हाड़ से तोडते हुए किसान की पत्नी,मीलो तक पानी के लिए जाने वाली औरतें और लठैतो द्वारा बहू-बेटियो की सरेआम होने वाली बेइज्जती आदि और ऐसे संवेदनशील मुद्दों को अभिव्यक्त कर सभ्य समाज को उनके निहित समाज के चरित्र को सबके सामने रखते हैं।

"सामन्ती घराने की जागीरदार

बूढी सी सास ज्यो

स्वय पिशाचिनी का प्रचण्ड रूप ले

विद्रोहिणी विधवा निज बहू पीटी गयी,

पीठ पर बैठकर

जबर्दस्त हाथ में

गरम-गरम लोहे की श्लाका से पीठ दागती है,

त्यो रामू के जन-जन का हिय भी

पल-पल मे दागा है।"

एक दूसरा उदहारण इस प्रकार है -

"गर्भवती नारी का ।

जो पानी भरती है

वजनदार घडो से, मजदूरी करती है

पुत्रों के भविष्य के लिए ।"

नारी का त्यागमय रूप कवि और समाज दोनों के लिए अधिक आकृष्ट करता है। देश की स्वाधीनता की रक्षा के लिए आत्मोत्सर्ग करने वाली कुमारी रोशनआरा पर लिखी गयी उनकी कविता "आतिश के अनार सी, वह लडकी-" देशभक्त नारी के प्रति कवि की आदरांजली है। नारी के प्रति उन्होने कई संदर्भों में बातें कही है पर नारी का हर वह रूप, जो मर्यादाओं से बँधा है, उनकी दृष्टि मे श्रेष्ठ है। कवि का ' नारी के प्रति दूषित दृष्टिकोण नहीं रहा है। अपने कर्मों के अनुरूप ही नारी अबला-सबला व कलंकिनी, दुराचारिणी कहलाती है। कवि धूमिल जीवन के हर क्षेत्र से विकृतियो को उखाड फेकना चाहते थे। अत उन्होंने नारी के इस कुरूप पक्ष को ही विशेषतया उजागर किया है।

वहीं कवि मुक्तिबोध सभ्य समाज को "बीमार समाज" कहकर गर्भपात जैसे कुकृत्यो पर अत्यन्त संवेदनशील हो जाते हैं" वे नारी के शोषण को अत्यन्त मर्मस्पर्शी रूप मे चित्रित करते है |

२.३.४ किसान,मजदूर ब गरीबो के प्रति उदार दृष्टिकोण :

स्वातन्त्र्योत्तर कवियों ने समय और परिस्थिति के साथ समाज की और देखने का बीड़ा उठाया था | यही कारण था कि उनकी नजर हर तरफ रही औद्योगिक बस्ती या बडे-बडे उद्योगो में काम करने वाले अभावग्रस्त मजदूरों की विवशता की स्पष्ट झाँकी प्रस्तुत करती है कुछ उद्दोग ऐसे है जहाँ काम करने से मजदूरों की आयु तेजी से कम होती जाती है, फिर भी वे अपने-आपको मजबूरी वश उसमे झोंके रहते हैं।

"एक फटा कोट एक हिलती चौकी एक लालटेन दोनो,

बाप मिस्तरी,

और बीस बरस का नरेन

दोनो पहले से जानते है पेच की मरी हुई चूडियाँ,

नेहरू-युग के औजारो

को मुसद्दीलाल की सबसे बडी देन।"

कवि नागार्जुन अपनी बदली हुई मनोवृत्ति के कारण तिब्बत न जाकर भारत मे किसान-आन्दोलन के नेतृत्वकर्ता स्वामी सहजानन्द के सहयोगी हुए और उनके जेल जाने पर उन्होनें स्वय आन्दोलन का नेतृत्व किया, जिसके कारण उन्हे भी जेल-यात्रा करनी पडी इस श्रमशील जीवन काल में विविध कार्यो को करते हुए नागार्जुन दलित-पीडित जन की ओर सर्वाधिक आकर्षित हुए । उनके हाथों में मजबूती से लेखनी पकडाने वाला यह दुखी-पीडित जन ही है, जिनकी अन्तहीन पीडा उनकी लेखनी को विराम नहीं करने देतीं। वे पीडित-जनो के बीच में रहकर उनके हृदय की व्यथाओं मे समाविष्ट रहे। अपनी कविताओ में व्यक्त किये गये जीवन के कटु अनुभवों को उन्होंनें पग-पग पर भोगा है । साथ ही झुग्गी झोपडियों का पीड़ा दायी जीवन,सामाजिक विषमता,किसान के फटे हाल इन कवियों को राजनीतिक और समाज के ठेकेदार के विषय में लिखने को मजबूर कर देते है|

मुक्तिबोध का हिन्दुस्तान एक ऐसा दीन व्यक्ति का देश है जिसके शरीर के मॉस को शोषितों ने खा डाला है। वह सूखी हुई अस्थियो के सहारे हिलता हुआ चलता है। उसे तन ढँकने को वस्त्र प्राप्त नहीं होता है। रास्ते पर बिखरे हुए चावल के दानो को लपककर बीनता रहता है-

“सूखी हुई जांघों की लम्बी-लम्बी अस्थियाँ

हडिलाता हुआ चलता है

लेंगोटी धारी यह दुबला मेरा हिन्दुस्तान

रास्ते पर बिखरे हुए

चावल के दानों को बीनता डे लपककर।

मेरा सॉवला इकहरा हिन्दुस्तान।”

२.३.५ यथार्थ,पीड़ा,निराश और अवसाद वादी चित्रण :

स्वातन्त्र्योत्तर कवियों ने रहस्यात्मक दुनिया से नीचे उतर कर उन्होने यथार्थ जीवन का साक्षात्कार किया। फलत उनकी कविताएं मानवीय जीवन की संवेदनाओ से युग यथार्थ से जुडती गयी। इस काल खण्ड की कविताओं में तत्कालीन पराधीन भारत की चेतना कहीं बन्दी जीवन के कारण निराशा व अवसाद मे डूबी हुई दिखाई पडती है तो

कहीं क्रांति, राष्ट्रीयता की भावना व स्वतन्त्रता की चाह जन-जन की जागृत करती है। इस प्रकार की कविताएँ स्वातन्त्र्योत्तर काल के लगभग सभी कवियों ने लिखी है उन कवियों की कविताएँ मार्मिक हो उठी है जिन्होंने एसी परिस्थिति को भोगा है जैसे कवि अज्ञेय ने बन्दी जीवन के दौरान एक कविता लिखी जिसमे बन्दी की व्यथा, पीडा, उसकी राष्ट्रीयता व क्रान्ति की भावना का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत है और 'हिय हारिल" संग्रह के खण्ड की अधिकांश कविताएं विजय प्राप्ति की आशा से आलोकित, पराधीनता से शीघ्र मुक्ति के विश्वास से परिपूर्ण, हारिल की भाँति अपने स्वतन्त्रता के लक्ष्य को दृढता से पकड़े हुए हैं।। नयी शक्ति के साथ आगे बढने का उत्साह उनमे सर्वत्र दिखाई पड़ता है। अतः स्पष्ट है कि पराधीन भारत की जनचेतना की मुक्ति के लिए प्रयत्नशील कवि देश व जनता के प्रति रागात्मक सम्बन्ध रखता है।

"एकाक्षी,ठण्डे, चमकीले यम से

मत सिद्धान्त शिकंजे

काठ मानकर जकडे है

इंसान को ठप्पेदार ज्ञान के

फोके चूसे टुकडे फेक सामने।"

दो ही तो सच्चाइयाँ से है

एक ठोस, पार्थिव, शरीरी-मासल रूप की ,

एक द्रव, वायवी आत्मिक - वासना की धधक की

बाकी आगे मृषा की,आत्म-सम्मोहन की"

कवि मुक्तिबोध ने फैंटेसी की शैली मे अपनी बात कही हैं। इस सन्दर्भ मे उन्होने स्वयं कहा कि "बहुत बार यह दुनिया जैसी दिखलाई पडती है, वैसी नहीं होती। उसके दिखलाई पडने वाले रूप और असली रूप में स्तब्ध कर देने वाला अन्तर्विरोध होता है। तथ्य यथार्थ को छिपा लेते है।"आगे वे कहते है ऐसी स्थिति में फैंटेसी के जरिये ही उसका असली रूप को दिखलाया जा सकता है। उनकी फैंटेसी निरूद्देश्य नहीं है। वे कहते है- " फैटेसी के भीतर वह मर्म- जिसमें एक उद्देश्य है, एक पीड़ा है,और एक दिशा है-अनेक जीवनानुभवों से सारगर्भित, सवर्धित और पुष्ट होकर प्रकट होना चाहता है।" कहा जा सकता है कि उन्होने विषम सामाजिक परिस्थितियों से पीडित-व्यक्ति के कष्टो से जन-जन का गहराई से सर्वविदित कराने के लिए फैंटेसी जैसी आकर्षक शैली का सहारा लिया न कि तत्कालीन यथार्थ से पलायन के लिए।

२.३.६ मार्क्सवादी स्वरूप :

स्वातन्त्र्योत्तर कवि सामाजिक हितो के प्रति प्रतिबद्ध रहे है। उन्होंने उत्पीडित जनो की समस्याओ को दूर करने के लिए वर्ग-संघर्ष या क्रान्ति का भी सहारा लेना पडे तो लिया

है | क्योकि न्याय के लिए संघर्ष का मार्ग भी उचित है | मुक्तिबोध के अनुसार न्याय के लिए कुछ भी अनुचित नहीं है | पीडित जन के प्रति उनकी यह संवेदनशील दृष्टि ही उन्हे मार्क्सवादी विचारधारा की ओर ले गयी, जो ऐसे जनो की पक्षधर है । विज्ञान व प्रौद्योगिकी के बढते प्रभाव के कारण होने वाले व्यापक परिवर्तनो के देखते हुए मुक्तिबोध कभी मार्क्सवादी विचारधारा को सिद्धान्तवत् न अपना सके वल्कि उन्होने उसे अपने विवेक व तर्क के बल पर भली-भांति परख कर उसके जीवन्त-तत्वों को ही ग्रहण किया। दूसरे शब्दों मे कहे तो, उन्होंने विश्वदृष्टि के धरातल पर मार्क्सवाद को नया रूप दिया, जो पूजीवादी-यान्त्रिक सभ्यता से उत्पन्न परिवर्तनो को देखते हुए जरूरी था । कला को रहस्यात्मक-जगत् की वस्तु न मानने वाले मुक्तिबोध मार्क्सवादी साहित्यकारों के इस विचार से सहमत थे कि कला का अध्ययन व विश्लेषण विश्व-चेतस हुए बिना या बाह्य -जगत की विविधता को जाने बिना नहीं हो सकता । क्योंकि उनके अनुसार बाह्य -जगत का आशभ्यन्तरीकरण ही कविता या कला के रूप में अभिव्यक्ति पाता है। “दूसरे शब्दों मे कहे तो बाहय-जगत् में जो हम देखते सुनते है, जिन घटनाओं से प्रभावित या क्षुब्ध होते हैं, वही आन्तरिक अनुभव मे ढलकर संवेदनात्मक रूप मे कविता में उपस्थित होता है। अतः कहा जा सकता है कि कविता में समझने व उसका सही. "विश्लेषण करने मे बाहय जगत का ज्ञान सहायक बनता है।

२.३.७ गाँव की मिटटी के प्रति लगाव :

स्वातन्त्र्योत्तर कवि अपने गाँव और मिटटी से जुड़े रहे उनका ध्यान सर्वांगीण था लेकिन वे अपने गाँव का चित्रण करना नहीं भूले कवि गिरिजा कुमार माथुर की “मटियाली धरती” गॉव की धूसर,सॉवर मटियाली, काली, आसमान के घेरे मे धूप से बुझी हुई और जंगलो से मिली हुई धरती है। इस पर उपजे नीम, आम, वट, पीपल के वृक्षो पर निखरे-निखरे मौसम आते रहते है। कच्ची मिट्टी के गाँव के वक्ष पर धूप कीड़ा करती रहती है और फसलो में दूध बनकर उसी के रूप मे मिल जाती है। प्रत्येक अन्न के दानो मे चन्द्रमा अपना अमृत भर देता है ।इसी मटियाली धरती को नया बसंत रंगीन बनाता रहता है किन्तु आज किसान की मटियाली धरती की रेखा के ऊपर गोल रक्त पत्थर के टुकडे के समान सूरज ठिठक रहा है। वहाँ का वातावरण जमे हुए हिम की चट्टानो सा हो गया है और मृत सूरज अतल मे गिर रहा है। त्रिलोचन की कविताओं मे अवधांचल की मिट्टी की यादें अपनी समूची महक के साथ नवीन आशा बिखेरती हुई दिखलाई पड़ती है कवि त्रिलोचन सिर्फ ग्रामीण जन-जीवन के मस्ती भरे सौन्दर्य का ही बखान नहीं करते, वरन् वहाँ व्याप्त भुखमरी व पिछडेपन की यादे भी उनकी कवि-संवेदना को प्रभावित करती हैं और वे किसान को ध्यान में रख कह उठते है कि-

“उस जनपद का कवि हूँ जो भूखा-दूखा है,“

नंगा है, अनजान है. . ... -

-कब सूखा उसके जीवन का सोता,

इतिहास ही बता सकता है।“

इन अभावों व पिछड़ेपन ने कभी उन्हें अत्यन्त खीझ से भर यह कहने को मजबूर किया था | लेकिन बाद में उन्होनें स्वीकार किया कि उनके मन में पहले जो असन्तोष था अपने गाँव को लेकर, वह अब नहीं है शायद इसकी वजह यह है कि कर्म मे आस्था रखने वाले कवि को यह विश्वास है कि वह कभी न कभी अपने श्रम के बल से अपने गॉव को इस विकट-यथार्थ से उबार लेगा।

वही दूसरी ओर "मिट्टी की ईहा" की कविताओं में अज्ञेय की अनेक विचारधाराएँ परिलक्षित होती हैं | मिटटी के बीच उगने वाले बसन्त के अंकुर रूप शोषित के क्रान्ति-स्वर शोषको को दार्शनिक रूप में भौतिक जीवन की चकाचौध में सत्य का आभास कराते है -

"कितना तुच्छ है तुम्हारा अभिमान,

जो कि मिट्टी नहीं हो

जो कि मिट्टी को रौंदते हो

जो कि इच्छा को रौदते हो,

क्योंकि मिट्टी ही इच्छा है"

कवि सिर्फ ग्रामीण प्रकृति की सहजता में ही अपने को नहीं डुबाये रखता। गाँव मे रहने वालों की सहज जीवन-शैली, उनकी समस्यायें, उनके दुख-दर्द, रीति-रिवाज, विश्वास व परम्परायें भी कवि की संवेदनशील दृष्टि से परे नहीं है | "हमारा देश" कविता ग्रामीण - संस्कृति से उनके लगाव व शहरी सभ्यता पर तीक्ष्ण व्यंग्य करती है -

"इन्हीं तुण-फूस छप्पर से

ढंके दुलमुल गंवारू

झोपड़ो में ही हमारा देश बसता है।

है हर

इन्हीं के मर्म को अनजान

शहरो की ढ़की लोलुप

विषैली वासना का साँप डंसता है।"

२.३.८ प्रकृति वर्णन में सामाजिक रूप :

प्राकृतिक दृश्यों मे अपने को विलीन कर उसके एक-एक दृश्य को अपनी कविता में कवि साकार करते हैं। उनकी दृष्टि मे मिट्टी अपनी जगह पर निश्चल पड़ी आनन्दित है। अपने पत्तों मे लिपटा हुआ पौधा धूप और हवा का सेवन करता हुआ मगन है। जल बेरोक-टोक

बहता हुआ प्रसन्न है। कीट पक्षी और लताएँ सब आनन्दित हैं लेकिन कवि के आस-पास की दुनिया हजारो चाबुके लिए हुए दिन-रात पागलों के समान दौड़ती रहती है। इन्ही पागलो की दुनियों ने पहाड़ों के सौन्दर्य को नीलाम कर दिया है, फल-फूल से लदे जगलों को काट डाला है, नदियो किनारे बँधी नाव के भछेरें के छप्पर में, , रूजआसे घरों में आग लगा दी है जिसके कारण विभिन्न ऋतुओ मे होने वाले परिवर्तनो से कवि भलि-भाँति परिचित है। तभी तो वह प्रभावकारी व सहज भाषा के माध्यम से हर-ऋतु को सजीव कर देता है। गाँव से तादात्म्य बनाये रखने वाले कवि अज्ञेय की प्रकृति जन्य कविताएँ उन्हे लोक के अत्यन्त निकट ले आती है। “कतकी पूनो” (कार्तिक पूर्णिमा) की शीतल चाँदनी मे फलॉग भरती शकों की जोड़ी, फुहडार सा झर रहा कुहरा, अकासनीम, मालती व कास की आभा मन को सहज ही आकर्षित करती है। उस स्वच्छ चॉदनी मे ग्राम्य बाला के मन की हुलास, जो अपने प्रियतम की राह देख रही है, इस प्रकार प्रकट हो रही है जैसे चोरों की परछाई न चाहते हुए भी उभर जाती है|

"छिटक गयी है चॉदनी

मदमाती उन्मादिनी,

पकी ज्वार से निकल शशो की

जोडी गयी फलॉगती कुहरा झीना और महीन "

रघुवीर सहाय ने प्रभाती,बसन्त,पहला पानी आदि कविताओ मे प्रकृति के सहज एवं जीवन्त चित्रों को उकेरा है। वस्तुत कवि के लिए प्रकृति शरण स्थली न होकर सहभागी है जो आलम्बन और उद्दीपन से उपर उठकर मनुष्य और प्रकृति को बड़े ही कलात्मक ढंग से जोडती है। प्रकृति और जीवन का सश्लेष उनकी कविता पानी के सस्करण, धूप,आज फिर शुरू हुआ जीवन आदि कविताओ में बहुत ही सुन्दर ढंग से प्रस्तुत किया गया है।

झर-झर पडे अकास नीम

उजली लालिम मालती

गन्ध के डोरे डालती, मन मे दुबकी है हुलास ज्यों परछाईं

हो चोर की-, तेरी बाट अगोरते ये आँखे हुई चकोर की।"

शरणार्थियो के प्रति सम्वेदना :- अज्ञेय की “शरणार्थी” शीर्षक कविताएँ स्वतन्त्रता के कुछ समय बाद भारत-पाकिस्तान के बीच हुए युद्ध के दुष्ण शरणार्थी हुए व्यक्ति की दुर्दशा का अत्यन्त संवेदना पूर्ण व सजीवांकन करती है। युद्ध की विभीषिका से प्रभावित आम-आदमी शरणार्थी बन कर दर-दर की ठोकर खाने को मजबूर है। गाँव या शहर कहीं भी उनके रहने का ठिकाना नहीं है। त्राहि-त्राहि करते ये शरणार्थी कैसे अपने- आपको इन

खतरो से बचायें इसी चिन्ता मे बिना रूके अपरिचित पथों पर बढे जा रहे है। बूढ़े, बच्चे सभी इस गम्भीर त्रासदी के शिकार है। सिर झुकाये ,पीठ पर गट्ठर लादे, गोद में बच्ची लिए, अपनी मिट्टी से दूर होने की पीडा को समेटे इन शरणार्थियों की विवशता का कवि भी मूक साझीदार हैं |"

आधुनिक जीवन की मूल्यहीनता :- स्वातन्त्र्योत्तर कवियों द्वारा आधुनिक जीवन की मूल्यहीनता व सामाजिक अस्त व्यस्तता को शब्दों मे पिरोया गया है। कवि ने इतिहास के उन पृष्ठो को खोला है, जिन पर ताजमहल बनाने वाले के हाथ काट लिए जाने व गुरूदक्षिणा मे एकलव्य का अगूठा मांग लिए जाने की करूण कथा अंकित है। सामाजिक असमानता का मर्मान्न्तक दृश्य तत्कालीन समाज मे अपने को दोहरा रहा है। आज का द्रोण किसी एक शिष्य के अधिकार का हरण नहीं करता, वरन वह सम्पूर्ण समाज का भला नहीं चाहता। जो पददलित है, उनके लिए पहले तो वह कुएँ खुदवाता है ताकि अपनी छवि उनके बीच बना सके। फिर वही द्रोण चुपके से उनके कुऐ में भाग डाल देता है ताकि वह अपने विवेक से उचितानुचित का निर्णय न कर सके। अपने इस कार्य के द्वारा द्रोण पददलितो के विवेक को खरीद लेता है, फिर तो ये पददलित गुरू के इशारे पर अपने ही समान अन्य पददलितो की झोपड़ियो में आग लगाने मे सकोच नहीं करते। कवि सांकेतिक रूप से यह भी कहने का प्रयास किया है कि गरीब ही जब गरीब का दुश्मन बन जाये तो सामाजिक विषमताओ को कैसे दूर किया जा सकता है। इस सन्दर्भ में कुछ पंक्तियाँ इस प्रकार है-

"मगर मै जानता हूँ कि मेरे देश का समाजवाद,

मालगोदाम मे लटकी हुई,

उन बाल्टियो की तरह है,

जिस पर आग लिखा है और उसमे बालू और पानी भरा है।"

तत्कालीन परिवेश मे व्यक्ति के स्तर का निरन्तर गिरते जाना व मानवीय मूल्यों का दिखावटी रूप कवि रघुवीर सहाय की मूल-चिन्ता है। आज मनुष्य इस्तेमाल की वस्तु बनता जा रहा है। सर्वत्र बनावटी रागात्मकता दिखाई दे रही है, जिससे आत्मिक पतन होता जा रहा है। वे अपनी कविता के माध्यम से सच्चे रागात्मक सम्बन्धो की स्थापना करना चाहते है भले इसके केलिये संघर्ष को आधार बनाना पडे। इस सन्दर्भ वे कहते है कि' कवि का हर समय सार्थक अभिज्ञान यही है कि सघर्ष का आधार नए मानवीय रिश्ते की खोज होना चाहिए और यह खोज जारी न रहने पर वे परिणाम निकल सकते है जिनको आज हम देख रहे है- इतिहास व परम्परा की विकृति के द्वारा एक बनावटी इतिहास का निर्माण और आने वाली पीढी की प्रायोजित अशिक्षा।" सच्चे रागात्मक सम्बन्धी की खोज व स्थापना के लिए कवि का यह दायित्व है कि वह परम्परा से प्राप्त मानव-मूल्यो को संजोकर रखे ताकि नयी पीढी उससे कुछ ग्रहण कर सके।

२.३.९ कवि का स्थान :

स्वातन्त्र्योत्तर काल जाग्रति का काल था स्वतंत्रता के साथ नये विचार, नये आयाम समाज में रुज रहे थे | इस नये पन में कवि की परिभाषा भी बदल रही थी |अब कविता जनजागृति का और सामाजिक कार्य भी कर रही थी | कवि केदारनाथ अग्रवाल वैज्ञानिक, राजनीतिज्ञ, अर्थशास्त्री व समाजशास्त्री के समकक्ष ही कवि का स्थान निर्धारित करते हुए कहते है कि जिस तरह से ये विशेषज्ञ समाज में समस्याओं का समाधान अपने ढंग से अपने कार्यक्षेत्र मे रहकर ढूंढते है उसी तरह कवि भी। उनके अनुसार जो कवि ऐसा नहीं करते और आत्म चिन्तन में ही लीन रहते है, वह अपने को समाज से कटा हुआ व अजनबी महसूस करते हैं।" शब्दों के इन्द्रजाल के माध्यम से श्रम व भुलावे मे डुबाये रखने वाली कविता, अतीन्द्रिय लोक की सैर कराने वाली मौलिक कविता भले ही लगे, पर वह आत्मीय-प्रवंचना के अलावा और भी बहुत उद्देश्यों की पूर्ति कर सकती है |

कवि का कार्य सिर्फ कविता बुनते रहे यह नही है| इनका कविता बुनने का तरीका काफी अलग था "वह पहले किसी कविता के विषय को लेकर कई दिन औरो से बहस करता और खुद भी सोचता रहता। उस विषय पर जो भी सूझता, उसमे से जो लिखने योग्य होता उसे लिख लेता और फिर उसे तरतीब देकर कविता की रचना कर डालता था | कविता को जिन्दगी की जरूरतों के अनुरूप शब्दो में ढालना चाहते थे। जिस समय नये कवि कविता के स्वायत्त संसार की वकालत करते हुए कविता विधा की सलामती के लिए चिन्तित दिखाई पडते थे उस समय धूमिल का यह कहना था-

"कविता में जाने से पहले

मै आपसे ही पूछता हूँ

जब इससे न चोली बन सकती है न चोंगा,

तब आप कहो-

इस ससुरी कविता को

जंगल से जनता तक

ढोने से क्या होगा ?"

२.४ स्वातन्त्र्योत्तर कविता में शिल्प विधान

कविता के विषय में पहले से ही दुराहो पर विचार आकर टिक जाता है |कि कविता का भाव पक्ष महत्वपूर्ण है या कला पक्ष सभी विद्वानों ने इस सन्दर्भ में अपने अपने दृष्टिकोण प्रस्तुत किये है | कविता केवल कला नहीं है वरन् निर्जीव रूप मे एक ऐसा सजीव चित्र है जो मानव जीवन की सम्पूर्ण कथा कहता है लेकिन कविता को आकर्षित बनाने के लिए

उसके कला रूप को देखना अनिवार्य है | क्योंकि कला कुशलता के कारण ही कविता का अस्तित्व सदियों तक रहता है | स्वातन्त्रयोत्तर हिन्दी-कविता मे लोक-सवेदना के विविध आयामों की अभिव्यक्ति के लिए प्रयुक्त माध्यम - भाषा, रस,अलंकार, लोक-बोलियो मे प्रयुक्त विविध शब्द , लोक-जीवन से गृहीत उपमान, प्रतीक और बिम्ब |लोक-धुन लोक-प्रचलित कहावते व मुहावरे |आदि के द्वारा लेखनी को काव्य रूप प्रदान होता है |

२.४.१ भाषा :

स्वातन्त्रयोत्तर कवियों ने लोक-जीवन की भाषा के माध्यम से उनकी पीडा, उनके हास-परिहास, उल्लास-प्रेम आदि भावों को अत्यन्त प्रभावशाली ढंग से अभिव्यक्त किया | प्रत्येक भाषा के शब्दो की अपनी विशेषता है। प्रत्येक शब्द का अपना विशिष्ट अर्थ होता है, इसलिए कुशल कवि जिनकी स्थिति को उपस्थित करना चाहता है, उसके लिए यह आवश्यक है कि उसकी "बोलियो!" का वह अपनी कविता मे प्रयोग करे । इन सभी कवियो ने इसका सार्थक प्रयोग किया है |इन कवियों ने लोकभाषा के माध्यम से सामान्य जन जीवन की संवेदनाओ को अति कुशलता से अभिव्यक्त किया है कवि नागार्जुन की मातृभाषा मैथिली और पितृ-भाषा सस्कृत है । इसके अतिरिक्त पालि, अर्ध-मागधी, अपभ्रंश, सिन्धी, तिब्बती, मराठी, गुजराती, बंगाली, पजाबी, सिन्धी आदि भाषाओ के जानकार होने के कारण नागार्जुन सभी भाषाओ को पढने मे रूचि रखते है । इसलिए इनकी रचनाओ मे यत्र-तत्र सभी भाषाओ के शब्दो का सार्थक प्रयोग हुआ है कवि ने लोकभाषा के माध्यम से सामान्य जन जीवन की संवेदनाओ को अति कुशलता से अभिव्यक्त किया है |"यह उन्मत प्रदर्शन" शीर्षक कविता मे लोकभाषा के शब्द छौने"" का प्रयोग कर उन्होने दीनो के प्रति अपनी सवेदना और अन्याय के प्रति घृणा को अभिव्यक्त किया है। वस्तुत 'छौना" शूकर के बच्चे को कहा जाता है। लक्ष्णार्थ से सभी पशु के बच्चो को 'छौना" कहते है। धनपतियो पर कटाक्ष करते हुए वे कहते है कि "कुबेर के छौने" की शान-शौकत ने दीनो को जूठन चाटने के लिए बाध्य कर दिया है। त्रिलोचन की कविताएँ लोकभाषा के बीज से अंकुरित होकर पल्लवित एव पुष्पित हुई है । इनकी भाषा पहेली नहीं है वरन् सरल व सहज है ।त्रिलोचन मूलत अवध क्षेत्र के हैं। इसलिए इनकी कविताओ में अवधी भाषा का सुन्दर संयोजन है । कवि धूमिल ने जिस काव्य भाषा को अपनाया, वह समसामयिक परिस्थितियो से सीधे साक्षात्कार से उत्पन्न हुई थी । कवि धूमिल मूलतः किसान थे। अतः उनकी भाषा किसानी जीवन संस्कारों की ही उपज है। "इसी किसानी दृष्टि के द्वारा धूमिल ने हिन्दी कविता को एक जीवन्तता प्रदान की जो केवल शब्द से नहीं, बल्कि वाक्य-विन्यास और बात-चीत का लबो-लहजा भी, मुक्तिबोध शोषितों की आम बोलचाल की भाषा के द्वारा अपनी कविता को अत्यन्त प्रभावशाली रूप प्रदान करते है -

"में कनफटा हेठा हूँ।

शेव्रलेट डॉज के नीचे मै लेटा हूं।

तेलिया-लिबास मे पुरजे सुधारता हूँ।"

स्वातन्त्र्योत्तर सभी कवियों ने सहज भाषिक-संवेदना ने डर,अन्याय,अत्याचार, घृणा-द्वेष, हिंसा और शोषण के विरूद्ध आवाज उठाकर अपनी कविता को अकाल मृत्यु से बचा लिया है। इनकी कविताओं की मार्मिक पीड़ा पर-प्रत्यक्ष नहीं है वरन् स्वानुभूत प्रत्यक्ष का परिणाम है।

गेहूँ-भुखमरी, कागज-हरी क्रान्ति, कालाधन-इन्क्वायरी, घिनौने उकसाये दंगे, गला फाड लडती बोलियाँ, नकली एकता, अछूत-योजना, आबादी, शरारती-आत्म निर्णय, घेराव और दुश्मन की दलाली आदि विकृती को देखा ही नहीं वरन् उसको तपस्वी की भाँति सहा है। और इन इंद्रियों टकराहट से जन्मी हुई इनकी कविताओं की भाषा व संवेदना वायवीय जगत् की नहीं वरन् जमीन की व्यथाओं को बडे मर्मस्पर्शी रूप प्रस्तुत करती है। नागार्जुन, धूमिल, केदारनाथ अग्रवाल और त्रिलोचन ऐसे कवि है जिनकी भाषा सरल, सपाट और सहज है। इनमे भी नागार्जुन ने मैथिली भाषा के शब्दों और त्रिलोचन ने अवधी भाषा में आम आदमी की संवेदनाओ को सजीव रूप मे प्रस्तुत किया है।

२.४.२ बिम्ब :

स्वातन्त्र्योत्तर कवियों के काव्य में बिम्ब योजना बड़ी सफलता के साथ किया गया है| इससे पूर्व बिम्ब का इतना स्पष्ट रूप काव्य में नही उतरा था| स्वातन्त्र्योत्तर कवियों ने बिम्बो व उपमानो के माध्यम से कविता को संवेदनशीलता को अद्बितीय बना देते है। त्रिलोचन के बिम्ब विधान परम्परावादी होते हुए भी नवीन कल्पनाओ के रंगो से चित्रित होने के कारण अपना विशिष्ट महत्व रखते है “कबीर, सूर, तुलसी की परम्परा की याद दिलाने वाले उनके बिम्ब कथन के प्रवाह मे स्वयमेव निर्मित होते चलते है, आयासपूर्वक अलग से थोपे गये नहीं लगते है। कवि धूमिल जीवन के यथार्थ से जुडी संवेदनाओ को मूर्त रूप देने मे काव्य मे बिम्बो का सहजप्रयोग हुआ है। उन्होने बिम्बो की कारीगरी पर नहीं, उसकी प्रासंगिक अर्थवत्ता पर विशेष ध्यान दिया है। अतः उनके बिम्ब रचना प्रक्रिया के अंग के रूप मे दिखाई पडते हैं, न कि अलग से कलात्मकता उत्पन्न करने के लिए जोडे गये लगते है। काव्य-संवेदना से गहराई से जुडे हुए ये बिम्ब उनकी शब्द योजना के तहत स्वत स्पफूर्त हुए है। धूमिल के बिम्ब आम आदमी की रोजमर्रा की जिन्दगी से जुडे हुए हैं| एक उदाहरण देखिए -

"इक आदमी “रोटी बेलता है,

एक आदमी रोटी खाता है,

एक तीसरा आदमी भी है

जो न रोटी बेलता है, न खाता है

वह सिर्फ रोटी से खेलता है

मै पूछता हूं

यह तीसरा आदमी कौन है

मेरे देश की संसद मौन है।”

स्वातन्त्र्योत्तर कवियों की कविता में समय और परिस्थिति जन्य प्रयोग देखने को मिलते है जिनका सम्बन्ध तत्कालीन समय की पूंजीवादी क्रूरता, शोषित, दलित, गरीब, आम आदमी, औरते, किसान, मजदूर आदि सभी प्रसंगो में बिम्ब-विधान के विभिन्न रूप एकदम नवीन हैं- “बच्चा। गुमसुम है निढाल है। कह तो कुछ सकता नहीं»बुझी हुई आँखों से सिर्फ देखता है। बीमार है।”*“बीमार बच्चे का बिम्व उसकी असहायता रूग्णता और असमर्थता की स्थिति को द्योतित करता है। माथुर जी द्वारा “मै वक्त के हूँ सामने” संग्रह की एक कविता में इन्होंने चाँदनी के बिम्ब द्वारा शासन-व्यवस्था की चोरबाजारी की मर्मभेदनी व्यजना की है और गाँव के बूढ़े किसान के मुख से कहलवाया है-

“गॉव पर अब भी अंधेरा पाख है

साठ बरसो मे न बदली चांदनी।”-

इसी प्रकार इनके शब्द-बिम्ब_ स्पर्श-बिम्ब,_ रूप-बिम्ब: रसबिम्ब, > गन्ध” आदि बिम्बों ने लोक जीवन की अन्तहीन पीडा को स्वातन्त्र्योत्तर कवियों ने अभिव्यंजित किया है।

बत्ती और शिखा”“” शीर्षक कविता में कवि ने अपनी लोक-सवेदना को प्रतीकों

के माध्यम से अभिव्यंजित किया है।बत्ती श्रमजीवियों की प्राणोत्सर्ग की भावना को व्यक्त

करती है और शिखा पूजीपतियों के वैभव की प्रतीक है।

२.४.३ प्रतीक :

कविता के प्रतीक अनेक प्रकार के उन अर्थों को अभिव्यक्ति देते हैं जिसकी सीमा कालातीत होती है। कुछ कवि ऐसे भी हैं जो प्रतीक और उपमानो के प्रयोग से अपनी कविता को मुक्त रखने का प्रयास करते हैं किन्तु अधिकांश कवि इन्हीं के माध्यम से अपनी कविताओं को और धारदार बनाने का सफल प्रयास करते हैं। माथुर जी ने इनके प्रयोगो में सचमुच नवीनता ला दी है। कवि अज्ञेय बत्ती और शिखा शीर्षक कविता में कवि ने अपनी लोक-सवेदना को प्रतीकों के माध्यम से अभिव्यंजित किया है। बत्ती श्रमजीवियों की प्राणोत्सर्ग की भावना को व्यक्त करती है और शिखा पूजीपतियों के वैभव की प्रतीक है। कवि गिरिजा कुमार माथुरजी ने अपने कथ्य को पाठक के अन्तस्तल तक पहुँचाने के लिए कई प्रकार के- आग, बीज, रोशनी,चाँदनी, शिव-धनुष आदि-प्रतीकों का प्रयोग कर जीवन के सत्यात्मक तथ्यों को व्यंजित किया है|

२.४.४ उपमान :

स्वातन्त्र्योत्तर कवि अपने विचारों से भी स्वतंत्र थे उन्होंने प्राचीनता को ज्यों का त्यों स्वीकारा नही है और उसकी अवहेलना भी नहीं की |कवि अज्ञेय प्राचीन उपमान, को निरर्थक तो नहीं मानते, किन्तु उससे बचे रहना भी उचित नहीं समझते। उन्होंने इस सन्दर्भ में “कलगी बाजरे की” शीर्षक कविता में स्पष्ट किया कि अगर मैं प्राचीन उपमानों का सहारा नहीं लेता तो इसका “मतलब यह है कि ये उपमान अपनी वास्तविक चमक

खो चुके हैं, ठीक उसी त्तरह से, जिस तरह बर्तन अधिक घिसने से अपनी वास्तविक चमक या आभा खो देता है। अतः कविता को और अधिक प्रभावी बनाने के लिए नये उपमानादि का चुनाव कत्तई अनुचित नहीं है | कवि ने “सागर की लहर” उपमान के माध्यम से शोषको को भयाक्रान्त ही नहीं किया है वरन शोषितो को सफल क्रान्ति करने की प्रेरणा प्रदान की है।

२.४.५ मुहावरे व लोकोक्ति का प्रयोग :

मुहावरे किसी बोली या भाषा में प्रयुक्त होने वाला वह कुतुहलपूर्ण वाक्य खण्ड है जो अपनी उपस्थिति से समस्त वाक्य को सतेज, रोचक और चुस्त बना देता है। संसार के मनुष्य ने अपने लोक-व्यवहार में जिन-जिन वस्तुओं व विचारों को बडे कौतहूल से देखा और समझा है | मुक्तिबोध ने अपनी कविताओ मे मुहावरों और लोकोक्तियो का जीवन की सॉस के समान स्वाभाविक प्रयोग किया है ।जैसे- सिट्ट्टी गुम हो जाना,आँख मूंदकर चलना, जिसका खाओ उसका गाओ आदि

रघुबीर सहाय ने "जैसा किया वैसा भरा” के रूप में प्रयुक्त कर खुशीराम जैसे गरीब व्यक्ति पर किये जाने वाले अत्याचार को बताते हुए शोषण-वादी शासन पर व्यंग्य किया है। इन्होने “अपनी-अपनी ढपली अपना-अपना राग” कहावत को “बेसुरे लोग”“के रूप मे ढाल कर सम्प्रदायवाद ,जो उनकी दृष्टि में भारत की एकता का विध्वसंक तत्व है. पर साघातिक प्रहार किया है|इन सभी कवियो ने लोकजीवन मे व्याप्त शब्दो, मुहावरों, कहावतो, लोकोक्तियों का आश्रय लिया है। कवि का कथ्य भले ही आम जीवन की व्यथा कथा कहता हो, पर “माध्यम की जटिलता” आम पाठक को आकर्षित करने में उसे सक्षम बनाती है। इस बात को ध्यान में रखते हुए इन कवियो ने माध्यम की सरलता का विशेष ख्याल रखा है। मैथिल, अवधी बुन्देलखण्डी व ठेठ ग्रामीण शब्दों की छटा बिखेरती व मुहावरों, कहावतो से सुसज्जित नागार्जुन, त्रिलोचन, केदार व धूमिल की कवितायें आम पाठक को आकर्षित करने मे पूर्णतया सक्षम है।

२.४.६ सारांश :

स्वातन्त्र्योत्तर कवियों की कविताओ मे व्याप्त लोक सर्वांगीण दृष्टि से विविध रूपो की खोज की गयी है। जीवन की मूल-भूत आवश्यकताओ को न जुटा पाने वाले शोषित, पीडित, दलित जन की संवेदना कवि की संवेदना बनकर उनकी कविताओं में समाहित है। कहीं ये कवि शोषक-पूँजीवादी राजनीतिक सत्ता का विरोध कर शोषित जन के प्रति अपनी संवेदना व्यक्त करते है, तो कही इन शोषित-पीडित जनो को जातिवाद, साम्प्रदायिकता, अंधविश्वास धर्मगत रूढियो मे आकण्ठ डूबा देखकर उन पर आक्रोश व्यक्त करते है व इन्हे इससे मुक्ति के उपाय सुझाते हुए सघर्ष-शक्ति प्रदान करते है। आम-जन के जीवन का वह सुखद-पक्ष भी कवि की लेखनी से कविताओ का सृजन कराता है, जिसमे ये जन संस्कारगत रीति-रिवाजे,परम्पराओ,विश्वासो व प्रकृति के सुरम्य वातावरण में गॉव की मिट्टी की सोधी खुशबू मे डूबे हुए जीवन का आनन्द लेते दिखाई पडते है।

२.५ दीर्घोत्तरी प्रश्न

१. स्वातन्त्र्योत्तर कवियों का काव्य सम्वेदनात्मक था | समझाइए !

२. स्वातन्त्र्योत्तर कविता समाज सुधार की भावना से ओत-प्रोत थी वर्णन कीजिए |

३. स्वातन्त्र्योत्तर कविता के भाव पक्ष और कला पक्ष को समझाइए |

२.६ लघुत्तरीय प्रश्न

१. स्वातन्त्र्योत्तर कविता का प्रारम्भ किस काव्य संग्रह से माना जाता है ?

उत्तर - तारसप्तक

२. स्वातन्त्र्योत्तर काल के किन्ही दो कवियों के नाम लिखिए ?

उत्तर - अज्ञेय ,मुक्तिबोध

३. स्वातन्त्र्योत्तर काल में किस व्यवस्था का विरोध एक जुट हो सभी कवियों के काव्य में दिखाई दिया ?

उत्तर - पूंजीवादी व्यवस्था

४. स्वातन्त्र्योत्तर काल के कवियों ने नारी के कौनसे रूप को अधिक माना ?

उत्तर - त्यागशील

२.७ सन्दर्भ ग्रन्थ सूचि

१. कविता के नए प्रतिमान -डॉ.नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

२. धूमिल और उनका काव्य - ब्रह्म देव मिश्र, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

३. नागार्जुन अन्तरंग और सृजन - सं. मुरली मनोहर प्रसाद सिंह, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

४. समकालीन लेखन और आधुनिक सम्वेदना -कल्पना वर्मा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

५. https://archive.org/stream/in.ernet.dli.2015.480791/2015.480791.Swatantryottar-Hindi_djvu.txt

❖❖❖❖

३

काव्य सौरभ कविता संग्रह

यात्री (सच्चिदानन्द हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय'
उनको प्रणाम (नागार्जुन)
नया कवि (गिरिजा प्रसाद माथुर)

इकाई की रूपरेखा :-

३.० इकाई का उद्देश्य

३ .१ प्रस्तावना

३.२ यात्री (सच्चिदानन्द हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय)'

 ३.२.१ 'अज्ञेय' कवि परिचय

 ३.२.२ यात्री कविता का भावार्थ

 ३ .२.३ यात्री कविता संदर्भ सहित स्पष्टीकरण

३.३ उनको प्रणाम (नागार्जुन)

 ३.३.१ नागार्जुन कवि परिचय

 ३.३.२ उनको प्रणाम कविता का भावार्थ

 ३.३.३ उनको प्रणाम कविता संदर्भ सहित स्पष्टीकरण

३.४ नया कवि (गिरिजा प्रसाद माथुर)

 ३.४.१ गिरिजा प्रसाद माथुर जीवन परिचय

 ३.४.२ नया कवि कविता का भावार्थ

 ३.४.३ नया कवि कविता संदर्भ सहित स्पष्टीकरण

३.५ बोध प्रश्न

३.६ वस्तुनिष्ठ / लघुत्तरीय प्रश्न

३.० इकाई का उद्देश्य

इस इकाई में काव्य सौरभ (कविता संग्रह) की तीन कविता का अध्ययन किया जायगा पहली कविता - यात्री सच्चिदानन्द हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' ,दूसरी कविता - उनको प्रणाम (नागार्जुन),तीसरी कविता - नया कवि (गिरिजा प्रसाद माथुर)

- यात्री ,उनको प्रणाम और नया कवि कविता का भावार्थ समझ सकेंगे |
- उक्त तीनो कविता से चुने हुए अंश की व्याख्या कर सकेंगे |
- वस्तुनिष्ठ और बोध प्रश्नों के उत्तर लिख सकेंगे |

३.१ प्रस्तावना

काव्य सौरभ (कविता संग्रह) स्वातन्त्र्योत्तर कवियों की कविता का संग्रह है | इस संग्रह में कवियों के विचारों और भावनाओं से प्रेरित कविताओ को स्थान दिया गया है |जो सामाजिक मुद्दों और पाठक के मन पर सीधा प्रभाव डालती है | अज्ञेय, नागार्जुन और गिरिजा प्रसाद माथुर हिंदी साहित्य के अग्रणी कवि है उनकी कविता का अध्ययन विस्तृत रूप से करना विद्यार्थियों के लिए अनिवार्य है |

३.२ यात्री (सच्चिदानन्द हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय'

३.२.१ सच्चिदानंद हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय' - कवि परिचय :

अज्ञेय जी का जन्म 07 मार्च 1911 को देवरिया जिले के कसया गाँव में हुआ | शिक्षा - दीक्षा मद्रास और लाहौर में हुई बी एस. सी पास करने के बाद एम. ए. अंग्रेजी से करते समय क्रान्तिकारी आन्दोलन में कूद पढ़ते हैं | इसी कारण कई साल जेल में बिताने पड़े |

अज्ञेय प्रयोगवाद एवं नई कविता को साहित्य जगत में प्रतिष्ठित करने वाले कवि, हैं | अज्ञेय बहुमुखी साहित्यकार के रूप में पहचाने जाते है | अज्ञेय ने साहित्य की हर विधाओं जैसे - कहानी, कविता, उपन्यास, यात्रा - वृत्तान्त, निबंध, नाटक, साहित्यिक डायरी, आलोचना आदि हर क्षेत्रों में अपना महत्वपूर्ण योगदान है | उनकी रचनाओं पर फ्रायड की विचारधारा का प्रभाव देखा जाता है | सन 1964 में 'आँगन के पार द्वार के लिए उन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया जाता है | 'कितनी नावों में कितनी बार' नामक काव्य संग्रह के लिए सन 1978 में उन्हें भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार सें सम्मानित किया गया | 04 अप्रैल 1978 को उनका निधन हो गया |

कहानी - संग्रह - विपथगा, उपन्यास - शेखर : एक जीवनी, नदी के द्वीप परंपरा, शरणार्थी, जयदोल | अपने - अपने अजनबी'

यात्रा वृतांत - अरे यायावर रहेगा याद, एक बूंद सहसा उछली |

निबंध संग्रह : सबरंग, त्रिशंकु, आत्मनेपद, आलवाल | सस्मरण - स्मृति लेखा |

३.२.२ कविता का भावार्थ

अज्ञेय जी यात्री कविता के माध्यम से हमें एक आत्मसजग यात्रा पर जाने की सलाह देता है | कवि हमें पारंपरिक प्रचलित विधियों से पूजा करने से रोकता है | यही नहीं वह सभी धर्मों के लोगों को भी उनके धार्मिक स्थलों पर भी जाने से मना करता है | कवि के अनुसार सभी धर्म, तीर्थ, देवता हमारे अन्दर ही व्याप्त है, कुछ भी बाहर नहीं है | सभी कुछ हमारे श्रद्धा - भाव से ही अर्थ प्राप्त करता है |

आगे कवि बोधिसत्व का मत प्रकट करते हुए कहता है कि अपने जीवन यात्रा को ही तीर्थ यात्रा मान लो | जीवन पथ पर निरन्तर आगे बढते चलो और जीवन के अनुभवों से ज्ञान प्राप्त करते चलो | जीवन की इस यात्रा में अपने आप को बाहर से अन्दर के ज्ञान की ओर चलते रहो | और कवि फिर बोधि के स्वर को धीमा करते हुए कहते हैं कि मन्दिर या तीर्थ का अस्तित्व मनुष्य की भावना से बना हुआ हैं | यदि मंदिर का अस्तित्व है, तो वह मनुष्य की ही गति से हैं | मनुष्य के कारण ही मूर्ति अर्थ प्राप्त करती है | अर्थात मंदिर या तीर्थ का महत्त्व मनुष्य की चहल - पहल पर ही आधारित है |

कवि कहता है कि इस जीवन के हर पग - पग पर तीर्थ है, मंदिर है | इस जीवन में जितनी हम परिक्रमा करेंगे, जितने फेरे लेगे अर्थात जीवन में जितना कुछ अनुभव से हमें मिलेगा और हर स्थान से कुछ मिलेगा | जीवन का हर क्षेत्र मन्दिर जैसा ही लगेगा | ऐसी स्थिति में हम वास्तव में जितना भीतर से रिक्त अपने को करते जाते हैं उतना ही अधिक पाने के अधिकारी होते जाते है | कवि इस कविता के माध्यम से कर्म क्षेत्र में आगे - बढ़ते रहने से ही हमें जीवन की सच्ची अनुभूति मिलती है | सबकुछ हमारे शरीर के अन्दर ही है | हमें कहीं बाहर जाने की जरुरत नहीं है |

३.२.३ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण

पग - पग पर तीर्थ हैं,

मन्दिर भी हैं;

तू जितनी करे परिकम्पा, जितने लोग फेरे

मन्दिर से, तीर्थ से, यात्रा से

हर पग से, हर साँस से

कुछ मिलेगा, अवश्य मिलेगा,

पर उतना ही जितने का तू है अपने भीतर से दानी !"

संदर्भ : प्रस्तुत पंक्तीयाँ हमारे पाठ्य - पुस्तक 'काव्य - सौरभ' के 'यात्रा' नामक कविता से ली गई है, इसके कवि अज्ञेय जी है |

प्रसंग : प्रस्तुत पंक्तियों के माध्यम से कवि अज्ञेय जी यह बताने की कोशिश करते हैं कि मनुष्य को तीर्थ या मंदिर के लिए कहीं बाहर जाने की आवश्यकता नहीं है | सबकुछ मनुष्य के अन्दर ही है , सिर्फ उसे अपने कर्म के क्षेत्र में आगे बढ़ते रहना चाहिये |

व्याख्या : प्रस्तुत पंक्तियों के माध्यम में कवि यह बताना चाहता है कि हमें बाहरी दिखावे में न आकर मन्दिर, मस्जिद, चर्च नहीं जाना चाहिए | कवि लम्बी - लम्बी तीर्थ यात्रा पर भी जाने से रोकता है | कवि के अनुसार हमें अपने जीवन में कर्म को महत्त्व देना चाहिए | हमारे मन में दया, प्रेम, करुणा, दान का भाव होना चाहिए | हम अपने जीवन यात्रा को ही एक तीर्थ यात्रा मानकर चलें तो हमें हर कदम पर तीर्थ नजर आयेंगे | पग - पग पर अनेक मन्दिर दिखेंगे | इस जीवन यात्रा में हम जितना संघर्ष, परिश्रम करेंगे | हमें हर क्षण कुछ न कुछ अवश्य सीखनें को मिलेगा यदि हम जीवन में बहुत कुछ पाना चाहते है तो हमें भीतर से भी उतना रिक्त होना होगा | तभी जाकर हमें जीवन के हर क्षेत्र में मन्दिर या तीर्थ जाने जितना पुण्य मिलता रहेगा |

विशेष :

(१) भाषा सरल - सहज - सारगर्भित है |

(२) कविता में जीवन मूल्यों को महत्त्व दिया गया है |

(३) कविता में बाहरी आडंबर से बचने की बात की गई है |

३.३ उनको प्रणाम (नागार्जुन)

३.३.१ नागार्जुन - कवि परिचय:

जनकवि नागार्जुन का जन्म सन 1911 में बिहार के दरभंगा जिले के तरौनी गाँव में एक साधारण कृषक परिवार में हुआ | इनका वास्तविक नाम वैद्यनाथ मिश्रा था | परन्तु बौध्द धर्म से प्रभावित होकर इन्होंने अपने नाम के आगे नागार्जुन रख लिया | लोग सम्मान से 'बाबा' कहकर सम्बोधित करते थे | इनकी आरंभिक शिक्षा स्थानीय पाठशाला में हुई और उच्च शिक्षा काशी और कलकत्ता में पुरी होती हैं | उन्होंने हिन्दी के अलावा मैथिली, गुजराती और संस्कृत में भी अनेक रचनाएँ की है | कविता के साथ - साथ नागार्जुन साहित्य की अन्य विधाओं जैसे उपन्यास, आलोचना, बालसाहित्य, कहानी आदि हर क्षेत्रों में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है |

हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में अपनी विशिष्ट प्रगतिशील चेतना के कारण नागार्जुन को जन-जन का कवि भी कहा जाता है | सन 1961 में 'पत्रहीन नग्न गाछ' रचना के लिए इन्हें मैथिली भाषा के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त हुआ | इन्हें 1988 में मैथिलीशरण गुप्त सम्मान और भारत - भारतीय पुरस्कार से सम्मानित किया जाता है | सन 1998 में इनका निधन हो गया |

इनके प्रमुख काव्य संग्रह हैं - 'युग धारा', 'सतरंगे पंखोवाली; 'प्यासी पथराई आँखे', 'खून और शोले', 'प्रेत का बयान', 'तालाब की गछलियाँ', 'तुमने कहा था' आदि हैं | प्रमुख

उपन्यासों में 'रतिनाथ की चाची', 'बलचनमा', 'नई पौध', बाबा बहेसरनाथ 'वरुण के बहे' , 'इमरतिया', जमनिया के बाबा आदि हैं कुछ प्रमुख बालसाहित्य भी इन्होंने लिखा था जैसे - 'सयानी कोयल', 'तीन अहवी', 'प्रेमचन्द' 'अयोध्या का राजा', धीर विक्रम आदि |

३.३.२ कविता का भावार्थ :

प्रस्तुत कविता के माध्यम से कवि नागार्जुन ने उन तमाम असफल व्यक्तियों को प्रणाम करता है जो लगातार परिश्रम करके भी अपने लक्ष्य तक नहीं पहुँच पाये | संसार में हमेशा सफल व्यक्तियों का महिमा मंडन किया जाता है, लेकिन जनकवि नागार्जुन उन असफल व्यक्तियों महत्व दिया है जो किसी कारण वंश जीवन में सफल होने से चूक जाते हैं | कवि ऐसे लोगों का उदाहरण देता है जिनके मंत्र से फूँके हुए तीर गलत निशानों पर लगने के कारण युद्ध समाप्ती से पहले ही उनके बाण खत्म हो गये | कवि ऐसे लोगों को प्रणाम करता है जो परिश्रम और लगन के साथ हमेशा डटें रहे भले ही कुछ परीस्थितियों के कारणवश सफल न हो सकें | कुछ ऐसे साहसी, पराक्रमी, लगनशील व्यक्ति भी हुए जिन्होंने छोटी सी नाव लेकर विशाल, समुद्र को पार करने की चेष्टा करते हुए सफल भले नहीं हुए | कवि उनकी हिम्मत की प्रशंसा करते हुए उनको भी प्रणाम प्रस्तुत करता है | कुछ लोग सीमित साधनों से ही उच्च शिखर पर चढ़ने चले गए या बर्फ में मर-गल गए या बिना पुरा चढ़े असफल होकर वापस आ गए | कवि उनके द्वारा किए गये साहसिक कार्य को प्रणाम करता है | साथ ही कवि ऐसे लोग को भी प्रणाम करता है जिन्होंने एकाकी और अकिंचन होकर पुरी पृथ्वी की परिक्रमा पर निकले, लेकिन राह में पंगु हो गए |

कवि उन्हें भी प्रणाम करता है जिन्होंने देश की स्वतंत्रता पूर्ण करने से पहले ही उन्हे फाँसी दे दी गयी | जिनके बलिदानों को दुनिया भूल गयी है | जिनकी साधना उग्र थी, लेकिन जिनका असमय देहान्त हो जाता है | जीवन के शीर्ष पर पहुँचने से पहले ही उनका अन्त हो जाता है | जो दृढ़ इच्छा शक्ति, अदम्य साहस, त्याग के मूर्ति के, मगर असमय अंत ने उन्हें सफल नहीं होने दिया | कवि उन्हें भी प्रणाम करता है, कवि उन्हें भी याद करता है जिन्होंने काम तो बहुत किया लेकिन प्रचार - प्रसार से दूर रहें |

इस कविता के माध्यम से कवि उन साधारण जन को महत्व देता है, जिन्होंने बिना किसी बड़ी सफलता के बहुत साधारण जीवन जीते रहते है | इस तरह के लोगों ने सीमित साधनों के बल पर गहन प्रयास करते रहें, लोगों का यह मानना था की वे बहुत बड़ी - बड़ी सफलता हूँ जीवन में प्राप्त करेंगे | लेकिन विपरीत परिस्थितियॉ में कुछ करने से पहले ही चले गए | ऐसे लोगों के इरादे, साहस लोगों के लिए प्रेरणा बनती थी, मगर कुछ विवशताओं और प्रतिकुल परिस्थितियों ने उनके महान इरादों का अन्त कर दिया | कवि नागार्जुन ऐसे सभी लोगों को प्रणाम प्रस्तुत करते हुए उनके कार्यों को याद रखने की बात करते है |

३.३.३ संदर्भासहित स्पष्टीकरण:

जिनकी सेवाएँ अतुलनीय -------- उनको प्रणाम !

संदर्भ : प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारे पाठ्य पुस्तक 'काव्य-सौरभ के 'उनको प्रणाम' नामक कविता से ली गई है | इसके रचनाकार नागार्जुन जी हैं |

प्रसंग : इस कविता के माध्यम से कवि नागार्जुन उन सभी लोगों को याद रखने की बात करते हैं जिन्होंने अपने पक्के इरादे और साहस के बल पर अपने कर्मक्षेत्र में आगे बढ़े, मगर किसी कारणवश सफल न हो सकें |

व्याख्या : प्रस्तुत कविता में कवि नागार्जुन ने यह बताने की कोशिश की है कि आज हम उन्हीं को याद करते हैं जो अपने जीवन में सफल रहें | असफल व्यक्ति\ को कोई याद नहीं रखता | हम उनके दृढ़इच्छा शक्ति, अदम्म साहस, त्याग और बलिदान को भूल जाते हैं | माना कि प्रतिकूल परिस्थितियों के कारण सफल न हो सकें | इसका मतलब यह नहीं कि हम उनकी अतुलनीय सेवा ओं को भूल जाएँ, जिसका उन्होने कभी प्रचार - प्रसार नहीं किया | उन्होंने अपने द्वारा किये गए कार्यो का कभी महिमा मंडन किया | कुछ विपरीत परिस्थितियों ने उन्हें सफल नहीं होने दिया | उनके मनोरथ चूर-चूर होते गए | कवि ऐसे लोगों को प्रणाम करता है |

विशेष :

(१) भाषा सहज और सरल है |

(२) कवि असफल व्यक्तियों द्वारा किये गए प्रयासों को महत्त्व देता है |

(३) संस्कृत शब्दों का भी प्रयोग हुआ है |

३.४ नया कवि- गिरिजाकुमार माथुर

३.४.१ गिरिजाकुमार माथुर - कवि परिचय:

गिरिजाकुमार माथुर का जन्म २२ अगस्त 1919 को गुण जिला, मध्य प्रदेश में हुआ था | प्रारंभिक शिक्षा घर पर ही पूरी होती है | उनके पिता देवी चरण माथुर स्कूल अध्यापक थे | उन्होंने ही गिरिजाकुमार को अंग्रेजी, इतिहास, भूगोल और संगीत की शिक्षा घर पर ही दी थी | 1936 में स्थानीय कॉलेज से इंटरमीडिएट करके ग्वालियर से स्नातक पुरा करते हैं | 1941 में लखनऊ विश्वविद्यालय से एम. ए. और वकालत की परीक्षा पास की | इसके बाद काफी समय तक आकाशवाणी में काम करते हैं | इनकी कविता में रंग, रूप, रस, भाव, विषय तथा शिल्प के नए - नए प्रयोग देखने को मिलता है, 1941 में प्रकाशित निरालाजी ने स्वयं लिखा था |

सन 1943 में अज्ञेय जी द्वारा संपादित एवं प्रकाशित 'तारसप्रक' के सात कवियों में से एक थे | गिरिजाकुमार ने कविता के साथ - साथ साहित्य की अन्य विधाओं जैसे

एकांकी, नाटक, आलोचना, गीति-काव्य तथा शास्त्रीय विषयों आदि हर क्षेत्रो में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है | उनका लिखा हुआ समूह गान 'हम होंगे कामयाब' काफी लोकप्रिय हुआ | सन 1991 में कविता संग्रह मैं व्यक्त के हूँ सामने' के लिए हिंदी साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया जाता है तो 1993 में के. के. बिरला फाउंडेशन द्वारा दिया जानेवाला प्रतिष्ठित व्यास सम्मान प्रदान किया गया | उन्हें शलाका सम्मान से भी सम्मानित किया जा चुका हैं | सन 1994 में इनका निधन हो गया |

इनके प्रमुख काव्य संग्रह है : मंजीर नाश और निर्माण, धूप के धान, शिलापंख चमकीले, जो बंध नहीं सका, साक्षी रहे वर्तमान, भीतरी नदी की यात्रा, मैं वक्त के हूँ सामने आदि | इसके अलावा इन्होंने कहानी, नाटक तथा अलोचनाएँ भी लिखी है |

३.४.२ कविता का भावार्थ :

प्रस्तुत कविता के माध्यम में कवि गिरिजाकुमार माथुर ने एक कवि को किस प्रकार नए जोश, उत्साह के सत्य के प्रतिबद्ध रहना चाहिए; साथ ही कवि पुरानी रुढ़िया, दोहरे मानदंडोंवाली अनुभूतियों को चुनौती देता है | कवि का मानना है कि मानसिक उलझनों, संकीर्ण बोध तथा किंकर्तव्यविमूढ़ विवेक एक के कारण जो बूढ़ी हो चुकी परम्पराओं के कारण उत्पन्न हुई है | ऐसी स्थिती में कवि उन लोगों को एक नया रस्ता दिखाने की बात करता है | कवि अपने आपको अग्निध्वज की तरह मानता है, कि वह समाज में फैले अंधकार को समाप्त करने का साहस रखता है,

कवि अपने समय की तरफ इशारा करते हुए वह कहता है कि अब के समय में समझौता जीवन की अनिवार्यता बन गया है | लेकिन कवि इस समझौते को अस्वीकार करते हुए, न झुकने की कसम खाता है | कवि उस समय साहित्यिक संगठनों में चलनेवाली बहसों के पुरानेपन, व्यक्ति तथा समूह के सैध्दान्तिक विवादों पर चलनेवाली रंजिशों, आत्मविज्ञापन तथा मार्ग के बीच चलनेवाली चालकियॉ से कवि भी प्रताढ़ित है | कवि इन सब को खोखला कहता है और वह अपने ढंग से नये प्रश्नों का उत्तर नये ढंग से देना चाहता है | वह लोक से सबसे अलग होकर चलना चाहता है | उसका सबसे अलग चलना लोगों को अपराध लगता है, जिसके कारण उसे परेशान किया जाता है ,

आधुनिक साहित्यिक तथा सामाजिक परिदृश्य में व्याप्त सुविधापरस्ती, चालाक लोग, अपनी समझदारी से सत्य की सच्चाई को छिपाते है और प्रश्नों के उत्तर से भाग जाते हैं | हर कोई सच्चाई में जिस मूल्यों और नैतिकाओं की बात की जाती है, वे सब सोची - समझीचालाकी होते है, झूठ हैं आडम्बरों के माध्यम से हर सम्मान, पुरस्कार प्राप्त किया जा सकता है | मगर सच उजागर करने की हिम्मत किसी की नहीं है | कवि ऐसे लोगों को निशाना बनाते हुए वह कहता है कि मेरे भीतर को उपलब्धि सत्य और सहज की है, अंतः वह न चाहते हुए भी इस तरह के वातावरण को तोड़ने को विवश है | वह अपने बड़े लोगों द्वारा बनाये गए, इस धनुष को तोड़ना मजबूरी है | कवि नए विचारों के साथ अति संवेदनशील भी है, अंतः वह अंग्रेजो क्षमायाचना करते हुए यह कहता कि उनका धनुष तोड़ना मेरा उद्देश्य नहीं है | यह कार्य मुझे विविशता में करना पड़ रहा हैं क्योंकि यही युग धर्म है |

३.४ .३ संदर्भासहित स्पष्टीकरण:

सब छिपाते सच्चाई ----------- तोड़ने को मैं विवश हूँ|

संदर्भ : प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारे पाठ्य पुस्तक काव्य -सौरभ के 'नया कवि' नामक कविता से ली गई है | इसके रचनाकार गिरिजाकुमार माथुर है |

प्रसंग : इस कविता के माध्यम से कवि गिरिजाकुमार माथुर जी उन सभी को आड़े हाथों लिया है जो आज के समय में सुविधापरस्त लोग, चालाक लोग अपने झूठ तथा आडम्बरों का सहारा लेकर सत्य को छिपाने का हर संभव प्रयास करते हैं |

व्याख्या : प्रस्तुत कविता में कवि माथुर जी यह बताने की कोशिश करते है कि कैसे लोग अपने झूठ तथा आडम्बरों का सहारा लेकर सच्चाई से मुख मोड़ लेते हैं | उन्हें सुविधापरस्ती का आदत सी हो गई हैं | उन्हें हर प्रतिष्ठा, सम्मान और पुरस्कार सुलभता से मिल जाता है क्योंकि वे असलियत को जानते हुए भी सच्चाई सामना नहीं कर पाते हैं | उन्होंने समझौता कर रखा है कि वे सही प्रश्नों का उत्तर नहीं देंगे | कवि ऐसे लोगों को निशाना बनाते हुए कहता है कि मेरे अन्दर उपलब्धि सहज और सत्य की है, अतः वह उन लोगों के साथ वह नहीं जा सकता है | वह न चाहते हूए भी उसे उनके द्वारा बनाये गए धनुषीय वातावरण को तोड़ने को विवश है | साथ अति संवेदनशीलता के साथ क्षमायाचना भी करता है |

विशेष :

(१) भाषा सरल सहज है |

(२) कविता में कवि पुरानी रुढ़िवादी की जगह नवीनता को बढ़ावा देता है |

(३) कवि सच्चाई के पक्ष में खड़ा है |

सारांश :-

इस अध्याय में विद्यार्थियों ने 'यात्री','उनको प्रणाम' और 'नया कवि' कविता का अध्ययन किया है इस ध्ययन से विद्यार्थी कवियों का जीवन परिचय ,कविता का भावार्थ और कविता की कुछ पंक्तियों की सन्दर्भ सहित व्याख्या का अध्ययन किया है |आशा है उक्त सभी मुद्दों से विद्यार्थी अवगत हुए होंगे |

३.५ बोध प्रश्न

यात्री कविता -

प्र. (१) 'यात्री' कविता का सारांश अपने शब्दों में लिखिए |

प्र. (२) 'यात्री' कविता का केन्द्रीय भाव लिखिए |

प्र. (३) 'यात्री' कविता के माध्यम से कवि क्या कहना चाहते हैं, सोदाहरण लिखिए |

प्र. (४) 'यात्री' कविता का उद्देश्य लिखिए|

उनको प्रणाम कविता -

प्र. (१) 'उनको प्रणाम : कविता का सारांश अपने शब्दों में लिखिए|

प्र. (२) 'उनको प्रणाम' कविता का केन्द्रीय भाव लिखिए|

प्र. (३) 'उनको प्रणाम' कविता के माध्यम से कवि क्या कहना चाहते हैं, इसे सोदाहरण लिखिए|

प्र. (४) 'उनको प्रणाम' कविता का उद्देश्य लिखिए|

'नया कवि' कविता -

(१) 'नया कवि' कविता का उद्देश्य अपने शब्दों में लिखिए|

(२) 'नया कवि' कविता का केन्द्रीय भाव लिखिए|

(३) 'नया कवि' कविता की संवेदना को अपने शब्दों में लिखिए|

(४) 'नया कवि' कविता के माध्यम से कवि क्या संदेश देना चाहता है ? अपने शब्दों में लिखिए|

३.६ अति लघुत्तरी प्रश्न

यात्री कविता -

(१) 'यात्री' कविता के कवि कौन है ?

उ. अज्ञेय जी|

(१) 'यात्री' कविता में प्रबुद्ध कहाँ जाने में रोकता है ?

उ. मन्दिर

(२) 'यात्री' कविता में पग - पग पर क्या है|

उ. पग-पग पर तीर्थ है|

(४) 'यात्री' कविता में बोधिसत्व किस तरह की यात्रा को माँगने को कहता है ?

उ. लम्बी यात्रा|

(५) 'यात्री' कविता में किसकी गति मन्दिरों की पूजा में चढ़ती है ?

उ. मनुष्य की गति

(६) मनुष्य को जीवन यात्रा में कितना ही मिलता है ?

उ. जितना वह भीतर से दानी होता है |

(७) 'यात्री' कविता में किसकी अर्थवत्ता मनुष्य के उपस्थित रहने से बढ़ जाती है ?

उ. मंदिर की मूर्ति की |

(८) 'यात्री' कविता में हर पल, हर साँस में क्या मिलेगा ?

उ. जीवन के क्षेत्र कुछ नया सीखने को अवश्य मिलेगा |

उनको प्रणाम कविता -

प्र. (१) 'उनको प्रणाम' कविता के कवि कौन है ?

उ. नागार्जुन |

प्र. (२) 'उनको प्रणाम' कविता में किसे संबोधित किया गया है |

उ. असफल व्यक्तियों को |

प्र. (३) उनको प्रणाम कविता में कवि किसे प्रणाम करता है ?

उ. जो जीवन के क्षेत्र में संघर्ष करते हुए असफल हो जाते हैं |

प्र. (४) कविता में छोटी - सी नाव लेकर क्या पार करने की बात कहीं गई है ?

उ. समुद्र को पार करने की बात कही गयी है |

प्र. (५) दुनिया किसे भूल जाती है ?

उ. असफल व्यक्तियों द्वारा किये गए कार्यों को |

प्र. (६) लोग कहाँ से असफल हो कर नीचे उतर आते हैं ?

उ. उच्चे शिखर से |

प्र. (७) हम किनकी अतुलनीय सेवाओं को भूल जाते हैं ?

उ. जो व्यक्ति अपने द्वारा किये गए कार्यों का विज्ञापन नहीं करता है |

प्र. (८) नागार्जुन जी का वास्तविक नाम क्या है ?

उ. वैद्यनाथ मिश्र |

प्र. (९) नागार्जुन जी जन्म कहाँ हुआ था ?

उ. बिहार के दरभंगा जिले में |

प्र. (१०) कविता में हिम - समाधि कौन ले लेता है ?

उ. जो उच्चे शिखर पर चढ़ने की चाहत लेकर उत्साह के साथ चढ़ाई करते है |

'नया कवि' कविता -

(१) 'नया कवि' के रचनाकार कौन है ?

उ. गिरिजाकुमार माथुर |

(२) कवि अंधेरी रात में अपने आप को क्या बताता है ?

उ. अग्निध्वज

(३) आज के समय में जीवन में क्या अनिवार्य हो गया है ?

उ. समझौता |

(४) 'नया कवि' कविता में कवि जब युग के पास कोई उपाय नहीं रहता है, तो किस तरफ कदम बढ़ाने की बात करता है ?

उ. अछुती मंजिलों को ओर !

(५) 'नया कवि' कविता में कवि सभी प्रश्नों के सभी उत्तर को क्या कहता है ?

उ. पुराने खोखले कहता है |

(६) 'नया कवि' कविता में आजकल के व्यक्ति और समूहवाले किस खजाने के चक्कर में पड़ गये है ?

उ. आत्मविज्ञापित खजाने के चक्कर में |

(७) 'नया कवि' कविता में सभी क्या छिपा रहे है ?

उ. सच्चाई |

(८) सुविधापरस्त लोग प्रश्नों का उत्तर कैसे देते है ?

उ. बिना उत्तर दिए भाग जाते हैं |

(९) 'नया कवि' कविता में कवि क्या करने को विवश होता है |

उ. अग्रजों की शम्भू धनुष तोड़ने पर विवश होता है |

(१०) गिरिजाकुमार माथुर का जन्म कहाँ हुआ था ?

उ. मध्य प्रदेश के गुना जिले में |

❖❖❖❖

४

काव्य सौरभ (कविता संग्रह)

प्रमथ्यु गाथा (धर्मवीर भारती)
इस तरह तो (बाल स्वरूप 'राही')
पानी में घिरे हुए लोग (केदारनाथ सिंह)

इकाई की रूपरेखा :

४.० इकाई का उद्देश्य

४.१ प्रस्तावना

४.२ कविता - प्रमथ्यु गाथा (धर्मवीर भारती)

४.२.१ धर्म वीर भारती का कवि परिचय

४.२.२ प्रमथ्यु गाथा कविता का भावार्थ

४.२.३ प्रमथ्यु गाथा कविता संदर्भ सहित स्पष्टीकरण

४.३ इस तरह तो (बाल स्वरूप 'राही')

४.३.१ बाल स्वरूप 'राही' कवि परिचय

४.३.२ 'इस तरह तो' कविता का भावार्थ

४.३.३ 'इस तरह तो' कविता संदर्भ सहित स्पष्टीकरण

४.४ 'पानी में घिरे हुए लोग' (केदारनाथ सिंह)

४.४.१ केदारनाथ सिंह कवि परिचय

४.४.२ 'पानी में घिरे हुए लोग' कविता का भावार्थ

४.४.३ 'पानी में घिरे हुए लोग' कविता संदर्भ सहित स्पष्टीकरण

४.५ सारांश

४.६ बोध प्रश्न

४.७ वस्तुनिष्ठ / लघुत्तरीय प्रश्न

४.० इकाई का उद्देश्य

इस इकाई में काव्य सौरभ (कविता संग्रह) की तीन इकाइयों का अध्ययन किया जायगा पहली कविता - प्रमथ्यु गाथा (धर्मवीर भारती),दूसरी कविता 'इस तरह तो' (बाल स्वरूप 'राही'), तीसरी कविता 'पानी में घिरे हुए लोग' (केदारनाथ सिंह)) | विद्यार्थी तीनो कविता के कवि का जीवन परिचय से अवगत होंगे | साथ ही -

* प्रमथ्यु गाथा , 'इस तरह तो' और 'पानी में घिरे हुए लोग' कविता का भावार्थ समझ सकेंगे |

- उक्त तीनो कविता से चुने हुए अंश की व्याख्या कर सकेंगे |
- वस्तुनिष्ठ और बोध प्रश्नों के उत्तर लिख सकेंगे |

४.१ प्रस्तावना

काव्य सौरभ (कविता संग्रह) स्वातन्त्र्योत्तर कवियों की कविता का संग्रह है | इस संग्रह में कवियों के विचारों और भावनाओं से प्रेरित कविताओ को स्थान दिया गया है |जो सामाजिक मुद्दों और पाठक के मन पर सीधा प्रभाव डालती है | अज्ञेय, नागार्जुन और गिरिजा प्रसाद माथुर हिंदी साहित्य के अग्रणी कवि है उनकी कविता का अध्ययन विस्तृत रूप से करना विद्यार्थियों के लिए अनिवार्य है |

४.२ कविता - प्रमथ्यु गाथा (धर्मवीर भारती)

४ .२.१ धर्मवीर भारती कवि परिचय:

धर्मवीर भारती का जन्म 25 दिसम्बर 1926 को इलाहाबाद (उ. प्र.) में हुआ था | इनकी शिक्षा - दीक्षा इलाहाबाद से ही होती है | प्रयाग विश्वविदयालय से एम. ए. और पी-एच. डी. की उपाधि लेकर उसी विश्वविद्यालय में कुछ दिन अध्यापन भी करते है सन 1956 में धर्मयुग के सम्पादन का भार लेकर मुंबई चले गए | 1997 में 'धर्मयुग' से अवकाश ग्रहण किया |

धर्मवीर भारती का कृतित्व बहु आयामी है | वे कवि, कथाकार, उपन्यास और नाट्य - शिल्पी के साथ - साथ एक सफल निबंधकार भी हैं | उनकी दृष्टि में वर्तमान को सुधारने और भविष्य को सुखमय बनाने के लिए आम जनता के दु:ख दर्द को समझाने और उसे दूर करने की आवश्यकता है | दुख की बात तो यह है कि आज 'जनतंत्र' शक्तिशाली लोगों के हाथ में चला गया और 'जन' परवाहकिसी को नहीं है | भारती जी अपनी रचनाओं के माध्यम से इसी 'जन' की आशाओं, आकांक्षाओं, विवशताओं, कष्टों की अभिव्यक्ति देने का प्रयास करते है |

भारती जी को काव्य क्षेत्र में 'ठठालोहा', सात गीत वर्ष, कनुप्रिया, 'सपना अभी भी' आदि को विशेष ख्याति मिली है | काव्य नाटक 'अंधा युग' हिंदी साहित्य की अमुल्य निधि है |

इनके प्रमुख उपन्यास 'गुनाहो का देवता' और 'सूरज का सातवाँ घोड़ा बहुत प्रसिद्ध हैं | 1972 में भारती जी पदमश्री सम्मान से अलंकृत किया गया था | 1994 में उन्हें महाराष्ट्र गौरव सम्मान से महाराष्ट्र सरकार सम्मानित करती हैं | 04 सितम्बर 1997 में इनका निधन हो जाता है |

४.२.२ कविता का भावार्थ

प्रस्तुत कविता के माध्यम से कवि धर्मवीर भारती जी यह कहना चाहते है कि जो व्यक्ति अपने अदम साहस से लीक से हटकर समाज के विरुद्ध जाकर समाज के लिए कोई बडा कार्य करता है, तो वही समाज उसे दंड देता है | समाज के लोग उसके किये गये कार्यों का फायदा भी उठाते है और उसे दंड पाते देखकर आनन्दित भी होते हैं |

'प्रमथ्युगाथा' कविता युनानी पुराण - पुरुष पर आधारित एक युनानी पुराण - पुरुष पर आधारित एक युनानी कथा को आधार बनाकर लिखी गई है | युनानी कथा एक पत्र प्रोमीथियस है जो सृष्टि के आरम्भ में पहली बार स्वर्ग से जुपिटर के महल से अग्नि चुरा कर लाया था | जुपिटर के महल से अग्नि चुरा लाने के कारण उसे दंडस्वरूप एक शिला से बाँध कर एक गिद्ध को उसके हृदय पिंड को खाते रहने के लिए तैनात कर दिया जाता है | समाज के लोग उसे दंडपाते कौतूहल और आनन्द से देखते रहते हैं | कवि धर्मवीर भारती ने प्रीमीथियस को प्रमथ्यु और जुपिटर को घुपितर नाम देकर कविता की कथा वस्तु का आरंभ किया है | इसके बाद प्रमथ्यु घुपितर, जनसाधारण, अग्नि और गिदध के बायानो से कविता आगे बढ़ती है |

प्रमथ्यु पृथ्वी का घना अँधेरा दूर करने के लिए घुपितर के महल से अग्नि चुरा लाने की हिम्मत करता है | वह स्वीकार करता है कि मैंने समाज की भलाई के लिए पहली बार साहस दिखाया | घुपितर उसे आग चुराने के कारण दंड स्वरूप एक शिला में बँधवाकर एक नरभक्षी बूढ़े गिदध को उसका भोजन बनाकर छोड़ देता है | गिद्ध उसके हृदय पिंड को खाता रहता है और हृदय वापस पुरा होता रहता है, इस तरह प्रमथ्यु लगातार पीड़ा सहता रहता है |

घुपितर को प्रमथ्यु के इस साहस पूर्ण कार्य पर बड़ा आश्चर्य होता है | वह कहता है कि मैंने मनुष्य का जो नक्शा बनाया था, उसमें दासता, विनय, कायरता, भय आतंक और अज्ञानता थी | मगर प्रमथ्यु ने इस प्रकार दुसाहस कैसे किया | अंतः इसे ऐसा दंड देना होगा कि भविष्य में फिर से कोई इस प्रकार का साहस न कर सकें | वहीं जन - साधारण प्रमथ्यु के किये गये साहसी कार्य की गलत मानते है, पर उसके द्वारा लाई गई अग्नि का प्रयोग कर रहे हैं | जन - साधारण लोग तमाशाबीन होकर कौतूहल और आनन्द के साथ प्रमथ्यु को सजा देते देख रहे है |

गिदध प्रमथ्यु की उपलब्धि के महत्व को समझता है | वह प्रमथ्यु के द्वारा अग्नि धरती पर लाने का महान कार्य मानता है | धरती पर अँधियारा कैसे समाप्त हो, इस बात की चिन्ता गिदध को भी थी | वह कहता है कि उसके पास ऊँची उड़ान के लिए पंख भी थे और उसने अग्नि को देखा भी था, मगर उसके पास प्रमथ्यु जैसे साहस नहीं था | गिदध

कहता है कि देखो विधी का विधान, आज तुम मेरे प्रिय होते हुए भी तुम्हें मेरा भोजन बना दिया गया है | वह प्रमथ्यु को समझाता है कि यदि तुम इस प्रकार समाज का भला करते हो तो तुम्हें इस प्रकार के कष्ट उठाने होगे, अपने मन को मैला मत करो | सब कुछ सहते हुए, माथे पर शिकन मत आने दो |

कवि ने साधारण जनता की कायरता और नीचता का भी वर्णन किया है | साधारण जन को आग की आवश्यकता थी, वे उसका उपयोग भी करते है | लेकिन जब प्रमथ्यु को दंड मिलता है तो वहीं जनता कहने लगती हैं कि आग लाने के लिए हमने तो नहीं कहा था, लेकिन जब अग्नि आ गई है तो हम लेने से मना भी नहीं कर रहे हैं | उनके अन्दर साहस नहीं है कि वे प्रमथ्यु के समर्थन ने आगे आये | वे तो सिर्फ तमाशा देखने आये हैं | कवि यह बात स्पष्ट करता है कि अगर वे चाहते तो उनमें से कोई प्रमथ्यु की तरह साहस करके अग्नि ला सकता था | लेकिन किसी ने ऐसी हिम्मत नहीं की | लोकनीति से हटकर समाज में कोई नया काम करनेवाले के प्रतिलोगों का रवैये इसी प्रकार के होते हैं |

४.२.३ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण

"मुझसे से, सुबह - शाम चुल्हा सुलगाएँगे | ---------

मुझको क्यों माथे से लगाकर, फिर फेंक दिया इन कायरों के बीच

संदर्भ : प्रस्तुत पंक्तिया हमारे पाठ्य पुस्तक 'काव्य - सौरभ' के 'प्रमथ्यु गाथा' कविता से ली गई हैं | इसके रचनाकार कवि धर्मवीर भारती है |

प्रसंग : जब अग्नि को घुपितर के महल से चुराकर प्रमथ्यु आम जनता के बीच बाँट देता है | और प्रमथ्यु को दंडस्वरूप शिला में बाँध कर गिद्ध का भोजन बना दिया जाता है | साधारण जन में से कोई इसके विरोध कुछ नहीं बोलता, बल्कि उसे दंड पाते देखकर आनन्दित होते हैं | इस प्रसंग में अग्नि यह बात कहती है |

व्याख्या : प्रस्तुत कविता के माध्यम से कवि यह बताना चाहते हैं कि जो व्यक्ति लीक से हटकर, साहस करके, समाज के लिए कुछ करता है, समाज ही उसे दंडित होते देख आनन्दित होता है | यहाँ पर अग्नि घुपितर के महलों में कैद थी, उसे प्रमथ्यु ने साहस करके मुक्त कराया, उसे सम्मान से अपने माथे पर लगाया | किन्तु प्रमथ्यु ने लोगों की भलाई के लिए जनता में बाँट दिया | जनता उसी अग्नि का प्रयोग अपने खाना - बनाने में, आभूषण तैयार करने में करती है | और नहीं तो और ईर्ष्या के कारण लोगों का घर जलाने में भी अग्नि का प्रयोग करते हैं अग्नि को लगता है कि उसे गलत हाथों में सौप दिया गया है | ये सभी कायर है क्योंकि जब प्रमथ्यु को दंड दिया जा रहा था तो आमजनता समर्थन में न आकर तमाशाबीन बनी थी | इस बात का दु:ख अग्नि को है |

विशेष

(१) भाषा सरल - सहज है |

(२) यह कविता आमजनता पर कटाक्ष या व्यंग्य का उदाहरण है |

(३) लीक से हटकर काम करनेवालों के प्रति लोगों की सोच नकारात्मक ही होती है |

४.३ इस तरह तो (बाल स्वरूप 'राही')

४.३.१ बालस्वरूप 'राही' - कवि परिचय :

बालस्वरूप 'राही' का जन्म 16 मई 1936 को दिल्ली में हुआ था | बालस्वरूप 'राही' हिंदी कवि और गीतकार है | उन्होंने हिन्दी फिल्मों के लिए कई गीत लिखे है | उन्होंने हिन्दी साहित्य में स्नातकोत्तर करने के दिल्ली विश्वविदयालय में हिंदी विभाग के प्रमुख के रूप में काम किया है | साहित्यिक लेखन के साथ - साथ दूरदर्शन पर कई वृत्तचित्रों का निर्माण भी किया है | कविता, लेख, व्यंग्य रचनाएँ, नियंत्रित स्तंभ, सम्पादन और अनुवाद के कार्य भी किया है | फिल्मों में कई पटकथा भी लिखे है |

प्रमुख रचनाएँ : गीत संग्रह - मेरा रूप तुम्हारा दर्पण', जो नितान्त मेरी है', 'राग विराग' |

बाल - गीत - संग्रह : 'दादी अम्मा मुझे बताओ', सूरज का रथ 'गाल बने गुब्बारे', 'सूरज का रथ', 'हम सब आमे निकलेंगे',

४.३.२ कविता का भावार्थ

इस कविता के माध्यम से कवि में अकेलेपन के दर्द से बाहर निकलने को कहता है | अकेलापन आज के समय में एक गम्भीर समस्या है, उसके निदान के लिए हमें अपने मन के बंद दरवाजे को खोलना ही होगा | कवि के अनुसार अगर हम अपने मन के दरवाजे बन्द किये रहेंगे तो सूरज यदि की आशा की किरण हमारे भीतर कैसे पहुँच पायेगी, निनान्त अकेले में रहकर सिर्फ आँसू बहाने से न ही हमारा दर्द कम होगा और न ही हमारा वक्त कट पायेगा | यदि हम मौन का त्याग कर देते है तो हमारा दु:ख - दर्द पीले पत्ते के समान झर जायेगा | हम लोगों के साथ हँसने - बोलने लगते है तो दिल का घाव स्वयं ही भर जाएगा | कवि कहता है कि तरह हमारे हृदय में भी एक सीढ़ी है, जहाँ से सभी रचनात्मक कार्यों के दूत होकर आते हैं | अत: हमें अपने अहम की बेड़ियों को तोड़कर गली और सड़क के लोगों से मिले - जुले, उनके सुख - दु:ख को जाने | फिर क्या गली - सड़क के शोर से हमारा दुख अपने - आप कर हो जायेगा, और हमारा अकेलापन भी नहीं रहेगा |

कवि कहता है कि अपने - आप में सिमटकर बैठे रहते और आँयू बहाने से कुछ नहीं होगा | हम इस परिस्थिती से बाहर आकर कोलाहल भरा जीवन जीना होगा | दुसरे के दु:ख को जब हम जानेंगे, तो हमारा दु:ख उनके सामने कहीं नहीं टिकेगा | अत: हमें अहंकार की बेड़ियों को तोड़कर लोगों की निरर्थक बातुनी बाते, अफवाहों, की सुनें | तभी जाकर हमारा मन हल्का होगा और दु:ख का अँधेरा या बदल अपने आप हट जायेगा |

४.३.३ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण:

ये अहम की शृंखलाएँ तोड़िए --------- तब अकेलापन स्वयं मर जाएगा |

संदर्भ : प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारे पाठ्य पुस्तक 'काव्य - सौरभ' के 'इस तरह तो' नामक कविता से ली गई है | इसके कवि बालस्वरुप 'राही' है |

प्रसंग : इस कविता के माध्यम से कवि राही जी अकेलेपन के दर्द से बाहर निकलने की सलाह देते हुए कहते है कि हमें अपने अहम का त्याग करके गली - सड़कवालों के साथ बातचीत करना होगा, मिलना जुलना होगा |

व्याख्या : प्रस्तुत कविता में कवि राही जी यह बताने की कोशिश करता है कि अकेलेपन के दर्द से हम कैसे छुटकारा पा सकते हैं | एकांत में पड़े रहने से हमारा | अकेलापन और बढ़ जाता है | हमें अपने अहम को छोड़कर सड़क - गली, पड़ोस वाले लोगों से अपना नाता जोड़ना होगा | हमें उनके दुख-सुख की जानकारी मिलेगी, तब तो हमारा दुख उनके दुख के सामने कहीं नहीं टिकेगा | जब हमारे आयेगा तो हमारा अकेलापन स्वयं समाप्त हो जायेगा |

विशेष -

(१) आशावादी कविता है |

(२) शब्दों का सुन्दर समन्वय हुआ है |

(३) कविता को भाषा सरल और सहज है |

४.४ 'पानी में घिरे हुए लोग' (केदारनाथ सिंह)

४.४.१ केदारनाथ सिंह - कवि परिचय:

केदारनाथ सिंह का जन्म १९३४ को चकिया गाँव, बलिया में हुआ था। आरंभिक शिक्षा गाँव से पूरी होती है। बाद की शिक्षा हाई स्कूल से लेकर एम.ए. तक वाराणसी में पूरी होती है। आधुनिक हिन्दी कविता में बिम्ब - विधा विषय पर सन् १९६४ में पी.एच.डी. प्राप्त की।वे पेशे से अध्यापक थे। कई विद्यालयों और विश्वविद्यालयों को अपनी से लाभावित करते हैं। साथ काव्यपाठ्य के लिए कई देशों जैसे अमेरिका, रूस, जर्मनी, ब्रिटेन, इटली तथा कजाकिस्तान भ यात्राएँ की। सन १९६० में उनका पहला काव्य संग्रह अभी बिलकुल अभी प्रकाशित होता है। उन्हें ज्ञानपीठ पुरस्कार, साहित्य अकादेमी पुरस्कार, दिनकर पुरस्कार, भारत-भारती आदि सन्मानों से सम्मानित किया गया। १९ मार्च २०१८ को उनका निधन हो गया।

प्रकाशित साहित्य :

'अभी बिलकुल अभी', 'जमीन पक रही है', 'यहाँ से देखों', 'अकाल में सारस', 'मतदान केन्द्र पर झपकी', 'मेरे समय के शब्द' आदि। उन्होंने कई विदेशी भाषाओंका अनुवाद भारतीय भाषाओंमें किया है।

४.४.२ कविता का भावार्थ

प्रस्तुत कविता के माध्यम से कवि बाढ़ के पानी में घिरे हुए लोगों की तरफ हमारा ध्यान आकर्षित करता है। कवि कहता है कि पानी से घिरे हुए लोगों के बारे में बताते हुए कहता है कि इन लोगों का पानी के साथ एक रिश्ता बन जाता है। बढ़ते हुए पानी की सतह को देखकर ये लोग किसी की प्रार्थना नहीं करते हैं, पूरे विश्वास के साथ परिचित की तरह देखते है, बिना किसी सूचना के अपना सामान खच्चर, बैल या भैंस पर लाद कर अपना सामान किसी सुरक्षित जगह पर ले जाते हैं, जहाँ पानी की पहुँच नहीं है, वहीं अपना अस्थासी डेरा बनाते हैं। अपने साथ वे अपनी गृहस्थी के छोटे-मोटे समान भी लाते हैं, ताकि विपदा के समय अपनी एक छोटी-सी दुनिया बसा सकोंगे।

बाढ़ की बिभीषिका में धीरे-धीरे उनके मवेशी, घरों की कच्ची दीवारें, फूल-पत्ते, महावीर की मूर्ति सबको बहाकर ले जाती है। वे लोग उस ऊँची जगह से बिना किसी शिकायत के अपना सब कुछ बहते हुए देखते रहते हैं। लेकिन उनकी उम्मीद बरकरार रहती है, चारों तरफ भरे पानी के बीच में लालटेन की जलाकर, उसकी रोशनी से दूर के लोगों की यह सूचना देते हैं कि वे सही सलामत अभी तक बचे हुए हैं। उसी लालटेन की मद्धिम प्रकाश में रात भर बढ़ते पानी को देखते हुए पहरा देते हैं। उनकी उम्मीदें बरकरार रहती हैं कि एक दिन पानी उतरेगा तो वह पुन: अपने घर को जायेंगे।

कविता की अन्तिम पंक्तियों में कवि उनकी असहायता, असर्मथा की और संकेत करते हुए कहता है कि इस प्रकार की प्रक्रिया से गुजरते हुए हर बार उनके भीतर कुछ टूटता है, वह उस बाढ़ के पानी गिरता रहता है। यह बाढ़ व्यवस्था के कारण आती है, और उनका सब कुछ बहाकर उन्हें इस स्थिति में छोड़कर चली जाती है। कवि कविता के माध्यम से सरकार, प्रशासन सबको कटघरें में खड़ा कर देता है। जो लोग चुपचाप बिना किसी शोर-शराबा के इतनी बड़ी आपदा को झेल जाते है, किसी का ध्यान उनकी तरफ नहीं जा रहा है।

४.४.३ संदर्भसहित स्पष्टीकरण:

अपने साथ में ले आते हैं पुआल की गंध, ...

वे ले आते हैं चिलम और आग।

संदर्भ : प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारे पाठ्य पुस्तक काव्य सौरभ के 'पानी में घिरे लोग' कविता से ली गई है। इसके कवि के दार नाथ सिंह है।

प्रसंग : इस कविता में कवि के दार नाथ सिंह बाढ़ में घिरे हुए लोग की जिजीबिषा के बारे में बताते हैं कि किस प्रकार वे लोग बिना किसी शिकायत के अपनी गृहस्थी का जरूरी सामान लेकर किसी ऊँचे स्थान पर शरण लेते हैं।

व्याख्या : प्रस्तुत कविता में बाढ़ के बढ़ते प्रकोप के कारण पानी से घिरे लोग बिना किसी शोर-शराबे के अपने गृहस्थी का जरूरी सामान खच्चर बैल या भैंस की पीठ पर लाद कर किसी ऊँची जगह शरण लेते हैं। वहाँ पहुँच कर अपनी अस्थायी दुनिया जमा लेते हैं। खंभे

गाड़कर, बारे तानकर रसियों से बाँध अपना अस्थायी घर बनाते है। अपने साथ वे पुआल लेकर आते हैं। बेआम गुठलियाँ, खाली टिन और भुने चने भी लेकर आते हैं। किसी तरह उनके जीवन के इस पल को काट सकते। वे अपने साथ चिलम और आग भी लेकर आते हैं अर्थात जीवन उपयोगी सभी ची]जे अपने साथ लेकर आते हैं।

४.५ सारांश

इस अध्याय में विद्यार्थियों ने 'यात्री','उनको प्रणाम' और 'नया कवि' कविता का अध्ययन किया है इस ध्ययन से विद्यार्थी कवियों का जीवन परिचय ,कविता का भावार्थ और कविता की कुछ पंक्तियों की सन्दर्भ सहित व्याख्या का अध्ययन किया है |आशा है उक्त सभी मुद्दों से विद्यार्थी अवगत हुए होंगे |

४.६ बोध प्रश्न

'प्रमथ्यु गाथा' कविता

(१) 'प्रमथ्यु गाथा' कविता से कवि क्या संदेश देना चाहता है, अपने शब्दों में लिखिए |

(२) 'प्रमथ्यु गाथा' कविता का केन्द्रीय भाव स्पष्ट करिए ?

(३) 'प्रमथ्यु गाथा' कविता में कवि वर्तमान काल के लोगों की सोच के बारे में क्या कहा है, इसे स्पष्ट कीजिए ?

(४) कविता का सारांश अपने शब्दों में लिखिए ?

'इस तरह तो' कविता

१. 'इस तरह तो' कविता के माध्यम से कवि अकेलेपन से निजात पाने के लिए क्या कहता है ? अपने शब्दों में लिखिए |

२. कविता 'इस तरह तो' का सारांश लिखिए |

३. 'इस तरह तो' कविता का केन्द्रीय भाव लिखिए |

४. 'इस तरह तो' कविता का उद्देश्य लिखिए |

'पानी में घिरे हुए लोग' कविता

१) 'पानी में घिरे हुए लोग' कविता के माध्यम से कवि द्वारा वर्णित दृश्यों को लिखिए।

२) 'पानी में घिरे हुए लोग' कविता का उद्देश्य लिखिए।

३) 'पानी में घिरे हुए लोग' कविता का सारांश लिखिए।

४.७ लघुत्तरी प्रश्न

'प्रमथ्यु गाथा' कविता

(१) 'प्रमथ्यु गाथा' कविता का रचनाकार कौन है ?

उ. धर्मवीर भारती

(२) 'प्रमथ्यु गाथा' कविता को किसे आधार बनाकर लिखा गया है |

उ. यूनानी कथा के पात्र प्रोमीथियस को |

(३) 'प्रमथ्यु गाथा' कविता में जुपिटर को किस नाम से संबोधित किया गया है ?

उ. घुपितर

(४) प्रमथ्यु क्या चुरा कर लाता है ?

उ. अग्नि |

(५) प्रमथ्यु अग्नि को कहाँ से चुरा कर लाता है ?

उ. घुपितर के महल से |

(६) प्रमथ्यु धरती का घना अंधेरा दूर करने लिए क्या करता है ?

उ. घुपितर के महल से अग्नि चुराने का साहस करता है |

(७) घुपितर प्रमथ्यु का माँस खाने के लिए किसे नियुक्त करता है ?

उ. नरभक्षी बूढ़े गिद्ध को

(८) प्रमथ्यु गिद्ध को अपना क्या मानता है ?

उ. गुरुजन

(९) गिद्ध प्रमथ्यु के शरीर पर कहाँ बैठा है ?

उ. सबल पुष्ट कधों पर |

(१०) अग्नि कहाँ बन्दी थी |

उ. घुपितर के महलों में |

'इस तरह तो' कविता

(१) 'इस तरह तो' कविता के रचनाकार कौन है ?

उ. बालस्वरुप 'राही' |

(२) बालस्वरुप 'राही' का जन्म कहाँ हुआ था ?

उ. दिल्ली में |

(३) 'इस तरह तो' कविता में किस समस्या को रखा गया हैं |

उ. अकेलेपन की समस्या |

(४) कवि के अनुसार घर की तरह और कहाँ पर सीढ़ी होती है ?

उ. हृदय में

(५) 'इस तरह तो' कविता के अनुसार सर्जना के दूत कहाँ से आते हैं ?

उ. हृदय की सीढ़ी से होकर आते हैं |

(६) 'इस तरह तो' कविता में कवि हमें क्या तोड़कर गली से नात जोड़ने की कहता है ?

उ. अपने अहम की बेड़ियाँ तोड़कर

(७) 'इस तरह तो' कविता में कवि अकेलेपन से छुटकारा पाने के लिए किससे नाता जोड़ने को कहता है ?

उ. गली - सड़क के लोगों से

(८) 'इस तरह तो' कविता में किसके शोर भीतर आने से अकेलापन मर जाता है ?

उ. सड़क का शोर आने से |

(९) 'इस तरह तो' कविता में किस बंद दरवाजे को खोलने की बात कही गई है ?

उ. मन के बंद दरवाजे के

(१०) अकेलेपन की समस्या क बात किस कविता में उठाई गई है |

उ. 'इस तरह तो' कविता में |

'पानी में घिरे हुए लोग' कविता

१) 'पानी में घिरे हुए लोग' के रचनाकार कौन है?

उ. केदारनाथ सिंह।

२) केदारनाथ सिंह का जन्म कहाँ हुआ था?

उ. बलिया में।

३) 'पानी में घिरे हुए लोग' अपना सामान किस लाद के ले जा रहें है?

उ. खच्चर, बैल या भैंस की पीठ पर।

४) 'पानी में घिरे हुए लोग' अपने साथ किसकी गंध लेकर जाते हैं?

उ. पुआल की गंध।

५) बाढ़ अपने साथ क्या - क्या बहकार ले जाती है?

उ. मवेशी, पूजा की घंटी, महावीर की मूर्ति, दीवारें, फूल-पत्ते आदि।

६) 'पानी में घिरे हुए लोग' बाँस पर क्या टाँग देते है?

उ. टूटही लालटेन।

७) टूटही लालटेन कहाँ टाँगते है?

उ. ऊँचे बाँस पर।

८) ऊँचे बाँस पर लालटेन क्यों टाँगते है?

उ. ताकि लोगों की उनके सुरक्षित रहने की खबर मिलती रहें।

९) 'पानी में घिरे हुए लोग' रातभर किसकी आँखों में आँखे डाल कर खड़े रहते हैं?

उ. पानी की आँखों में।

१०) 'पानी में घिरे हुए लोग' किसी से क्या नहीं करते हैं?

उ. शिकायत नहीं करते हैं।

❖❖❖❖

५

काव्य सौरभ (कविता संग्रह)

थोड़े से बच्चे और बाकी बच्चे(चन्द्रकान्त देवताले
सिलसिला- (धूमिल)
रात किसी का घर नहीं(राजेश जोशी)

इकाई की रूपरेखा :

५.० इकाई का उद्देश्य

५.१ प्रस्तावना

५.२ थोड़े से बच्चे और बाकी बच्चे(चन्द्रकान्त देवताले

५.२.१ कवि परिचय - चन्द्रकान्त देवताले

५.२.२ थोड़े से बच्चे और बाकी बच्चे कविता का भावार्थ

५.२.३ थोड़े से बच्चे और बाकी बच्चे कविता संदर्भसहित स्पष्टीकरण

५.३ सिलसिला- (धूमिल)

५.३.१ कवि परिचय धूमिल

५.३.२ सिलसिला- कविता का भावार्थ

५.३.३ सिलसिला- कविता संदर्भसहित स्पष्टीकरण

५.४ रात किसी का घर नहीं(राजेश जोशी)

५.४.१ कवि परिचय - राजेश जोशी

५.४.२ रात किसी का घर नहीं - कविता का भावार्थ

५.४.३ रात किसी का घर नहीं -कविता संदर्भसहित स्पष्टीकरण

५.५ सारांश

५ .६ बोध प्रश्न

५.७ वस्तुनिष्ठ प्रश्न

५.० इकाई का उद्देश्य

इस इकाई में काव्य सौरभ (कविता संग्रह) की तीन कविताओं का अध्ययन किया जायगा पहली कविता 'थोड़े से बच्चे और बाकी बच्चे'(चन्द्रकान्त देवताले), दूसरी कविता सिलसिला- (धूमिल), तीसरी कविता रात किसी का घर नहीं(राजेश जोशी) विद्यार्थी तीनो कविता के कवि का जीवन परिचय से अवगत होंगे | साथ ही -

* यात्री ,उनको प्रणाम और नया कवि कविता का भावार्थ समझ सकेंगे |

- उक्त तीनो कविता से चुने हुए अंश की व्याख्या कर सकेंगे |
- वस्तुनिष्ठ और बोध प्रश्नों के उत्तर लिख सकेंगे |

५ .१ प्रस्तावना

काव्य सौरभ (कविता संग्रह) स्वातन्त्र्योत्तर कवियों की कविता का संग्रह है | इस संग्रह में कवियों के विचारों और भावनाओं से प्रेरित कविताओ को स्थान दिया गया है |जो सामाजिक मुद्दों और पाठक के मन पर सीधा प्रभाव डालती है | अज्ञेय, नागार्जुन और गिरिजा प्रसाद माथुर हिंदी साहित्य के अग्रणी कवि है उनकी कविता का अध्ययन विस्तृत रूप से करना विद्यार्थियों के लिए अनिवार्य है |

५.२ थोड़े से बच्चे और बाकी बच्चे(चन्द्रकान्त देवताले)

५.२.१ चन्द्रकान्त देवताले - कवि परिचय:

चन्द्रकान्त देवताले का जन्म ७ नवम्बर १९३६ को जौलखेड़ा (जिला बैतूल) मध्यप्रदेश में हुआ था। होल्फर कॉलेज, इन्दौर से १९६० में हिन्दी साहित्य में ए.ए. की उपाधि प्राप्त किया। सागर विश्वविद्यालय से मुक्तिबोध पर पी.एच.डी. किया। छात्र जीवन में 'नई दुनिया', 'नवभारत' सहित अन्य अखबारों में काम किया। साठोत्तरी हिंदी कविता के प्रमुख हस्तादार देवताले सन १९६१ से उच्च शिक्षा में अध्यापन कार्य से सबध्द रहे है। समकालीन साहित्य के बारे में उनके लेख, विचार पत्र तथा टिप्पणियाँ भी प्रकाशित हुई। अनुवाद में उनकी रूचि थी। उन्होंने कविताओंके अनुवाद प्राय: सभी भारतीय और कई विदेशी भाषाओंमें किया। अग्रेजी, जर्मन, बाँग्ला, उर्दू, मलयालम, मराठी के कविताओं का अनुवाद किया।

देवताले जी की कविता में समय और सन्वर्भ के साथ ताल्लुकात रखने वाली सभी सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक प्रवृत्तियाँ समा गई है। उनकी कविता में जहाँ व्यवस्था की कुरुपता के खिलाफ गुस्सा नजर आता है, तो वहीं मानवीय प्रेम भाव भी है। देवताले जी की कविता की जड़े गाँव-कस्बों और निम्न मध्यवर्ग के जीवन में हैं। उन्हें उनकी रचनाओंके लिए अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किया जा चुका है। इनमें प्रमुख है माखन लाल चतुर्वेदी पुरस्कार, मध्यप्रदेश शासन का शिखर सम्मान, साहित्य अकादमी

पुरस्कार आदि। वे केन्द्रीय साहित्य अकादमी के भी सदस्य रहे। उनका देहान्त १४ अगस्त २०१७ में होता है।

प्रमुख रचनाएँ :

हड्डियों में छिपा ज्वर, दीवारों पर खून से, लकड़बग्धा हँस रहा है, रोशनी के मैदान की तरफ, भूखंड तय रहा है, आम हर चीज में बताई गई भी, पत्थर की बेंच, इतनी पत्थर रोशनी, उसके सपने आदि।

५.२.२ कविता का भावार्थ:

इस कविता के माध्यम से कवि बच्चों के माध्यम से समाज के वर्गीय विभाजन का एक मार्मिक चित्र हमारे सामने प्रस्तुत किया है। प्रस्तुत कविता में कवित एक तरप सभी सुविधा सम्पन्न घरों के थोड़े से बच्चों को रखा है, दूसरी तरफ सम्पन्न विहीन गरीब माता-पिता के असंख्य बच्चों को लिया है। जो अपना पेट भरने के लिए मजदूरी कर रहे हैं, होटलों में बर्तन माँज रहें है, गलियों - सड़कों पर भटकते हुए असमय ही बुरी लतों के शिकार हो रहे हैं।

कवि दोनों तरह के बच्चों की कई मार्मिक चित्र उकेरे हैं। एक तरफ जहाँ कुछ बच्चे के सामने एक बड़ी-सी पर अंडे और सेव रखे हुए बच्चे बिना किसी छीना-झपटी के आशम से खा रहे हैं, तो वही दूसरी तरफ सैकडों बच्चे एक ही कटोर दान से अपनी भूख मिटा रहे हैं। उनके हाथ में सिर्फ आधी सूखी रोटी ही है। कुछ बच्चों के लिए आकर्षक स्कूल खुले हैं, बच्चे अच्छो पोशाकों में प्रसन्न दिख रहे है तो दूसरी तरफ असंख्य बच्चों को हमारे भी नसीब नहीं हो रही है, उनकी पोशाके भी फटी हुई है।

एक तरफ अखबार में तीन ??? बच्चों के आइस्क्रीम खाते हुए, छापा गया है, तो वहीं कुछ बच्चें २० पैसे कमाने के लिए बाध्य है और पुलिस द्वारा पकड़े जाने पर उन्हें पीटाई भी पड़ती है। इस तरह अलग-अलग परिप्रेक्षय में दोनों वर्गो के बच्चों का विस्तार से परिचय देने के बाद कवि कहता है कि अगर ईश्वर होते तो इस तरह की असमानता तथा साधनहीन बच्चों की दुर्दशा को देखकर अवश्य ही ईश्वर को देह में कोढ़ हो गया होता। अगर न्यायाधीश भी होता तो वह भी अपने आँखे फोड़ लेता। कवि कहता है कि इस संसार में नहीं ही ईश्वर है और नहीं कोई न्यायाधीश है, नही तो इसप्रकार का यह अन्याय होता ही नहीं। चापलूसी, भ्रष्टाचार और लोभलालच से विकलांग व्यवस्था का हवाला देते हुए कवि कहता है कि भले ही यह बच्चे असहाय है, लेकिन इनकी संख्या विशाल है। यदि वे एक दिन एक जुट होकर चीख पड़े तो गैर-बराबरी पर आधारित यह व्यवस्था धराशायी हो जाएगी।

५.२.३ संदर्भसहित स्पष्टीकरण:

पर वे शायद अभी जानते नहीं, ...

अँधरे के सबसे बड़े बोगदे को।

संदर्भ : प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारे पाठय पुस्तक काव्य सौरभ के 'थोडे-से बच्चे और बाकी बच्चे' कविता से ली गई है। इसके कवि चन्द्रकान्त देवताले है।

प्रसंग : प्रस्तुत कविता में असंख्य बच्चे जो असहाय हैं, उन्हें अपनी ताकत का पता ही नहीं है। यदि वे एकजुट होकर चीख भी लगा देते है तो गैर बराबरी पर आधारित व्यवस्था गिर जायेगी। इसी प्रसंग में यह बात कही गई है।

व्याख्या : कवि इस कविता के माध्यम से समाज के वर्गीय विभाजन का चित्र प्रस्तुत करता है । एक तरफ हर सुख-सुविधा के संपन्न कुछ ही बच्चे हैं तथा वहीं दूसरी तरफ असंख्य बच्चे हैं जो हर तरफ से साधनहीन है । कवि समाज को चेतावनी देते हुए कहता है कि भले ही ये बच्चे असहाय है, लेकिन इनकी संख्या विशाल है, अगर किसी दिन एक साथ मिलकर चीख पड़े तो गैर-बराबरी वाले की दुनिया धराशायी हो जाएगी ।

विशेष :

१) भाषा सरल, सहज और लयात्मक है ।

२) निम्न वर्गीय परिवार की दारूण कथा का वर्णन है ।

३) समाज के वर्गीय विभाजन का मार्मिक वर्णन है ।

५.३ सिलसिला- (धूमिल)

५ .३.१ धूमिल - कवि परिचय:

इनका जन्म ९ नवम्बर १९३६ को गाँव खेवली, बनारस में एक निम्न मध्यमवर्गीय किसान परिवार में हुआ था । इनका नाम सुदामा पाण्डेय था । उनकी पारंभिक शिक्षा गाँव तथा कूर्मि क्षत्रिय इंटर कॉलेज हरहुआ से १९५३ में हाईस्कूल पास किया। हाईस्कूल की मामूली शिक्षा प्राप्त करने के बाद रोटी-रोजी के चक्कर में कलकत्ता पहुँचे और वहाँ मजदूरी के साथ लोहा ढोने का काम करने लगे । पुन: सन् १९५७ में इन्होंने वाराणसी के औद्योगिक संस्थान में नामांकन करवाया तथा १९५८ में विद्यूत डिप्लोमा प्रथम श्रेणी पास करके वहीं विद्यूत अनुदेशक के पद पर बहाद हुए । लेकिन प्रतिशोध की भावना से कई बार होता रहता है । धूमिल जी ने जीवनभर सरकारी प्रतिष्ठानों और षड्यंत्रों का विरोध किया ।

धूमिल कुछ पीढ़ी के माहू मंग आति है। उनकी कविताओंमें सामान्य जन के लिए गहरी पीड़ा और दर्द के भाव है। धूमिल का साहित्य वस्तुत: समाज के निचले वर्गो की संवेदनाओं, भावनाओंऔर भाषा की अभिव्यक्ति का साहित्य है। उनका निधन १० फरवरी १९७५ को हुआ।

प्रकाशित साहित्य :'संसद से सड़क तक', कल सुनना मुझे, सुदामा पाण्डे का प्रजातंत्र।

५.३.२ कविता का भावार्थ

प्रस्तुत कविता के माध्यम से कवि धूमिल सदियों से चली आ रही मजदूरो - गरीबों के खिलाफ शोषणकारी व्यवस्था का छिन्-भिन्न कर देने की बात पर जोर देता है। कविता के आरंभ में कार्ल मार्क्स के आहबान की बात करते हुए कवि कविता को विस्तार देता है। कार्ल मार्क्स ने कहा था कि 'दुनिया के मजदूरों एक हो, तुम्हारे पास खाने के लिए जंजीरों के सिवा कुछ नहीं है।' कवि जन साधारण के हुजूम को, मजदूरों, गरीबो, किसानों को एकजुट होकर पूँजीवादी सभ्यता पर हमला करने के प्रेरित करता है। वह पूँजीवादी लोगों को हरियाली से संबोधन करता है। वह मजदूरों - किसानों गरीबों से कहता है कि तुम लोगों द्वारा लगाये गये परिश्रम के पेड़ का फल ये पूँजीवादी लोग खा रहे हैं, अत: वह कहता है कि इन परिश्रम के पेड़ को जड़ों को उखाड़ दो, हो सकता है इससे एकबार सम्पूर्ण जंगल सुख जाए। तुम्हारे पास जो कुछ है अभी शायद उससे भी हाथ धोना पड़े। लेकिन तुम्हारे पास खाने को बहुत कुछ नहीं है जिससे तुम्हें हानि का अहसास होगा।

कवि मजदूरों - गरीबों को बताता है कि इस तरह की क्रान्ति के बाद एक नई दुनिया की आधारशिला बनेगी, जहाँ पर हर चीज तुम्हारी अपनी होगी। जो गुलामी की बेंडियाँ हैं, उन्हें तोड़ना होगा। दूसरे शब्दों में कह सकते हैं कि कवि धूमिल आमूल्य क्रान्ति और बदलाव को तरफदारी करते हैं।

५.३.३ संदर्भसहित स्पष्टीकरण:

कतु आए हुए चेहरों की रौनक,

....

बिना इस डरके कि जंगल सूख जाएगा।

संदर्भ : प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारे पाठ्य पुस्तक 'काव्य सौरभ' के सिलसिला नामक कविता से ली गई है। इसके कवि धूमिल है।

प्रसंग : इस कविता में कवि पूँजीवादी लोगों के खिलाफ गरीबों मजदूरों को एक जुट होकर, इस व्यवस्था पर हमला करने के लिए कहता है।

व्याख्या : प्रस्तुत कविता में कवि सधियों से चली आ रही पूँजीवादी सभ्यता को समाप्त कर एक नई व्यवस्था स्थापित करना चाहता है जहाँ पर मजदूरों द्वारा बनाई गई चीजे पर उनका अधिकार हो। उन पर होनेवाले शोषण समाप्त हो। कविता में कवि पूँजीवादी लोगों को गरीबों मजदूरों के परिश्रम पर फलते-फूलने वाले हरियाली बताया है। इस हरियाली को समाप्त करने के कवि मजदूरों से अपने परिश्रम के पेड़ की जड़ों का रूख बदलने को कहता है। कवि कहता है कि हो सकता है सम्पूर्ण जंगल सुखा जाए, इस बात की चिन्ता नहीं करनी है। यदि यह सब कर सकते हो तभी जाकर कटु आए हुए चेहरे पर पुन: रौनक आ सकती है।

विशेष :

१) भाषा सरल और सहज है।

२) मजदूरों - गरीबों के शोषण की दारुप वर्णन है।

३) कवि जन क्रांति की आशा करता है।

५.४ रात किसी का घर नहीं (राजेश जोशी)

५.४.१ राजेश जोशी - कवि परिचय:

राजेश जोशी का जन्म १८ जुलाई १९४६ को नरसिंहगढ़ जिला, मध्यप्रदेश में हुआ था। उन्होंने प्राणिशास्त्र में एम.एस.सी. और समाजशास्त्र में एम.ए. किया। उसके बाद जे.जे. आर्ट्स से ड्राइंग में इंटर सर्टीफिकेट कोर्स पुरा किया। उन्होंने शिक्षा पूरी करने के बाद पत्रकारिता शुरु की और कुछ सालों तक अध्यापन किया। इसके बाद १९६७ से २००१ तक भारतीय स्टेट बैंक में कार्यरत रहें।

राजेश जोशी ने कविताओंके अलावा कहानियाँ, नाटक, लेख और टिप्पणियाँ भी लिखी। उन्होंने कुछ नाट्य रूपांतर तथा कुछ लघु फिल्मों के लिए पटकथा लेखन का कार्य भी किया। कई भारतीय भाषाओंके साथ-साथ अंग्रेजी, रूसी और जर्मन में भी उनकी कविताओंके अनुवाद प्रकाशित हुए। इनकी कविताएँ गहरे सामाजिक अभिप्राय वाली होती है। उनकी कविताओंमें जीवन के संकट में भी गहरी आस्था को उभारती है तथा मनुष्यता को बचाए रखने का एक निरंतर संघर्ष भी करने की प्रेरणा देती है। उनकी कविताओंमें स्थानीय बोली, मिजाज और मौसम सभी कुछ देखने को मिलती है। उन्हें मुक्तिबोध पुरस्कार, श्रीकांत वर्मा स्मृति पुरस्कार, मध्यप्रदेश सरकार के शिखर सम्मान और माखनलाल चतुर्वेदी पुरस्कार के साथ-साथ प्रतिष्ठित साहित्य अकादमी पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया।

प्रकाशित साहित्य : राजेश जोशी का कृतित्य बहुआयामी है। वे कवि कथाकार, नाटककार के साथ-साथ एक सफल आलोचक तथा अनुवादक भी है। 'समरगाथा' (लम्बी कविता), 'एक दिन बोलेंगे पेड़', 'मिट्टी का चेहरा', 'नेपथ्य में हँसी', दो पंक्तियों के बीच, गेंद निराली मिठू की (बच्चों के लिए कविताएँ आदि प्रसिद्ध कविता संग्रह है। कहानी संग्रह में सोमवार और अन्य कहानियाँ और कपिल का पेड़ मुख्य है। जादू का जंगल अच्छे आदमी, टंकारा का गाना, हमें जवाब चाहिए आदि प्रमुख नाटक है।

५.४.२ कविता का भावार्थ:

प्रस्तुत कविता के माध्यम से कवि राजेश जोशी ने एक वृद्ध व्यक्ति के मार्मिक प्रसंग को उभारा है जो अपने बच्चों को उपेक्षा और प्रताड़ना से दु:खी होकर घर छोड़कर निकल आता है। घर से निकलते समय वह यह निर्णय लेता है कि अब वह लौटकर कभी वापर इस घर में नही आयेगा। कवि जब उस बुढ़े व्यक्ति से मिलता है तो वह कवि को बताता है कि उसके लड़कों ने उसे घर से निकाल दिया है। उसके लड़के उसे मारते हैं तथा वह

पिछले तीन दिनों से वह कुछ खाया भी नहीं है। मार का निशान वह कवि को अपनी फटी हुई कमीज को उठाकर दिखाता है। बुढ़ा व्यक्ति को यह बताता है कि उसने अने बच्चों को बचपन में कभी मारा नहीं था, मगर उसके बच्चे उसे हर दिन पीटते हैं। वह यह भी मन ही मन चाहता है कि अभी उसके बेटों को जाकर समझाए। मगर दूसरे पल ही वह यह कहकर खड़ा हो जाता है कि वे शायद उसे ढूँढ़ रहे होंगे। कुछ ही समय पहले वह कभी घर न लौटने का निर्णय लेकर चला था मगर एक अनिश्चितता का भय उसके ऊपर घाने लगता है कि अब इस उम्र में वह कहाँ जायेगा, क्या करेगा। वह कवि को अपने द्वारा किये जानेवाले कामों को भी बताता है। फिर भी उसे अपने घर में अपने बच्चों द्वारा तरह-तरह की परेशानियाँ झेलनी पड़ती है। फिर वह अचानक इन सब बातों कर नजर अन्दाज करके अपनी गलतियों को बोल पड़ता है कि वह बूढ़ा होने के कारण चिड़चिड़ा हो गया है। कुछ बुरे हालात ने परिस्थितियों को और बिगाड़ दिया है। अचानक उसे उनके छोटे-छोटे बच्चों को याद आ जाती है जिन्हे वह बहुत प्यार करता है, उन्हीं के साथ उसका समय बीत जाता है। यह सब सोचकर वह पुन: घर की और चल देता है।

कवि सोचता है कि सचमुच रात किसी का घर नहीं हो सकती है, कुछ समय के लिए अँधेरे में उसके आँसू छिपा सकती है, मगर रात सिर छिपाने की जगह नहीं देती। वृद्ध व्यक्ति को अपने घर जाते देखकर कवि को मन में प्रश्न उठता है कि जहाँ वह जा रहा है, क्या सचमुच में उसका घर उसी तरफ है, घर तो वह होता है जहाँ जाकर उसे आराम मिलता है, जहाँ उसका कोई प्रतिक्षा करता होगा, जहाँ उसे कोई अपमानित तथा उपेक्षित न करें।

५.४.३ संदर्भसहित स्पष्टीकरण

’कहता है कि वह अब कभी लौटकर

अपने घर नहीं जाएगा

....

दूसरे ही पल वह कहता है

कि अब इस उम्र में वह कहाँ जा सकता है?“

संदर्भ : प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारे पाठ्य पुस्तक 'काव्य सौरभ' के रात किसी का घर नहीं नामक कविता से ली गई है। इसके रचनाकार राजेश जोशी है।

प्रसंग : इस कविता के माध्यम से कवि वृद्ध व्यक्तियों पर हो रहे अत्याचार, प्रताड़ना पर चर्चा की है। इस सब बातों से अजीज होकर वृद्ध व्यक्ति या तो घर छोड़ देते है या उन्हें घर से निकाल दिया जाता है।

व्याख्या : प्रस्तुत कविता में कवि वृद्ध व्यक्तियों पर हो रहे अत्याचार का मार्मिक प्रासंग के रूप में सामने रखा है। कवि को एक बूढ़ा व्यक्ति मिलता है जो अपने बेटों द्वारा रोज-रोज के अत्याचार, मारपीट, उपेक्षा और प्रताड़ना से दुखी होकर अपने ही गर से निकल

आता है। साथ ही वह यह निर्णय भी लेता है कि वह अब कभी लौटकर उस घर में नहीं जायेगा। मगर अनिश्चितता के भय से वह डर जाता है और कहता है कि शायद क्रोध में आकर उसने ऐसा सोचा होगा। अब इस उम्र में वह कहाँ जा सकता है। उसे अपने गर में लौटना ही होगा।

विशेष :

१) भाषा सरल, सहज और व्यवहारिक है।

२) वृद्ध व्यक्तियों पर हो रहे अत्याचार का वर्णन है।

५ .५ सारांश

इस अध्याय में विद्यार्थियों ने 'यात्री','उनको प्रणाम' और 'नया कवि' कविता का अध्ययन किया है इस ध्ययन से विद्यार्थी कवियों का जीवन परिचय ,कविता का भावार्थ और कविता की कुछ पंक्तियों की सन्दर्भ सहित व्याख्या का अध्ययन किया है |आशा है उक्त सभी मुद्दों से विद्यार्थी अवगत हुए होंगे |

५ .६ बोध प्रश्न

'थोड़े से बच्चे और बाकी बच्चे' कविता

१) 'थोड़े से बच्चे और बाकी बच्चे' कविता में समाज के वर्गीय विभाजन का एक मार्मिक चित्र उभेरा गया है। इस बात की पुष्टि करें।

२) 'थोड़े से बच्चे और बाकी बच्चे' कविता में सामाजिक असंतुलन की समस्या उठाई गई है। इस बात को अपने शब्दों में लिखिए।

३) 'थोड़े से बच्चे और बाकी बच्चे' कविता का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।

'सिलसिला' कविता

१) 'सिलसिला' कविता का केन्द्रीय भाव लिखिए।

२) 'सिलसिला' कविता के माध्यम से कवि मजदूरों- गरीबों को क्या संदेश देता है, अपने शब्दों में लिखिए।

३) 'सिलसिला' कविता में कवि किस क्रांति की आशा करता है? अपने शब्दों में लिखिए।

'रात किसी का घर नहीं' कविता

१) 'रात किसी का घर नहीं' कविता का केन्द्रीय भाव लिखिए।

२) 'रात किसी का घर नहीं' कविता के माध्यम से कवि क्या संदेश देना चाहता है, अपने शब्दों में लिखिए।

३) 'रात किसी का घर नहीं' कविता सारांश अपने शब्दों में लिखिए।

५ .७ लघुत्तरी प्रश्न

'थोड़े से बच्चे और बाकी बच्चे' कविता

१) 'थोड़े से बच्चे और बाकी बच्चे' कविता के कवि कौन है?

उ. चन्द्रकान्त देवताले।

२) चन्द्रकान्त देवताले का जन्म किस वर्ष में हुआ था?

उ. ०७ नवम्बर १९३६ में।

३) असंख्य बच्चें गलियों में क्या बीन रहे हैं?

उ. अपना भविष्य बीन रहे है।

४) कविता में एक मेज के सामने कितने बच्चें है?

उ. एक मेज सामने सिर्फ छह बच्चें है।

५) कविता में सौ बच्चों के लिए कितने कटोरदान है?

उ. एक कटोरदान है।

६) कविता में एक आकर्षक स्कूल कितने बच्चों के लिए है?

उ. कुछ बच्चों के लिए।

७) कविता के अनुसार यदि ईश्वर होता तो बच्चों की दुर्दशा देखकर उसकी शरीर में क्या होता जाता?

उ. कोढ़।

८) कविता में आइस्क्रीम खाते कितने बच्चों की तस्वीर अखबार में छपी है?

उ. तीन बच्चों की।

९) कौन नदी, तालाब, कुआँ, घासलेट, माचिस, फन्दा ढूँढ़ रहा है?

उ. गरीब घरों की लड़ किया।

१०) किनके घरों लड़कियाँ अंधेरे में दुबक रही हैं?

उ. गरीब घरों की लड़कियाँ।

'सिलसिला' कविता

१) 'सिलसिला' कविता के रचनाकार कौन है?

उ. धूमिल

२) धूमिल का पुरा नाम क्या है?

उ. सुदामा पाण्डेय धूमिल।

३) सुदामा पाण्डेय धूमिल का जन्म कब और कहाँ हुआ था?

उ. धूमिल का जन्म बनारस में सन १९३६ में हुआ था।

४) 'सिलसिला' कविता में 'हरियाली' शब्द का संबोधन किसके लिए किया गया है?

उ. पूँजीवादी सभ्यता को।

५) 'सिलसिला' कविता कवि पेड़ो की जड़ कहाँ निकलने की बात करता है?

उ. जमीन के बाहर निकलने की बात करता है।

६) 'सिलसिला' कविता में किसकी गवाही से मजदूर लोगों दरवाजे - मेज पर अपना हक जमा सकेंगे?

उ. रूखानी की मामूली सी गवाही पर।

७) 'सिलसिला' कविता मजदूरों - गरीबों के पास किसके सिवा खोने को कुछ नहीं है?

उ. जंजीरों के सिवा।

८) 'सिलसिला' कविता में मजदूरों और गरीबों को किसपर हमला करने को कहता है?

उ. हरियाली पर अर्थात पूँजीवादी सभ्यता पर।

९) 'सिलसिला' कविता में धमाका किसका इन्तजाम कर रहा है?

उ. एक हल्की-सी खाड़ का यानी कि एक जुट होकर प्रयास करने का।

१०) कठु आए हुए चेहरे को रौनक वापर लाने के क्या करने की बात कवि कहता है?

उ. सबको एक जुट होकर पूँजीवादी सभ्यता पर हमला करने को कहता है।

'रात किसी का घर नहीं' कविता

१) 'रात किसी का घर नहीं' कविता के कवि कौन है?

उ. राजेश जोशी

२) बूढ़ा व्यक्ति पिछले कितने दिनों से कुछ नहीं खाया है?

उ. तिन दिनों से।

३) बूढ़े व्यक्ति को किसने घर से निकाल दिया है?

उ. उसके लड़कों ने।

४) बूढ़ा व्यक्ति अपनी फटी कमीज उघाडकर कवि को क्या दिखाना चाहता है?

उ. मार के निशान।

५) बूढ़ा व्यक्ति घर से क्या निर्णय लेकर निकला था?

उ. अब कभी लौटकर नहीं आयेगा।

६) बूढ़ा व्यक्ति कवि से क्या चाहता है?

उ. कवि उसके लड़को को जाकर समझाएँ।

७) बूढ़े व्यक्ति को अपने बच्चों से क्या आशा है?

उ. वे आकर उसे ले जाएगें।

८) रात किसी का क्या नहीं हो सकती है?

उ. घर

९) कवि बूढ़े व्यक्ति से क्या पूछना चाहता था, मगर नहीं पूछ पाया?

उ. कि जिस तरफ वह जा रहा है, क्या उसी तरफ उसका घर है?

१०) 'रात किसी का घर नहीं' कविता में किस समस्या को उठाया गया है?

उ. वृद्ध व्यक्तियों पर हो रहे अत्याचार और अन्याय पर उन्हें घर से निकाल दिया जाता है।

❖❖❖❖

६

काव्य सौरभ (कविता संग्रह)

चुप्पी टूटेगी (ओमप्रकाश वाल्मीकि)
बाजारे - नुमाइश में (दीक्षित दनकौरी)
बूढ़ी पृथ्वी का दुःख (निर्मला पुतुल)

इकाई की रूपरेखा :

६. ० इकाई का उद्देश्य

६. १ प्रस्तावना

६. २ चुप्पी टूटेगी (ओमप्रकाश वाल्मीकि)

६.२. १ ओमप्रकाश वाल्मीकि - कवि परिचय

६ .२. २ चुप्पी टूटेगीकविता का भावार्थ

६. २. ३ चुप्पी टूटेगी कविता संदर्भसहित स्पष्टीकरण

६.३ बाजारे - नुमाइश में (दीक्षित दनकौरी)

६.३.१ दीक्षित दनकौरी - कवि परिचय

६.३.२ बाजारे - नुमाइश में कविता का भावार्थ

६.३.३ बाजारे - नुमाइश में कविता संदर्भसहित स्पष्टीकरण

६.४ बूढ़ी पृथ्वी का दुःख (निर्मला पुतुल)

६.४.१ कवी परिचय -निर्मला पुतुल

६.४.२ बूढ़ी पृथ्वी का दुःख कविता का भावार्थ

६.४.३ 'बूढ़ी पृथ्वी का दुःख' कविता संदर्भसहित स्पष्टीकरण

६.५ सारांश

६.६ बोध प्रश्न

६.७ वस्तुनिष्ठ प्रश्न

६.० इकाई का उद्देश्य

इस इकाई में विद्यार्थी काव्य सौरभ (कविता संग्रह) की तीन कविताओं का अध्ययन करेंगे पहली कविता चुप्पी टूटेगी,दूसरी कविता बाजारे - नुमाइश में,और तीसरी कविता बूढ़ी पृथ्वी का दुःख विद्यार्थी इस इकाई के माध्यम से निम्नलिखित मुद्दों से अवगत होंगे –

* छात्र तीनों कविता के कवि का परिचय जान सकेंगे |

* छात्र तीनों कविता का भावार्थ समझ सकेंगे।

* छात्र तीनों कविता की कुछ पंक्तियों की संदर्भ सहित व्याख्या कर सकेंगे |

६ .१ प्रस्तावना

स्वातंत्र्योत्तर कविता नयी ओज और नयी दिशा की ओर ले जाने वाली कविता थी ?जो समाज में हो रहे अन्याय ,अपराध ,भेदभाव गरीबी को उजागर करने में कसर भर भी पीछे न रही | एक प्रकार से इन कविताओं ने जन जाग्रति का कार्य किया |

६. २ चुप्पी टूटेगी (ओमप्रकाश वाल्मीकि)

६.२.१ ओम प्रकाश वाल्मीकि - कवि परिचय:

ओमप्रकाश वाल्मीकि का जन्म ३० जून १९५० को ग्राम बरला, जिला मुजपांफरनगर, उत्तर प्रदेश में हुआ। उन्होंने अपनी शिक्षा अपने गाँव और देहरादून से प्राप्त की। उनका बचपन सामाजिक एवं आर्थिक कठिनाइयों से भरा हुआ था। उन्होंने एम.ए. हिन्दी साहित्य से पूरा किया। उनका आरंभिक एवं शैक्षणिक जीवन आर्थिक, सामाजिक एवं मानसिक कष्ट एवं उत्पीड़न भरा था। वाल्मीकि जब कुछ समय तक महाराष्ट्र में रहे। वहाँ के दलित लेखकों के सम्पर्क में आए और उनकी प्रेरणा से डॉ. भीमराव अंबेडकर की रचनाओंका अध्ययन किया। इससे उनकी रचना-दृष्टि में बुनियादी परिवर्तन आया। वे देहरादून स्थित आर्डिनेंस फैक्टरी में एक अधिकारी के रूप में काम करते हुए अपने पद से सेवानिवृत्त हो गये।

हिन्दी में दलित साहित्य के विकास में वाल्मीकि जी की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही। उनकी मान्यतानुसार दलित ही दलित की पीड़ा को बेहतर ढंग से समज सकता है और वही सच्चे अनुभव की प्रामाणिक, अभिव्यक्ति कर सकता है। उन्होंने सृजनात्मक साहित्य को साथ-साथ आलोचनात्मक लेखन भी किया है। उनकी भाव, सरल, सहज, तथ्यपूर्ण और आवेगमयी है। अपनी आत्मकथा 'जूठन' के कारण उन्हें हिन्दी साहित्य में पहचान और प्रतिष्ठा मिली। इस आत्मकथा से पता चलता है कि किस वीभत्स उत्पीड़न के बीच एक दलित रचनाकार की चेतना का निर्माण और विकास होता है।

प्रकाशित रचनाएँ :

'सवियों का संताप', 'बरस! बहुत हो चुका', 'अब और नहीं', 'शब्द झूठ नहीं बोलते' आदि इनके प्रमुख कविता संग्रह है। 'सलाम', 'घुसपैठिये' अम्मा एंड अदर स्टोरीज, 'छतरी', आदि कहानी संग्रह है। इनकी प्रसिद्ध आत्मकथा जूठन है, जिसका अनेक भाषाओंमें अनुवाद हो चुका है। 'सफाई देवता', 'दलित'।

साहित्य : अनुभव, संघर्ष एवं यथार्थ, मुख्यदारा और दलित साहित्य इनकी प्रमुख आलोचनाएँ है। वाल्मीकि ने कई अन्य भाषाओंके साहित्य की हिन्दी में अनुवाद भी किया था।

सम्मान : वाल्मीकि जी १९९३ में डॉ. अंबेडकर राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया जाता है। उनहे परिवेश सम्मान, जयश्री सम्मान, कथाकम सम्मान, साहित्य भूषण सम्मान, ८ वाँ विश्व हिन्दी सम्मेलन २००६ न्यूयॉर्क आदि सम्मानों से अलंकृत किया गया है। इनका निधन १७ नवंबर २०१३ में हुआ।

६.२.२ कविता का भावार्थ:

ओमप्रकाश वाल्मीकि दलित चेतना के कवि थे। इस कविता के माध्यम से कवि ने दलित उत्पीड़न के खिलाफ लोगों को एकजुट होने का अहवान करता है। कवि सदियों से समाज में फैली भेदभाव का विरोध करता है। वह दलित समाज को अपनी चुप्पी तोड़कर सवर्ण जातियों का मुकाबला करने को कहता है। कवि कहता है कि यदि इसी प्रकार से अत्याचार, अन्याय सहते रहते रहोगे तो हमेशा की तरह मारे जाते रहोगे। कवि कहता है जो तुम्हारे उत्पीड़क, शोषक है, तो तुम्हें हर जगह मिलेंगे। वे तुम्हारे जाने-पहचाने होगे, लेकिन तुम्ह उन्हें पहचान नही पाओगे। तो अपना रूप बदल-बदल कर तुम्हे मारते रहेंगे। उनके पास तमचे, बन्दुकें, लाठी, डंडा, हथगाले सब होगें। साथ ही उनके साथ पुलिस, सेना और शक्ति भी होगी और तुम निहत्थे रहोगे। यदि भागने की कोशिश भी करोगे तो भी पकड़े जाओगे और मार पड़ना निश्चित है।

कवि दलित वर्ग को आहवान करते हुए कहता है कि मार तो तुम्हे पड़नेवाली ही है तो क्यों न एकजुट हो उत्पीड़न और अत्याचार के खिलाफ अपनी चुप्पी तोड़ते हो। यहीं चुप्पी कहता है कि अपनी आनेवाली पिढीयो के उज्वल भविष्य के लिए तुम्हें संघर्ष करना होगा, अपनी सदियों से चली आ रही चुप्पी को तोड़ना होगा, विरोध करना होगा। तुमहारे साहस कहानियाँ आनेवाली पिढीयाँ अपने बड़ो से सुनकर गर्वित होगे।

६.२.३ संदर्भसहित स्पष्टीकरण:

बचा सकते हो तो कोशिश करो

बचाने भी उन्हें

जो अभी जन्मे भी नहीं है

डरी, सहजी हवाओंके सीने पर

उनके लिए

जिन्हें अभी जन्म लेना है।

संदर्भ : प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारे पाठ्य पुस्तक काव्य सौरभ के 'चुप्पी टुटेगी' नामक कविता से ली गई है। इसके कवि ओमप्रकाश वाल्मीकि है।

प्रसंग : इस कविता में कवि सदियों से चली आ रही जातिगत भेदभाव के खिलाफ एकजुट होकर आवाज उठाने का आहवान करता है।

व्याख्या : प्रस्तुत कविता में कवि दलित समाज पर हो रहे अत्याचारों का मुख्य कारण उनका चुप्पी को बताया है। भाव दलित समाज के उत्पीड़क शासक समाज के खिलाफ अपनी आवाज बुलंद करने को कहता है। कवि कहता है आज आपके द्वारा किया गया त्याग व संघर्ष आनेवाली पिढीयों के लिए वरदान सिद्ध होगा। अभी समय है आपके कोशिश से आनेवाली पीढ़ी का भविष्य अच्छा होगा। तुम्हारे विरोध, त्याग, बलिदान की कहानियाँ वो अपने बड़े-बुढ़ो से सुनकर तुम्हारे ऊपर गर्व करेंगे। अब आप सबके एकजुट होकर संघर्ष करना होगा, अपनी खामोशी तोड़नी होगी।

विशेष :

१) भाषा सरल, सहज, तथ्यपुर्ण और अविगमयी है।

२) दलित समाज के शोषण की दारुण वर्णन है।

३) कवि दलितों को एकजुट होने का आहवान करता है।

६. ३ बाजारे - नुमाइश में (दीक्षित दनकौरी)

६.३.१ दीक्षित दनकौरी - कवि परिचय :

दीक्षित दनकौरी का जन्म 04 सितम्बर 1956 की उत्तर प्रदेश के अमरोहा में हुआ था | इनका मूल नाम भुवनेश्वर प्रसाद दीक्षित है | उन्होंने एम. ए. दर्शन शास्त्र से तथा योग में डिप्लोमा किया है | दनकौरी जी एक बेहद मजे हुए शायर है | दनकौरी जी का वर्तमान आवास दिल्ली में है | दिल्ली में अध्यापक हैं और देश - विदेश के मुशयरों में शिरकत करते रहते हैं |

इनकी प्रकाशित पुस्तकों में 'डूबते वक्त''गजल दुष्यंत के बाद' (उखंड), हिन्दी गजल यानी' (गजल - संकलन), गजल के साधक दीक्षित दनकौरी (सं. सतेत्व सिंह) प्रमुख है |

६.३.२ कविता का भावार्थ :

प्रस्तुत रचना में उर्दू की लोकप्रिय विधा गजल की शैली में लिखी 5 शोर है , जो अलग अलग बिम्बों के माध्यम से एक व्यक्ति की विडम्बना का बयान करती है, पहले शेर में एक व्यक्ति इस उलझन में नजर आता है | की आज के समय में वह सब कैसे संभाल लगता है | वह एक साथ अपना चरित्र , घट बार और अपना प्यार कैसे संभाले | वह कहता है कि बाजार की गहमागहमी में मेरे लिए अपने प्रत्येक अस्तित्व के पहलू की संभालना कठिन लग लग रहा है | दूसरे शोर में वह विकास के चकाचौध में उसे अपने स्वाभिमान बचाना मुश्किल लग रहा है | वह कहता है कि तेजी से भागते हुए इस वक्त में सबसे मुश्किल उसे अपने मान - सम्मान को बचना लग रहा है | कवि को यह समय बड़ा मुश्किल भरा लग रहा है | कवि को यह समय बड़ा मुश्किल भर लग रहा है | एक तरफ उसे लोगो के जमाने के रफ्तार के साथ चलना भी है तो दुसरी तरफ अपनी प्रतिष्ठा भी बनाये रखनी है |

कवि तिसरे शेर में उसे वर्तमान समय में जाब पूरी सभ्यता - संस्कृति छिन्न-भिन्न नजर आ रही है, तो वह समझ नहीं पाता है कि वह संस्कृति की बुनियाद संभाले या दीवार को | यहाँ तो पूरी नींव ही हिल रही है | चाथे शेर में वह अपने ऊपर सौपी गई नयी चुनौतियों को बताता है कि वह दरबार संभाले या सरकार को | यह जिम्मेदारी का काँटे भरा ताज उसे पहना तो दिया जाता है, मगर वह समय नहीं पाता है कि अपने साथ काम करनेवाले लोगों का साथ दे या नीति निर्धारक लोगों का | कवि अपने पाँचवे शेर में संसार में फैले चारों तरफ अविश्वास के कारण यह नहीं समझ पाता है की आखिर विश्वास किस पर किया जाय | ऐसी स्थिति में वह अपने ऊपर भरोसा करना ही उचित समझता है |

६.३.३ संदर्भसहित स्पष्टीकरण:

कश्ती का भरोसा है, न मांझी पे यकीन अब, फिर क्यों न उठूँ खुद ही, मैं पतवार सँभालू |

संदर्भ :- प्रस्तुत पंक्तियों हमारे पाठ्य पुस्तक 'काव्य - सौरभ के बाजारे - नुमाइश में' नामक कविता से ली गई है | इसके रचनाकार दीक्षित दनकौरी है |

प्रसंग :- इस कविता के माध्यम से कवि आज के समय में चारों तरफ फैले अविश्वास पर चर्चा की है | किसपर विश्वास करना है यह समझ में नहीं आग है |

व्याख्या :- प्रस्तुत शेर के माध्यम से कवि संसार में चारों तरफ बढ़ते अविश्वास को देखकर यह नहीं समझ पाता है कि वह किस पर भरोसा करें, किस पर नहीं | वह एक उदाहरण के माध्यम से समझाने की कोशिश करता है कि आज के समयमें न तो कश्ती पर भरोसा रहा, नहीं मांझी पर विश्वास है, ऐसी स्थिति में खुद ही अपनी कश्ती को आगे बढ़ाने के लिए पतवार संभालने की जरुरत है अर्थात अब किसी का भरोसा नहीं रहा |

विशेष :-

(१) भाषा सरल, सहज और उर्दू मिश्रित है |

(२) संसार में फैले अविश्वास के बारे में बताया गया |

(३) गजल विधा के शेर में रची गई हैं |

६. ४ बूढ़ी पृथ्वी का दुःख (निर्मला पुतुल)

६.४.१ निर्मला पुतुल - कवयित्री का परिचय:

निर्मला पुतुल का जन्म 06 मार्च 1972 को दुधानी कुरुवा, दुमका (झारखण्ड) में हुआ था | निर्मला जी कों पंजाबी, अंग्रेजी, मराठी, उर्दू के अलावा अन्य भारतीय भाषाओं का भी ज्ञान है | उनकी कहानो और कविताएँ बहुचर्चित रही हैं | विगत कई वर्षो से शिक्षा, सामाजिक विकास, मानवाधिकार और आदिवासी महिलाओं के समग्र उत्थान के लिए सक्रिय है | आदिवासी, महिला, शिक्षा और साहित्यिक विषयों पर आयोजित सम्मेलनों, आयोजनों में अपनी बात बड़े मुखर तरीके से रखती है | वह हमेशा ही ग्रामीण, पिछड़ी, दलित, आदिवासी, आदिम जूनजातीय महिलाओं के बीच शिक्षा, सामाजिक चेतना एवँ जागरुकता के लिए लगातार प्रयास करती रहती है |

इनके साहित्यिक रचनाओं के लिए उन्हें साहित्य अकादमी, नई दिल्ली द्वारा 'साहित्य सम्मान' 2001से सम्मानित किया गया, सन 2006 में झारखण्ड सरकार द्वारा 'राजकीय सम्मान से सम्मानित किया गया | सन 2008 में महाराष्ट्र राज्य हिन्दी साहित्य अकादमी द्वारा सम्मानित किया गया | उनके जीवन पर आधारित 'बुरु - गारा' नामक फिल्म बनी, जिसे 2010 में राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार प्राप्त हुआ |

इनकी प्रकाशित रचनाएँ है - 'नगाड़े की तरह बजते शब्द' ; अपने घर की तलाश में, ओनोड़हे, 'फूटेगा एक नया विद्रोह |

६.४.२ कविता का भावार्थ :

प्रस्तुत कविता में कवयित्री ने बूढ़ी पृथ्वी का मानवीकरण करते हुए उसके दुखों को मनुष्य के सामने बड़े ही मार्मिक तरीके से रखा है | पृथ्वी मनुष्य जाति से पुछती है कि क्या तुमने कभी कुल्हाड़ियों क बारे सहते पेड़ो के बचाव में हजारों टहनियों को पुकारते देखा है ? मनुष्य : कभी तुमने मंदी हो रही नदियों की रोते देखा है ? क्या कभी तुम्हें दर्द हुआ है टूटते पहाड़ो को देखकरा प्रदूषित हवा द्वारा खून की उल्टियाँ करते देखा या महसूस किया है ? यदि तुम्हे यह सब दिखाई, सुनाई या अनुभव नहीं होता है तो है मुझे तुम्हारे मनुष्य होने पर सन्दे है |

कविता के माध्यम से कवयित्री हमारा ध्यान शहरीकरण और विकास के नाम ही रहे खेतों, जंगलों, पहाड़ों और नदियो के अतिक्रमण से हुए विनाश की तरफ ळे जाना चाहती

है | कवयित्री प्राकृतिक सम्पदाओं की ओर बढ़ती आधुनिक विस्तारवादी सोच कोलेकर काफी दुखी है |

इस कविता में लगातार कुल्हाड़ियों के प्रहार से कटते जंगल पेड़, रोज प्रदूषण का शिकार होती नदियाँ, धूल - धुएँ से बीमार होती हवा, विस्फोट को चोट खाते पहाड़ की पीड़ा की तरफ मनुष्य का ध्यान पृथ्वी के माध्यम से आकर्षित करती है | इन सब के मूल में मनुष्य की विस्तारवादी महत्त्वाकांक्षा ही है | पृथ्वी का मानना है कि यदि हम इन चीजों की तरफ ध्यान नहीं देते है तो हम मनुष्य कहलाने योग्य नहीं है |

६.४.३ संदर्भसहित स्पष्टीकरण:

भागदौड़ की जिंदगी से

थोड़ा सा वक्त चुरा कर

तो क्षमा करना |

मुझे तुम्हारे आदमी होने पर सन्देह है !!!

संदर्भ : प्रस्तुत पंक्तिया हमारे पाठ्य पुस्तक 'काव्य - सौरभ' के 'बूढ़ी पृथ्वी का दुख' नामक कविता से ली गई है | इसके रचनाकार निर्मला पुतुल' है |

प्रसंग :- इस कविता के माध्यम से कवयित्री बूढ़ी पृथ्वी के दुखों को गिनाते हुए प्राकृतिक सम्पदाओं की ओर ध्यान आकर्षित करती है | इनकी रक्षा करना ही मनुष्य का कर्तव्य है |

व्याख्या :- कवियित्री संसार के आदापथों से कहती है कि जब इस भागम - भाग की जिन्दगी से समय निकालकर कभी न शिकायत करनेवाली गुमसुम बूढ़ी पृथ्वी का दुख जनाने की कोशिश की है | बूढ़ी पृथ्वी क्यों दुखी है ? बढ़ते शहरीकरण और विकास के नाम पर हो रहे खेतों, जंगलों, पहाड़ो और नदियों के अतिक्रमण की ओर तुम्हारा ध्यान गया है, पृथ्वी के दुख का मूल कारण ही मनुष्य की विस्तारवादी सोच ही है | अगर तुम्हारा ध्यान नहीं गया है तो तुम मनुष्य कहलाने योग्य नहीं हो |

६.४ सारांश

इस इकाई में हमने तीन कविताओं का अध्ययन किया है | यह कविताएँ है - चुप्पी टूटेगी ,बाजारे नुमाइश में, और बूढ़ी पृथ्वी का दुःख | हमने तीनो कविताओं के कवी का जीवन परिचय देखा ,कविता का भावार्थ समझा और कविता की कुछ पंक्तियों की संदर्भ सहित व्याख्या की आशा है विद्यार्थी उक्त सभी मुद्दों से अवगत हुए होंगे |

६.५ बोध प्रश्न

'चुप्पी टूटेगी' कविता

१) 'चुप्पी टूटेगी' कविता का केन्द्रीय भाव लिखिए।

२) 'चुप्पी टूटेगी' कविता का उद्देश्‍्य लिखिए।

३) 'चुप्पी टूटेगी' कविता के माध्यम से कवि किस प्रकार की चुप्पी तोड़ने की बात करता है और क्यों? अपने शब्दों में लिखिए।

४) 'चुप्पी टूटेगी' कविता का सारांश लिखिए।

'बाजारे - नुमाइश में' कविता

प्र. (१) 'बाजारे - नुमाइश में' कविता के माध्यम से कवि अलग - अलग शेरों के माध्यम से क्या कहना चाहता है ? अपने शब्दों में लिखिए |

प्र. (२) 'बाजारे - नुमाइश में' कविता उद्देश्य लिखिए |

'बूढ़ी पृथ्वी का दुख' कविता

(१) 'बूढ़ी पृथ्वी का दुख' कविता का सारांश लिखिए |

(२) 'बूढ़ी पृथ्वी का दुख' कविता का केन्द्रीय भाव लिखिए |

(३) 'बूढ़ी पृथ्वी दुख' कविता का उद्देश्य लिखिए |

(४) 'बूढ़ी पृथ्वी का दुख' कविता के माध्यम से कवयित्री क्या संदेश देना चाहती है | अपने शब्दों में लिखिए |

६. ६ लघुत्तरीय प्रश्न

१) 'चुप्पी टूटेगी' कविता के रचनाकार कौन है?

उ. ओम प्रकाश वाल्मीकि।

२) ओम प्रकाश वाल्मीकि किस चेतना के कवि थे?

उ. दलित चेतना के।

३) 'चुप्पी टूटेगी' कविता में कौन रास्ता रोककर खड़ी हो जाएगी?

उ. दलित समाज की चुप्पी।

४) कवि किसे अपनी चुप्पी तोड़ने को कहता है?

उ. दलित समाज को ।

५) दलित समाज के उत्पीड़क व शोषक समाज के हाथों में क्या है?

उ. तमंचा, बन्दूक, लाठा - डंडे, हथगोले आदि है।

६) कौन भेष बदलकर हर मोड़ पर मिलेंगे?

उ. उत्पीड़क व शोषक वर्ग के लोग।

७) कवि किसे बचाने की कोशिश करने को कहता है?

उ. जो अभी तक जन्मे नहीं है।

८) 'चुप्पी टूटेगी' कविता में कौन गर्वित होंगे चुप्पी तोड़ने वालों की कहानियाँ सुनकर?

उ. आनेवाली पीढ़ी के बच्चे।

९) आनेवाली पिढीयों के बच्चे किसकी कहानियाँ सुनकर गर्वित होंगे?

उ. अन्याय, अत्याचार के खिलाफ चुप्पी तोड़नेवालों की।

१०) पुलिस, सेना, शक्ति किसके साथ होगी?

उ. उत्पीड़क और शोषक समाज के साथ।

'बाजारे नुमाइश में' कविता

(१) 'बाजारे नुमाइश में' कविता के रचनाकार कौन है ?

उ. दीक्षित दनकौरी का मूल नाम क्या है ?

(२) दीक्षित दनकौरी का मूळ नाम क्या है ?

उ. भुवनेश्वर प्रसाद दीक्षित |

(३) गजलकिसकी लोकप्रिय विधा है ?

उ. उर्दू की |

(४) कवि को कैसा ताज पहना दिया जाता है ?

उ. काँटों भर ताज |

(५) कवि को किसका भरोसा और यकीन नहीं है ?

उ. कवि को कश्ती का भरोसा नहीं और मांझे पर यकीन नहीं है |

(६) कवि किसे पतवार संभालने को कहता है ?

उ. खुद को |

(१) 'बूढ़ी पृथ्वी का दुख' कविता के रचनाकार कौन है ?

उ. निर्मला पुतुल

(२) कविता में कुल्हाड़ियों के भय से कौन चीत्कार रहा है ?

उ. पेड़

(३) पेड़ के बचाव में कौन पुकार रहा है ?

उ. पेड़ की टहनियाँ |

(४) कविता में मौन समाधि लगाकर कौन कर रहा है ?

उ. पहाड़ |

(५) कविता में खून की उल्टियाँ कौन कर रहा है ?

उ. हवा |

(६) कविता में किसे थोड़ा सा व्यक्त निकलकर बूढ़ी पृथ्वी का दुख जानने को कहा गया है ?

उ. मनुष्य को |

(७) कविता में कौन कभी शिकायत नहीं करता है |

उ. बूढ़ी पृथ्वी |

(८) 'बूढ़ी पृथ्वी का दुख' कविता किस विषय पर आधारित है ?

उ. पर्यावरण पर बढ़ते खतरे पर |

(९) किसका मानना है कि यदि हम पृथ्वी के दुख को नहीं समझते है तो आदमी होने पर संदेह है ?

उ. कवियित्री का |

(१०) रात सन्नाटे में मुँह ढ़ाँपकर कौन रोता है ?

उ. नदियाँ |

❖❖❖❖

७

हिंदी निबंध का क्रमिक विकास

इकाई की रूपरेखा :

७.० इकाई का उद्देश्य

७.१ प्रस्तावना

७.२ हिंदी निबंध विधा का अर्थ और परिभाषा

७.३ हिंदी निबंध विधा का विकास

७.३.१ भारतेन्दु युग

७.३.२ द्विवेदीयुग

७.३.३ शुक्ल युग

७.३.४ शुक्लोत्तर युग

७.४ ललित निबंध

७.५ सारांश

७.६ बोध प्रश्न

७.७ लघूत्तरीय प्रश्न

७.८ संदर्भ ग्रंथ

७.० इकाई का उद्देश्य

हिंदी साहित्य का इतिहास में आधुनिक युग के समग्र अध्ययन के अंतर्गत निबंध विद्या का विकास विषय पर अध्ययन कर रहे हैं-इस इकाई के अध्ययन से विद्यार्थी

निबंध का शाब्दिक अर्थ और परिभाषा का अध्ययन कर सकेंगे।

निबंध विद्या के आरंभ और विकास क्रम को जान सकेंगे।

विभिन्न निबन्धकार उनके द्वारा लिखित निबंध की विशेषताओं से अवगत होंगे।

७.१ प्रस्तावना

हिंदी निबंध विद्या का विकास आधुनिक युग में हुआ निबंध के विकास में पत्र पत्रिकाओं का माध्यम सर्वोपरि रहा तत्कालीन समय की सामाजिक ,राजकीय ,धार्मिक ,संस्कृति क्षेत्र में चल रही उथल-पुथल का गहन विश्लेषण निबंध के माध्यम से भी हुआ। निबंध में भी कई प्रकारों का आरंम्भ हुआ जैसे ललित निबंध, व्यंग्य निबंध, वैचारिक निबंध आदि की विशेषताएं हर एक युग में भिन्न रही और शैली व भाषायी दृष्टि से उन्नत होती रही इसी विकास क्रम का अध्ययन हम इस इकाई के द्वारा करेंगे।

७.२ हिंदी निबंध विधा का अर्थ और परिभाषा

निबंध गद्य साहित्य की अनुपम विधा मानी जाती है। निबंध का शाब्दिक अर्थ है बांधना लेकिन समय की बहती धारा में दीर्घ कालांतर पश्चात यह शब्द केवल साहित्य विधा के प्रयोग तक ही सीमित रह गया। निबंध आकार में लघु संगठित और समास शैली में लिखा जाता है। निबंध विधा का उद्भव आधुनिक युग में हुआ यह गद्य साहित्य की प्रमुख विधा मानी जाती है आचार्य रामचंद्र शुक्ल जी के मत से अब निबंध विधा के महत्व का अनुमान लगाया जा सकता है उन्होंने निबंध के महत्व को इस प्रकार शब्द बद्ध किया है- "यदि गद्य कवियों या लेखकों की कसौटी है तो निबंध तो गद्य की कसोटी है। "निबंध विधा मे व्यक्ति किसी विषय पर अपने वैयक्तिक विचार दृष्टिकोण स्वयं के तर्क और आपसी संवादो को प्रभावी ढंग से अपनी लेखन कुशलता से पाठक के मन को प्रभावित कर सकता है।

निबंध की परिभाषा:- निबंध साहित्य को कई भारतीय और पाश्चात्य साहित्यकारों ने शब्द बद्ध किया है। अंग्रेजी विद्वान डॉ. शो सैम्युअल जान्सन ने इस प्रकार निबंध को परिभाषित किया है "निबंध मस्तिष्क का के असंबद्ध विचारों का विस्फोटन है।"

मोंटेग्यू जिन्हें निबंधो का जनक माना जाता है उन्हेने निबंधो को विचारों उद्धरणों और कथाओं का मिश्रण मानते हैं।

ऑक्सफोर्ड शब्दकोश में लिखा गया है निबंध की आकृति सीमित और परिष्कृत होती है।

प्रमुख भारतीय विद्वानों द्वारा दी गई निबंध की परिभाषा-

१) आचार्य रामचंद्र शुक्ल जी ने निबंध की जो महत्ता दर्शाई है उसका विवरण हम दे चुके हैं इसके अतिरिक्त शुक्लजी कहते हैं-"आधुनिक पाश्चात्य लक्षणों के अनुसार निबंध इसी को कहना चाहिए जिसमें व्यक्तित्व अर्थात व्यक्तिगत विशेषता हो।

२) बाबू गुलाब राय :-

"निबंध उस गद्य रचना को कहते हैं जिसमें एक सीमित आकार के भीतर किसी विषय का वर्णन या प्रतिपादन एक विशेष निजीपन, स्वच्छंदता, सौष्ठव और सजीवता साथ ही आवश्यक संगति और सुसंबद्धता के साथ किया गया हो

३) डॉ. भागीरथ मिश्र:-

"निबंध वह गद्य रचना है जिसमें लेखक किसी विषय पर स्वच्छंदता पूर्वक परंतु एक विशेष सौष्ठव,संहिति, संजीवता और व्यक्तिगत प्रकाशन के साथ भाव विचारों और अनुभव को व्यक्त करता है।"

उपर्यृक्त परिभाषाओं के अध्ययन के आधार पर हम कह सकते हैं कि निबंध निबंधकार के विचारों की सुव्यवस्थित और सुगठित अभिव्यक्ति है विषय साहित्यकार के मनोविश्लेषण से तय होता है कोई भी विषय लेकर साहित्यकार निबंध रचना कर सकता है। आचार्यशुक्ल निबंध में विचार गांभीर्य एवं सामाजिकता को महत्वपूर्ण मानते हैं। डॉ. गुलाबरायजी निबंध में समग्र लक्षणिय तत्वों का समावेश आवश्यक मानते हैं। भागीरथ मिश्र जी निबंध में सजीवता के साथ विचारों और भावों की अभिव्यक्ति को आवश्यक समझते हैं। इन सभी परिभाषाओं से निबंध विधा का विवरण स्पष्ट हो जाता है।

७.३ हिंदी निबंध विधा का विकास

आधुनिक युग में नवजागरण की चेतना के साथ हिंदी निबंध का विधा का आरंभ हुआ। इस युग में मानव की मानसिकता बदल रही थी तकनीकि क्षेत्र का प्रारंभ हो वह विकास की ओर अग्रसर था। मुद्रण यंत्र के आरंभ से साहित्यिक जगत को एक नई दिशा मिली। जीवन की वास्तविकता प्रत्येक क्षेत्र की संस्कृति सभ्यता से समाज का हर एक व्यक्ति भली-भांति परिचित हो सका। मानव की इसी चेतना से साहित्य में भी परिवर्तन हुआ साहित्य का आकार पहले ही अपरिसिमित होता है लेकिन समय के साथ साहित्य वृहताकार हो गया। गद्य के क्षेत्र में कई विधाओं का निर्माण हुआ जिसमें साहित्यकारों के साथ-साथ पाठकों की जिज्ञासा भी बढ़ी है और साहित्य प्रेमीयों को विविध प्रकार के साहित्य पढ़ने से साहित्य के प्रति उनका प्रेम प्रगाढ़ हो रहा है।

निबंध विधा का विकास भी इन्हीं सब वास्तविकताओं के कारण हुआ। निबंध विधा गद्य साहित्य की महत्वपूर्ण विधा मानी जाती है। साहित्य और अध्ययन क्षेत्र में पहली कक्षा से ही विद्यार्थी निबंध विधा से अवगत हो जाते है इसी से इस विधा की प्रशस्ति का अनुमान हम लगा सकते हैं। तत्कालीन साहित्यकारों और साहित्यलोचकों ने अध्ययन और चिंतन की सुलभता की दृष्टि से निबंध विधा को चार युगों में विभाजित किया है। निबंध विधा का संपूर्ण अध्ययन हम इस यूग के प्रदीर्ध अध्ययन द्वारा करेंगे।

१) भारतेंदु युग(सन्१८५७-१९००) हिंदी निबंध का अभ्युत्थान

२) द्विवेदी युग (सन्१९००-१९२०) हिंदी निबंध का परिमार्जन

३) शुक्ल युग(सन् १९२०-१९४०) हिंदी निबंध का उत्कर्ष

४) शुक्लोत्तर युग (सन् १९४०से अब तक) हिंदी निबंध का प्रसरण

७.३.१ भारतेंदु यूग:

भारतेंदु युग का उदय राष्ट्रीय जागरण और राजनीतिक चेतना का काल था। इस काल में संस्कृतिक चेतना का समग्र विकास ही साहित्यकारों का अभीष्ट था। कालानुरुप शिक्षा का प्रचार प्रसार भारतीय रूढ़ी - परंपराओं पर प्रहार करने के साथ-साथ देश में बढ़ रही पश्चिमी संस्कृति पर व्यंग्य करना भी इस काल की प्रमुख विशेषता रही। इन सभी सामाजिक दायित्व को पूर्ण करने का दायित्व निबंधकारों ने निभाया। इस युग के निबंधों में विषयों की व्यापकता देखने को मिलती है। इस युग में कई साहित्यकार संम्पादक और लेखक हुए जिन्होंने पत्र-पत्रिकाओं में सामाजिक विषयों सामाजिक आंदोलनों और अनेक प्रकार के विषयों की चर्चा निबंधों के माध्यम से की। यह युग निबंध का प्रारंभ काल होने के कारण भाषा और शैलीगत दृष्टि से एकरूपता नहीं थी इस क्षेत्र में वैयक्तिक प्रयोग के आधार पर ही निबंध लेखन होता रहा। इस काल में बहुत मात्रा में निबंध लिखे गए इस युग में निबंध विधा प्रमुख विधा बन गई।

भारतेन्दु युग में पत्रिकाओं के माध्यम से समाज में व्याप्त हर क्षेत्र के स्थानीय वार्ता की जानकारी मिल जाती थी। भारतेंन्दु युग में विदेशी शासन के प्रति अधिक स्तर पर आंदोलन की शुरुआत नहीं हुई थी। इसलिए लेखको ने यदा-कदा अंग्रेजी शासन का गुणगान भी कर दिया है लेकिन देश हित की भावना हमेशा से ही साहित्यकारों की भूल भावना रही है और यह भावना तत्कालीन समय के निबंधों में भी दृष्टिगोचर होती है। जैसे - समाज सुधार, राष्ट्रप्रेम, राष्ट्र विकास की भावना, विदेशी शासन के प्रति आक्रोश और कई विषयों पर इस काल में निबंध लिखे गए। भारतेंदु यूग के लेखकों ने गंभीर विषयों को भी हास्य मय या एक व्यंग्य स्वरूप देते हुए निबंधों की रचना की उनकी यह शैली मनोविनोदी और चिकोटी भरी थी। कुछ निबंध के विषय लेखकों की विनोदवृत्ति को दर्शाती है। जैसे ऑख, नाक, भौं आदि वहीं कुछ निबंध मानव जीवन शैली को भी व्यक्त करते हैं जैसे बुढ़ापा धोखा आदि। इस युग के प्रमुख निबंधकार है भारतेंदु, बालकृष्ण भट्ट, प्रताप नारायण मिश्र, बद्रीनारायण चौधरी, प्रेमधन ,ज्वाला प्रसाद, तोताराम, अंन्विकादत्त व्यास, रामचरण गोस्वामी आदि।

भारतेन्दु हरिश्चंद्र :

भारतेन्दु हरिश्चंद्र हिन्दी के प्रथम निबंधकार माने जाते है। बहुमुखी प्रतिभा संपन्न साहित्यकार भारतेन्दुजी ने कविता, नाटक के अतिरिक्त निबंध बहुत मात्रा में लिखे उनके द्वारा लिखित निबंधों में ऐतिहासिक, सामाजिक, राजनीतिक, आलोचनात्मक, व्यंग्य आत्मचरित, प्रकृति वर्णन, यात्रा वर्णन, धर्म, भाषा आदि विषयों पर निबंध लिखे।

भारतेन्दुजी सर्वतोन्मुखी प्रतिभासंपन्न साहित्यकार थे। उनके साहित्य में विषयों का विस्तृत अध्ययन और विविध विषयों पर विश्लेषण हम देख सकते है। उनके निबंधों में सामाजिक विषय में इतिहास, धर्म, संस्कृति की मूलभूत जानकारी हमें मिल जाती है जैसे "अंग्रेजों से हिंदुस्तानियों का जी क्यों नही मिलता" वहीं कुछ निबंध राष्ट्र भक्ति की भावना व्यक्त करते है। ' भारतवर्ष की उन्नति कैसे हो सकती है', "लेवी प्राण लेवी", भावनात्मक निबंधों में 'सूर्योदय', 'समर्पण', 'ईश्वर बडा विलक्षण है' आदि निबंध आते है। पुरातत्व संबंधी निबंधों में 'रामायण का समय', 'काशी', मणिकर्णिका' आदि निबंध प्रमुख है।

यात्रा – वर्णन पर लिखे गये निबंधों में इतिहास संबंधी निबंधों में प्रमुख है' 'काश्मीर-कुसुम', 'बादशाह- दर्पण', 'अकबर और औरंगजेब', 'उदय- पुरोदय' आदि। जीवन चरित्र संबंधी प्रमुख निबंध है 'सूरदास जी का जीवन चरित्र', 'बीबी फातिमा', 'श्री जयराम शास्त्री का जीवन चरित्र' आदि इन निबंधों में भावुकता और कल्पना की प्रधानता है। कला संबंधी निबंधों में 'संगीत- सार', जातीय संगीत तथा' हिंदी भाषा' विशेष रूप से उल्लेखनीय है। प्रकृति वर्णन से जुड़े हुए विभिन्न विषयों पर भारतेंदु जी ने निबंध लिखे हैं जैसे- 'बसंत', 'वर्षा' 'काल', 'लखनौ', 'हरिद्वार', 'ग्रीष्म ऋतु' आदि। भारतेंदुजी की अपनी विशिष्ट शैली प्रमुख रूप से हास्य व्यंग्य प्रधान थी। इस शैली में ' 'ईश्वर बड़ा विलक्षण है', 'सच मत बोलो', उर्दु का स्थापा आदि निबंध प्रमुख है। 'विचार सभा का अधिवेशन', 'पांचवें पैगंबर', 'कानून ताजीरात शौहर', ज्ञात विवेकिनी सभा. अंग्रेजी स्त्रोत, 'कंकड़ स्त्रोत' जैसे निबंधों से भारतेंदुजी की राजनैतिक चेतना का असर निबंध पर दिखाई देता है।

इस प्रकार भारतेंदु जी के निबंधों के समग्र अध्ययन से उनके व्याख्यात्मक और विचारात्मक शैली का ज्ञान हमें होता है। इसी शैली के माध्यम से उन्होंने व्यंग्यात्मक शैली की प्रधानता साहित्य में दर्शायी है। भाषायी दृष्टि से भारतेंदु जी के साहित्य का अध्ययन करें तो भाषागत दृष्टि से यथार्थवादी दृष्टिकोण उन्होंने अपनाया है। उन्होंने किसी एक भाषा का पूर्ण रूप से अनुसरण नहीं किया न अरबी- फारसी मिश्रित हिंदी का पक्ष लिया, न संस्कृत निष्ठ हिंदी का उनका उद्देश्य था। सरल- सजीव और जनप्रिय भाषा का प्रयोग जो पाठक को सीधे समझ आ सके उन्होंने संस्कृत निष्ठ भाषा व तत्सम शब्दों का प्रयोग किया है लेकिन भाषा के सहज रूप में क्लिष्ठता कहीं भी नजर नहीं आती। तत्कालीन समय में कानून की भाषा उर्दु निष्ठ थी इसीलिए राजनीतिक चेतना संबंधी निबंधों में उन्होंने उर्दु निष्ठ भाषा का प्रयोग किया है।

बाल कृष्ण भट्ट :-

बाल कृष्ण भट्ट भारतेंदु युग के निबंध विधा के प्रमुख लेखक माने जाते हैं। इन्होंने ७०० के आस-पास निबंध लिखे हैं। ये स्वतंत्रता प्रेमी और प्रगतिशील विचारों के निबंधकार है। इन्होंने समाज, सहित्य, धर्म, संस्कति, रीति-नीति, प्रथा, भावना, कला, कल्पना आदि सभी विषयों से निबंध विधा को सँवारा है इसीलिए इन्हें विचार प्रधान निबंधकार माना जाता है। हास्य विनोद विषय पर भी इनकी लेखनी ने अभूतपूर्व कार्य

किया इनके द्वारा किया गया विषय का गंभीर अध्ययन और विचार- प्रधानता के कारण निबंधों में सभी क्षेत्रों का चयन हो सका। विचारात्मक निबंधों के अतिरिक्त भावात्मक, कथात्मक और वर्णनात्मक निबंध भी लिखे हैं- भावना प्रधान निबंधों में ' चंद्रोदय' निबंध प्रख्यात है। वर्णनात्मक निबंधों में 'संसार- महा नाट्यशाला' और ' प्रेम के बाग का सैलानी' निबंध प्रमुख माने जाते हैं। कथात्मक निबंधों में ' एक अनोखा स्वप्न' निबंध मिलता है। व्यवहारिक जीवन से संबंधित निबंधों में 'माता का स्नेह', 'आँसू', `लक्ष्मी', 'कालचक्र का चक्कर' आदि निबंध आते हैं।

साहित्य विषयों से संबंधित निबंधों में 'साहित्य जन समूह के हृदय का विकास है', शब्द की आकर्षण शक्ति प्रतिभा,' माधुर्य', साहित्य का सभ्यता से घनिष्ठ संबंध आदि है।

हृदय की वृत्तियों या मनो विकारों को भी विषय गत दृष्टि से निबंधों में सम्मिलित कर - ' आशा, आत्म गौरव, 'रुचि', 'भिक्षावृत्ति', 'विश्वास', 'बोध' आदि निबंध लिखे हैं। वहीं सामान्य विषयों पर भी लिखे निबंधों में 'आंख', 'कान', 'नाक', 'बातचीत' आदि निबंध प्रमुख है। हास्य व्यंग्य विनोद परक निबंध में 'इंग्लिश पढ़े सौ बाबू होय', 'दंभाख्यान', 'अकिल अजीरन रोग' जैसे निबंध प्रमुख है। सामाजिक समस्याओं की दृष्टि से लिखे गए निबंधों में 'बाल विवाह', 'स्त्रियाँ और उनकी शिक्षा', 'महिला स्वातंत्र्य' आदि निबंध है। बालकृष्ण भट्ट के निबंधों में प्रायः बोलचाल में प्रयोग में लायी आने वाली हिंदी का प्रयोग हुआ है। वैसे बालकृष्ण जी संस्कृत भाषा के प्रगाढ पंडित थे। उनके निबंधों में हिंदी, संस्कृत के अलावा अंग्रेजी और उर्दु भाषा के शब्दों का काफी प्रयोग हुआ है। भट्ट जी की भाषा में अलंकार का प्रमुख आकर्षण मिलता है और इनके निबंधों के शीर्षक प्रायः कहावत और मुहावरों से मिलते जुलते हमें दिखाई देते हैं। उनका शब्द चयन बहुत रोचक पूर्ण है. निबंध रचना के माध्यम से नये भाषा रचना का प्रारूप तैयार करने की कोशिश भट्ट जी ने की है।

प्रताप नारायण मिश्र:

भारतेंदु युग के बालकृष्ण भट्ट के पश्चात प्रमुख निबंधकार प्रताप नारायण मिश्र माने जाते हैं। आपने निबंध को माध्यम बनाकर सामाजिक जनजागृति से जोड़ने का कार्य किया। इन्हें आत्मव्यंजक निबंधकार माना जाता है इसमें गंभीरता और चुलबुले पन इस प्रकार दो भावों का समावेश मिलता है।

'धोखा', 'वृद्ध', 'खुशामद', 'दांत',' बालक' आदि में चुलबुलापन है वही 'आप', 'बात', 'मां', 'नारी' आदि गंभीर श्रेणी के निबंध है।

इनके निबंधों में तीखी व्यंग्य वृत्ति का उल्लेख स्वयं आचार्य रामचंद्र शुक्ल जी ने भी किया है। इनकी भाषा में व्यंग्यपूर्ण पूर्ण वक्रता के साथ लोकोक्तियां मुहावरों का भी प्रयोग मिलता है। ये निबंधकार होने के साथ-साथ पत्रकार भी थे इसीलिए सामान्य विषयों से साक्षात्कार कर उन्हें भी निबंधों से जोड़कर रोचक और वैचारिक बना दिया। 'ईश्वर की मूर्ति' निबंध नास्तिक निबंध भाव का निबंध है 'लोक लज्जा' भावनात्मक और 'धरती माता' वर्णनात्मक श्रेणी के निबंधों में उल्लेखनीय है।

बालमुकुंद गुप्त:-

ये भी प्रताप नारायण मिश्र की तरह पत्रकार थे। इन्होंने 'बंगवासी' और 'भारत मित्र' नामक हिंदी पत्रों का संपादन कार्य किया। इनके द्वारा लिखित प्रसिद्ध निबंध है- शिव शंभू का चिट्ठा और 'खत'। भारतेंदु की तरह ही गुप्ताजी सामाजिक और सांस्कृतिक क्षेत्र से जुड़े निबंधकार कहलाये। देश भक्ति और हिंदी भाषा के प्रति प्रेम इनके निबंधों में परिलक्षित होता है। इन्होंने अपने निबंधों में विचारों और भावों की व्यापकता दर्शायी है। 'आत्माराम' इनका आलोचनात्मक निबंध है।

धर्म, सभ्यता, समाजान्तर्गत विषयों के अलावा देश की राजनीतिक आंदोलनों पर भी इनकी लेखनी चली जैसे 'नेशनल कांग्रेस की दुर्दशा', 'भारतीय प्रजा के दुख की दुहाई' और 'ठीठाई पर गवर्नमेंट की कडाई' आदि।

इनके निबंध सीधी सरल जनमानस की भाषा में लिखे गए हैं जो मुहावरों और कहावतों से युक्त है व विचारों की स्पष्टता सहज ही लक्षित हो जाती है।

भारतेंदु युग में इनके अतिरिक्त अन्य प्रमुख निबंधकार है ज्वाला प्रसाद, तोताराम, राधाचरण गोस्वामी, अंबिकादत्त व्यास आदि।

७.३.२ द्विवेदी युग :- (१९०० से १९२०):

द्विवेदी युग हिंदी निबंध विधा का द्वितीय युग माना जाता है। इसका आरंभ 'नागरी प्रचारिणी सभा और 'सरस्वती के प्रकाशन से माना जाता है। इस युग की समस्त साहित्यिक गतिविधियों का श्रेय महावीर प्रसाद द्विवेदी जी को दिया जाता है इन्होंने सर्वप्रथम भाषा को परिष्कृत संस्कारित किया। साथ ही भाषा को व्याकरण सम्मत बनाने पर अधिक जोर दिया इनमें विराम चिन्हों का उपयोग आवश्यक माना। इस युग में राष्ट्रीय चेतना प्रमुख विषय बना क्योंकि यह योग राष्ट्रप्रेम, सामाजिक ऐक्य, सांस्कृतिक - नव चेतना, ऐतिहासिक गौरव का काल था। इसीलिए निबंध के विषय भी विविध रंगों से सजे थे उसमें भाषायी शुद्धता का विशेष ध्यान रखा गया था। द्विवेदी जी नैतिकता प्रिय व्यक्ति थे इसीलिए इस युग में नैतिक निबंध अधिक लिखे गये। निबंधों में बौद्धिकता और साहित्यिकता अधिक आ गई। द्विवेदीजी ने साहित्य में ज्ञान का परिमार्जन आवश्यक माना परिणाम स्वरूप साहित्यकारों का ध्यान साहित्य को संचित संहिता बनाने की ओर अधिक रहा यही कारण है कि इस काल में अनुवाद लेखन की परंपरा भी प्रारंभ हुई। इस युग के साहित्यकारों ने भाषा संयोजन के साथ राष्ट्रीय परिस्थितियों और संपूर्ण युग का उत्तरदायित्व गंभीरता और वैचारिक दृष्टि से अपनाकर निबंधों में हास्य व्यंग्य, रस- राग आदि भावों को नगण्य सा कर दिया इस युग के प्रमुख निबंधकार है- महावीर प्रसाद द्विवेदी, बाबू श्यामसुंदर दास, पद्मसिंह शर्मा, मिश्र बंधु माधव प्रसाद मिश्र, चक्रधर शर्मा गुलेरी, सरदार पूर्ण सिंह आदि।

महावीर प्रसाद द्विवेदी :-

इन्होंने सरस्वती पत्रिका का संपादन किया। हिंदी को परिनिष्ठित और व्याकरण सम्मत बनाने के लिए हमेशा प्रयत्नशील रहे। अनेक शब्द अन्य भाषा से ग्रहण कर हिंदी को व्यापक बनाया ये शब्द इन्होंने मराठी, बांग्ला, अंग्रेजी और उर्दु भाषा से लिये। इनके निबंधों की प्रमुख विशेषता भाषा को सजाना, संवारना, विविध विषयों पर अपने विचार व्यक्त करना आदि है इन्होंने ३०० से अधिक निबंध लिखें। इनके प्रमुख निबंध संकलन है- 'साहित्य सीकर', 'साहित्य संदर्भ', 'विचार विमर्श' आदि। सन १९०३ में इन्होंने 'सरस्वती' पत्रिका संपादन का दायित्व स्वीकार किया और इस पत्रिका के माध्यम से साहित्य को नयी दिशा प्रदान की। अंग्रेजी के निबंधों का हिंदी में अनुवाद किया। इनके द्वारा लिखित समीक्षात्मक निबंधों में 'कवि और कविता', 'साहित्य की महत्ता' वर्णनात्मक निबंधों में 'एक योगी की साप्ताहिक समाधि', 'अद्भुत', 'इंद्रजाल' प्रमुख है। मौलिक चिंतन पर आधारित निबंध है - 'दण्डदेव का आत्म निवेदन', 'कालिदास का भारत', 'गोपियों की भगवद् भक्ति' आदि। इस प्रकार इनके संपूर्ण निबंधों में भाषा शुद्ध और सुंदर रूप में प्रस्तुत हुई है परंतु वैचारिक दृष्टि से निबंध बाधित हुए हैं।

बाबू श्यामसुंदर दास:-

आलोचक होने के साथ ही उच्च कोटि के निबंधकार भी है इनके निबंध के विषय प्रमुख रूप से साहित्यिक और सांस्कृतिक रहे हैं इनके द्वारा लिखित प्रमुख निबंध है- भारतीय साहित्य की विशेषताएँ, 'तुलसीदास', 'सूरदास', 'हमारी भाषा' आदि। ये एक अच्छे वक्ता थे इसी कारण इनके निबंधों में विचार संचय की प्रवृत्ति अधिक है और अनुभूति कम उनके निबंधों के पठन से व्याख्यान का भास हमें होता है। इन्होंने विषय विवेचन से अधिक विषयों की व्यापकता पर विचार किया। श्यामसुंदर दास जी ने भी हिंदी भाषा विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया इसी संबंध में ' साहित्य लोचन' नामक पुस्तक लिखी और साथ ही हिंदी के हस्तलिखित ग्रंथों की खोज कर हिंदी वैज्ञानिक कोश तथा शब्द सागर का संपादन किया। कई प्राचीन कवियों के ग्रंथों का संपादन किया नागरी प्रचारिणी सभा की स्थापना की। इनकी भाषा तत्सम शब्द के प्रयोग के साथ संस्कृत निष्ठ भाषा थी।

माधव प्रसाद मिश्र:-

इनके निबंधों में भारत की प्राचीन संस्कृति, धर्म, दर्शन और साहित्य के प्रति गहरी आस्था प्रदर्शित होती है। इन्होंने शास्त्रीय निरूपण पर अधिक बल न देते हुए अनुभव और व्यवहार के आधार पर निबंध लिखें। गृहस्थिक और मनोविकार की समस्या भी इनके निबंध के विषय रहे।

माधव मिश्र निबंध माला नाम से निबंध संग्रह प्रकाशित है साथ ही चिंतन परक निबंधों में - 'सब मिट्टी हो गया' निबंध प्रमुख है। भावपूर्ण निबंधों में 'होली', 'रामलीला', 'व्यास

पूजा', 'श्री पंचमी' आदि निबंध प्रमुख है। शोध और अनुसंधान पर आधारित निबंध है - 'बेबर का भ्रम'

सरदार पूर्ण सिंह:-

इनके जीवन का दृष्टिकोण वैज्ञानिक था लेकिन साहित्य में भावात्मक और मानवतावादी दृष्टिकोण को लेकर आगे बढ़े। और केवल छ: निबंधों के बल पर श्रेष्ठ निबंधकार माने गये। इनके निबंधों में विचारों की व्यंजना, प्रगतिशीलता और रूपात्मक विकास की अवधारणा पर जोर दिया गया है। ललित निबंध का प्रारंभ उन्होंने ही किया है इस श्रेणी में तीन प्रमुख निबंध है-'आचरण की सभ्यता', 'मजदूरी और प्रेम' तथा 'सच्ची वीरता', अन्य निबंध है - 'कन्यादान', 'पवित्रता' और 'अमेरिका का मस्त योगी वाल्ट हिटमैन' इस प्रकार अपनी सहज और सरल शैली का अंकन निबंधों में कर सरदार जी थोड़े निबंधों से ही इस क्षेत्र में अविस्मरणीय हो गये।

चंद्रधर शर्मा गुलेरी:-

भाषा के प्रकांड पंडित होने के कारण इनके द्वारा लिखित निबंध बौद्धिक सरसता गंभीरता व प्राचीनता में नाविन्य का समन्वय जैसी अद्भुत कला के साथ प्रस्तुत हुए हैं.। इनके निबंधों में अर्थ वक्रता, व्यंग्यात्मकता, हास्य भावना सर्वत्र देखी जा सकती है। 'मोरसि मोहिं कुष्ठाव', 'कछुआ धर्म' और 'संगति' प्रमुख निबंध है जो साहित्यिक गुणात्मक दृष्टि से अतुलनीय है। इनके निबंधों की भाषा सहज- सरल है। केवल 'प्रसंग वश' ही पारिभाषिक शब्दावली का प्रयोग हुआ है।

पद्म सिंह शर्मा :-

पद्म पराग और प्रबंध मंजरी नाम से इनके दो निबंध संग्रह प्रकाशित है। किसी सामान्य विषय पर भाषायी चमत्कार द्वारा इनके निबंध आकर्षक बन पड़े हैं उर्दु, फारसी, अंग्रेजी शब्दों का खुलकर प्रयोग के साथ मुहावरे, कहावतों का भी प्रयोग किया है। इनके द्वारा लिखित आलोचना भी सरस भाषा के कारण कहानी और उपन्यास की तरह सुगम बन गई है।

इस प्रकार द्विवेदी युग में विषय, साहित्य और भाषा के आधार पर निबंध विधा का यथेष्ट विकास
हुआ। इस युग के निबंध साहित्यार्जन और ज्ञानार्जन की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। अन्य निबंधकार है- यशोधन, आश्वैरी, गोविंदा नारायण मिश्र, प्रेमचंद आदि।

७.३.३ शुक्ल युग : - (१९२० ई से १९४० ई)

इस युग को निबंध विधा का विकास काल माना जाता है। द्विवेदी युग में निबंधों के विषय और भाषा को प्रखर और परिष्कृत करने का कार्य पूरी गहराई के साथ हुआ लेकिन विषयों के विश्लेषण का कार्य नहीं हुआ था। शुक्ल युग में गद्य विधाओं में सृजनात्मक प्रयोग आरंभ हुए। शुक्लजी ने कठिन से कठिन विषयों पर निबंध लिखें और

इन निबंधों की भाषा, विचार और भावों को बहुत ही प्रवणता के साथ प्रस्तुत किया। यह छायावादी युग होने के कारण कल्पनाशीलता भाषा की सरसता, भावों की प्रवणता आदि गुणों से गद्य साहित्य सजा- संवरा इसी कारण इस युग के निबंध सहज- सरल और अर्थ की दृष्टि से स्पष्ट है। स्वतंत्रता संग्राम का बिगुल बज जाने के कारण मानवीय दृष्टिकोण को सर्वोन्मुखी रख देश प्रेम और राष्ट्रभक्ति की भावना गद्य साहित्य पर थी। शुक्ल युग के प्रमुख निबंधकार है:- रामचंद्र शुक्ला, गुलाब राय, जयशंकर प्रसाद, सुमित्रानंदन पंत, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, महादेवी वर्मा, नंददुलारे वाजपेयी, प्रेमचंद, राहुल सांकृत्यायन, माखनलाल चतुर्वेदी आदि।

आचार्य रामचंद्र शुक्ल :-

हिंदी साहित्य में आलोचक के रूप में शीर्ष स्थान पर आचार्य रामचंद्र शुक्ल का नाम है। निबंध साहित्य के विकास में आचार्य शुक्ल का अग्रणीय स्थान है। उनके अनुसार भाषा की पूर्ण शक्ति का विकास निबंध विधा के माध्यम से ही संभव है। हिंदी साहित्य में शुक्ल जी का निबंध के प्रति दृष्टिकोण की तुलना अंग्रेजी साहित्य के निबंध लेखक बेकन से की जाती है। इन्होंने विभिन्न विषयों पर निबंध लिखें जिन्हें चिंतामणि भाग-१,भाग-२, भाग-३ नामक निबंध संग्रह के माध्यम से प्रकाशित किया। चिंतामणि भाग-१ में मानव व्यवहार से संबंधित विषयों का चयन कर उसमें तत्व चिंतन और वैज्ञानिकता का आधार लेकर निबंध विधा को सर्वोपरि रूप दिया गया है। इन निबंधों में उत्साह, 'करुणा', 'ईर्ष्या', 'घृणा', 'क्रोध', 'लज्जा', और 'ग्लानी-भाव' और 'मनोविकार', 'श्रद्धा', 'भक्ति', 'लोभ', 'प्रीति' आदि शामिल है। साहित्यिक अवधारणाओं के आधार पर भी शुक्ला जी ने छह निबंध लिखें इनमें प्रमुख है:- 'कविता क्या है', 'साधारणीकरण और व्यक्ति वैचित्र्यवाद', 'रसात्मक बोध के विविध रूप', 'काव्य में प्राकृतिक दृश्य', 'काव्य में रहस्यवाद', 'काव्य में अभिव्यंजनावाद'। साहित्यिक समीक्षा विषय पर तीन प्रमुख निबंध शुक्ल जी ने लिखे हैं जिनमें- 'भारतेंदु हरिश्चंद्र', 'तुलसी का भक्ति मार्ग', 'मानस की धर्मभूमि'। शुक्ल जी ने बड़े निबंध भी लिखे हैं इनमें प्रमुख रूप से 'काव्य में लोकमंगल की साधनावस्था' का नाम लिया जाता है। शुक्लजी के निबंधों में विचारों की क्रमबद्धता, विवेचन और व्यंग्य के माध्यम से निबंध अत्यंत प्रभावशाली बन पड़े हैं।

शुक्लजी के साहित्य की भाषा परिनिष्ठित खड़ी बोली है। देशी और विदेशी भाषाओं के शब्द भी प्रसंगानुरूप जोड़ दिए हैं। शब्द और अर्थ का पारस्परिक सामंजस्य शुक्लजी के काव्य की विशेषता है। अपने निबंध को प्रभावपूर्ण बनाने के लिए कहावतों और मुहावरों का भी प्रयोग व्यापक रूप से किया गया है। इस प्रकार शुक्लजी के निबंधों का समग्र अध्ययन उनके लेखन की सृजनात्मक, सौंदर्य परक, विचारात्मक और आलोचनात्मक स्तर की पराकाष्ठा को दर्शाता है।

बाबू गुलाब राय:-

गुलाब राय इस युग के प्रमुख निबंधकार है इनके अनेक निबंध संग्रह प्रकाशित है इनके निबंध वैचारिक, मनोविश्लेषणात्मक, भावात्मक और ललित निबंध श्रेणी में हम विभाजित कर सकते हैं। गंभीर चिंतन के साथ व्यंग्य विनोद पूर्ण शैली इनके निबंधों की विशेषता है

फिर निराशा क्यों और 'मेरी असफलताएं' इसी श्रेणी के निबंधों में आने वाले निबंध संग्रह है। 'मन की बातें' निबंध संग्रह मनोविश्लेषणात्मक विषय पर लिखा गया है। ठलुआ क्लब निबंध संग्रह ललित निबंध में आता है। गुलाब राय जी विषय से अधिक शैली को प्रमुख मानते हैं उनके निबंधों की भाषा स्वच्छंद और सरल सामान्य है लोकोक्तियां और मुहावरों का खुलकर प्रयोग किया है।

पं. माखनलाल चतुर्वेदी:-

बहुमुखी प्रतिभा के धनी पं. माखनलाल चतुर्वेदी जी ने निबंधों के अतिरिक्त नाटक, कहानी, कविता आदि साहित्यिक लेखन कार्य किया वे एक अच्छे पत्रकार, वक्ता और राजनीतिक कार्यकर्ता थे। देश की आजादी की लड़ाई में चतुर्वेदी जी स्वतंत्रता संग्राम सेनानी भी रहे उनका समग्र जीवन कष्टमय रहा।

राष्ट्रीयता की भावना रग रग में भरी होने के कारण इनके निबंध भावना प्रधान बन पड़े हैं उनका ध्येय था घटनाओं और तथ्यों को रागात्मक चेतना से भर कर पाठक को उस कर्म की ओर अग्रसर करना। रागात्मक प्रवृत्ति के कारण उनके लयगद्य और प्रवाह युक्त बन गए हैं। साहित्य देवता निबंध संग्रह उनके भावनात्मक स्वरूप को व्यक्त करता है। साथ ही इस निबंध संग्रह में ऐतिहासिक और पौराणिक प्रसंगों का भी समावेश हुआ है। चतुर्वेदी जी की भाषा अलंकृत और लयबद्ध है। उनकी भाषा में कथन की लाक्षणिकता प्रवाह और संवेदनशीलता का अद्भुत समन्वय मिलता है।

राहुल सांकृत्यायन:-

राहुल सांकृत्यायन पर्यटक और यात्रा वृतांत के लिए जाने जाते हैं। ये भाषा के विद्वान और पुरातत्व वेत्ता थे ‘ पुरातत्व निबंधावली में इस विषय पर सभी निबंध लिखे गए हैं इनके निबंधों में यह विविध नए विषयों का समावेश करने में विश्वास करते थे। साहित्य संबंधी निबंधों में 'मातृ भाषाओं का प्रश्न', 'प्रगतिशील लेखक', 'हमारा साहित्य', 'भोजपुरी' आदि निबंध प्रमुख है इन निबंधों में भाषा विषय को लेकर अधिक विस्तृत ज्ञान प्रदर्शित होता है। मानव जीवन और प्रकृति पर लिखे गए निबंध है- 'गली', 'चौराहा', 'सड़क', 'भीड़', 'शोरगुल', 'वीरान', 'लता', 'कुंज', 'उद्यान', 'सागर', 'सरिता', 'पर्वत', 'मरूभूमि', 'घाटी', 'टोकरी' आदि प्रमुख है। राहुल जी की निबंध की भाषा साधारण बोलचाल की भाषा है अंग्रेजी और उर्दु के शब्दों का प्रयोग उन्होंने खुलकर किया है।

सूर्यकांत त्रिपाठी निराला:-

निराला जी महा कवि के रूप में विख्यात है लेकिन गद्य साहित्य में भी इनका अमूल्य योगदान है। इनके प्रमुख निबंध संग्रह है- 'प्रबंध प्रतिमा', 'चयन', 'चाबुक', 'प्रबंध पद्म' आदि निराला जी के जीवन का प्रभाव उनके निबंधों पर भी पड़ा उन्होंने आत्माभिव्यक्ति परक निबंध लिखें।

जो कल्पना और भावुकता से कोसों दूर थे। उनकी गद्य शैली यथार्थवादी दृष्टिकोण की थी और भाषा छोटे-छोटे वाक्यों से सजी हुई है साथ ही ग्रामीण भागों में प्रचलित मुहावरों, लोकोक्तियों का बखूबी प्रयोग निराला जी ने किया है।

शुक्लोत्तर युग:-

इसे विस्तरण युग भी कहा जाता है इसमें समावेशित साहित्य स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात का साहित्य है। इस युग तक आते-आते निबंध विधा पूरी तरह प्रतिष्ठित हो चुकी थी। इस युग में निबंध विधा में अनेक प्रवृत्तियों का समावेश हुआ। आधुनिक ललित निबंध इस कार्य में अधिक प्रचलित हुए और इसके विकास क्रम में हजारी प्रसाद द्विवेदी, कुबेर नाथ राय, विद्या निवास मिश्रा का नाम अधिक प्रचलित है

७.४ ललित निबंध

ललित शब्द से तात्पर्य है लालित्य अर्थात सरसता। निबंधकार जब अपने भावों विचारों से सरस, अनुभूति परक और रोचकता युक्त निबंध लिखता है वह निबंध ललित निबंध की श्रेणी में आते हैं। इन निबंधों की भाषा सहज व सरल होती है और विषय में कल्पनाशीलता का समावेश अधिक होता है इसी कारणवश पाठक उबाऊ वर्णन, जटिल वाक्य रचना, दीर्घ विशेषण से परे होता है इन निबंधों में लेखक के व्यक्तित्व की छाप होती है।

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी:-

ललित निबंधों में द्विवेदी जी का स्थान प्रमुख है ये अध्ययन शील व्यक्तित्व के धनी थे संस्कृत भाषा के साथ पालि, अपभ्रंश भाषा का ज्ञान भी इन्हें था। इन्होंने अपनी रचना पर विचारों का बोझ नहीं पड़ने दिया बल्कि विशिष्ट रचना प्रणाली द्वारा व्यक्ति परक निबंधों का एक स्वरूप निश्चित किया और संस्कृति व संवेदना का व्यापक परिवेश रचा क्योंकि ललित निबंधों का आधार ही सौंदर्य होता है इनके प्रमुख निबंध संग्रह में 'अशोक के फूल', 'कल्पकता', 'विचार और वितर्क, 'विचार प्रवाह', 'कुब्ज और आलोक', 'पर्व' प्रमुख है। द्विवेदी जी की भाषा तत्सम शब्दों के बहुल मात्रा में प्रयोग के साथ उर्दु फारसी और अंग्रेजी शब्दावली का प्रयोग खुलकर किया है वही शैली गत दृष्टि से विचार, आलोचना और भावों की प्रधानता है।

डॉ. विद्यानिवास मिश्र:-

मिश्र जी का नाम ललित निबंध कारों में प्रमुखता से लिया जाता है. इन्होंने ललित निबंध को सांस्कृतिक भाव भूमि प्रदान की इस कारण निबंधों में सौंदर्य बोध को स्थान मिला इन्होंने भावनात्मक शैली प्रधान निबंध लिखें साथ ही इनके निबंधों में सामाजिक, सांस्कृतिक और पारिवारिक बांधिलकी देखने को मिलती है जो पाठक को आकर्षित करने में कामयाब है। इनके द्वारा लिखित ललित निबंध संग्रह है :-' छितवन की छाह', 'कदम की फूली डाह', 'तुम चंदन हम पानी', 'मैंने सील पहुंचाई', 'आंगन का

पंछी' और 'बंजारा मन', 'कटीले तारों के आर पार', 'बसंत आ गया पर कोई उत्कंठा नहीं', 'मेरे राम का मुकुट भीग रहा है', आदि मिश्र जी के निबंधों की भाषा संस्कृत निष्ठ होने के कारण तत्सम शब्दों की अधिकता है उर्दु, । फारसी अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग भी इन्होंने किया है।

कुबेर नाथ राय:-

राय जी साठोत्तर युग के श्रेष्ठ ललित निबंधकार है. इनके निबंध स्वाभाविकता प्रधान्य है जो कहानी, उपन्यास और कविता की भांति आकर्षक है जो मानवीय पक्ष को उजागर करते हैं इनके अनुसार धर्म उतना ही आवश्यक है जितना कि राज्य के लिए, शासक और संविधान। इनका पहला निबंध संग्रह ' प्रिया नीलकंठी है जो ईसा मसीह के जीवन पर आधारित है वही 'रस आखेटक' निबंध संग्रह की सभी रचनाएं लालित्य बोध से जुड़ी हुई है। इनके निबंधों में ग्रामीण संस्कृति का चित्रण हुआ है साथ ही ग्रामीण भाग का मनोरम प्रकृति चित्रण भी राय जी ने किया है. कुल मिलाकर इनके निबंधों में मानवीय जीवन मूल्यों के प्रति गहरी आस्था दिखाई देती है. रायजी के निबंधों में भाषा का गांभीर्य नजर आता है. अलंकार शैली के लालित्य के साथ लाक्षणिकता भी है भाषा सरस व विषयानुकूल चयन हुई है।

शुक्लोत्तर युग में ललित निबंधों की बहुलता होने के साथ-साथ अन्य प्रकार के निबंध भी लिखे गए हैं. इनमें प्रमुख है वैचारिक निबंध और व्यंग्य निबंध परंतु प्रसिद्धि और रोचकता ललित निबंधों की ही रही।

७.५ सारांश

हिंदी साहित्य में निबंध विधा का विकास आधुनिक युग में हुआ। आ. रामचंद्र शुक्ल प्रमुख निबंधकार माने जाते हैं और उन्हीं के नाम के आधार पर निबंधों के विकास को तीन युगों में विभाजित किया गया है।

इस इकाई के अध्ययन से निबंध विधा का समग्र अध्ययन हमने किया है। भारतेंदु युग में समाज सुधार और देश प्रेम की भावना प्रबल थी । द्विवेदी युग में सांस्कृतिक नवजागरण, शुक्ल युग में चिंतन और मानवतावादी रूप प्रखर हुआ और शुक्लोत्तर युग में निबंध का विस्तार हुआ जैसे ललित निबंध, वैचारिक निबंध, व्यंग्य निबंध।

७.६ बोध प्रश्न

१. निबंध का अर्थ और परिभाषा स्पष्ट करते हुए निबंध के स्वरूप का वर्णन कीजिए।

२. हिंदी में निबंध विधा का विकास कैसे हुआ? स्पष्ट कीजिए।

३. आ. रामचंद्र शुक्ल का निबंध विधा में महत्वपूर्ण योगदान है विस्तार पूर्वक समझाइए।

४. भारतेंदू हरिश्चंद्र को निबंध विधा का प्रणेता माना जाता है विवरणात्मक उत्तर दीजिए

५. द्विवेदी युग में निबंध परिनिष्ठित भाषा और स्वरूप के साथ विकसित हुए उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

७.७ लघुत्तरीय प्रश्न

---

१. निबंध विधा के प्रथम काल को कहा गया है?

उत्तर - भारतेंदु युग

२. ऑक्सफोर्ड शब्दकोश में निबंध की आकृति कैसे बताई गई है?

उत्तर - सीमित और परिष्कृत

३. हिंदी विधा का आरंभ कब हुआ?

उत्तर - आधुनिक युग में

४. 'भारत वर्ष की उन्नति कैसे हो सकती है' नाटक किसने लिखा है?

उत्तर - भारतेंदु हरिश्चंद्र

५. ललित निबंध कौन से युग में लिखे गए हैं?

उत्तर - शुक्लोत्तर युग

६. कुबेर नाथ राय निबंध विद्या के कौन से युग के लेखक है?

उत्तर - शुक्लोत्तर युग

७. महावीर प्रसाद द्विवेदी ने कौन सी पत्रिका का संपादन किया?

उत्तर - सरस्वती

७.८ संदर्भ ग्रंथ

---

१. साहित्य विधाओं की प्रकृति - लेखक देवीशंकर अवस्थी

२. आधुनिक हिंदी साहित्य का इतिहास - डॉ. बच्चन सिंह

३. स्वातंत्र्योत्तर हिंदी साहित्य का इतिहास - डॉ लक्ष्मी सागर

४. श्रेष्ठ निबंध आचार्य रामचंद्र शुक्ला संपादक रामचंद्र तिवारी

❖ ❖ ❖ ❖

८

निबंध विविधा (निबंध -संग्रह)

बाजार दर्शन -जैनेन्द्र

पाप के चार हथियार

इकाई की रूपरेखा

८.० इकाई का उद्देश्य

८.१ बाजार दर्शन

  ८.१.१ लेखक परिचय

  ८.१.२ प्रस्तावना

  ८.१.३ व्याख्या/ समीक्षा

  ८.१.४ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण

  ८.१.५ बोध प्रश्न

  ८.१.६ वस्तुनिष्ठ / लघुत्तरी प्रश्न

  ८.१.७ वैकल्पिक प्रश्न

८.२ पाप के चार हथियार

  ८.२.१ लेखक परिचय

  ८.२.२ प्रस्तावना

  ८.२.३ व्याख्या/ समीक्षा

  ८.२.४ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण

  ८.२.५ बोध प्रश्न

  ८.२.६ वस्तुनिष्ठ/ लघुत्तरी प्रश्न

  ८.२.७ वैकल्पिक प्रश्न

८.० इकाई का उद्देश्य

इस इकाई के अंतर्गत पाठ्यक्रम में निर्धारित दो निबंध 'बाजार दर्शन' और 'पाप के चार हथियार' का परिचय दिया गया है। इससे इन निबंधों में निहित उद्देश्य को समझा जा सकेगा, निबंध की समीक्षा की जा सकेगी। साथ ही इस निबंध से संबंधित कुछ अवतरणों की संदर्भ सहित व्याख्या भी की जा सकेगी। अंत में बोध प्रश्न दिए गए हैं। वस्तुनिष्ठ या लघुत्तरी प्रश्नों के उत्तर भी दिए गए हैं। साथ ही कुछ वैकल्पिक प्रश्न और उसके उत्तर दिए गए हैं। जिससे पाठकों को (विद्यार्थियों) को इस निबंध को समझने में सरलता होगी।

८.१ बाजार दर्शन - जैनेन्द्र कुमार

८ .१.१ लेखक परिचय :

जैनेन्द्र कुमार :

हिन्दी साहित्य की परम्परा में जैनेन्द्र कुमार का नाम अत्यन्त सम्मान के साथ लिया जाता है। इनकी ख्याति का मूल आधार उपन्यास तथा कहानियाँ रही हैं लेकिन इन्होंने निबंध विधा में भी अपनी अमिट छाप छोड़ी। गद्य की भाषा को जैनेन्द्र ने एक नये मुकाम तक पहुँचाया है। इनके विचारपरक निबंधों में मानवीय द्वंद्वों का उद्घाटन खूब हुआ। मनोविश्लेषण पद्धति का अनुसरण कर जैनेन्द्र ने अपने चरित्रों के मन के अनेकानेक परतों का उभारकर एक नये संसार से परिचित कराया है। जैनेन्द्र कुमार का जन्म 2 जनवरी 1905 को उत्तरप्रदेश के अलीगढ़ जिले में हुआ था। बचपन में इन्हें आनंदीलाल के नाम से पुकारा जाता या प्रारम्भिक शिक्षा-दीक्षा गुरुकुल में सम्पन्न हुई थी। मैट्रिक की परीक्षा पास करने के उपरांत काशी हिन्दू विश्वविद्यालय उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए आए। लेकिन स्वतंत्रता संग्राम के आंदोलनों के प्रति आकर्षित हुए और पढ़ाई छोड़कर गांधीजी के सहयोग आंदोलन में शामिल हो गए।

'परख' , 'सुनीता' , 'त्यागपत्र' , 'कल्याणी' , 'विवर्त' और 'सुखदा' इनके अत्यन्त चर्चित उपन्यास हैं। 'फाँसी' , 'वातायन' , 'नीलम देश की राजकन्या' , 'एक रात' , 'दो चिड़ियाँ' और 'पाजेब' शीर्षक से इनके कहानी संग्रह प्रकाशित हुए हैं। जैनेन्द्र कुमार के निबंधों का मुख्य विषय प्रेम, विवाह, सेक्स, धर्म, रजनीति, संस्कृति और परम्परा का अन्वेषण है। दर्शन और वैचारिकता के आधार पर इन्होंने जीवन के तमाम सूक्ष्म पहलुओं पर चिंतन-मनन किया है। जैनेन्द्र कुमार के निबंधों की शैली प्रश्नात्मक है। वे संवाद अथवा सवाल-जवाब के माध्यम से दार्शनिक तत्त्वों को केन्द्र में रखकर किसी भी जटिल मुद्दे पर चिंतन प्रस्तुत करते हैं। साहित्य के क्षेत्र में अमूल्य योगदान के लिए इन्हें पद्मभूषण के अतिरिक्त हिन्दुस्तान अकादमी पुरस्कार, हस्तीमल डालमिया पुरस्कार, शिखर सम्मान तथा प्रतिष्ठित साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। इनका निधन 24 दिसम्बर, 1988 को हुआ।

८.१.२ प्रस्तावना :

हिंदी साहित्य में जैनेंद्र कुमार मनोवैज्ञानिक लेखक के रूप में जाने जाते हैं, विशेष रूप से उपन्यास कहानियों के संदर्भ में। जैनेंद्र कुमार ने अपनी मनोवैज्ञानिक शैली के अनुरूप मानव मन की अनेकानेक परतों को खोलते हुए व्यंग्यात्मक निबंध भी लिखे हैं।

'बाजारदर्शन' ऐसा ही एक निबंध है जिसके द्वारा मानव मन की दुर्बलता और प्रलोभन, आकर्षण, विरक्ति और संतुलन जैसी प्रवृत्तियों का वर्णन किया गया है।

८.१.३ व्याख्या / समीक्षा:

इस निबंध द्वारा लेखक ने वर्णनात्मक शैली में अलग-अलग उदाहरणों के द्वारा अपनी बात कही है। बाजार को जहाँ वह आवश्यक मानता है वहीं उसे एक जादूगर की उपमा भी देता है। वह एक ऐसा जादूगर है, जो मानव मन को विचलित किए बिना नहीं रहता। लेखक ने अपने मित्र का उदाहरण दिया है जो अपनी पत्नी को जिम्मेदार ठहराते हुए स्वयं की अतिरिक्त खरीदारी करने के कमजोर मन की दुर्बलता को छुपाते हुए बाजार को शैतान का जाल कहता है। बाजार की सजावट और दुकानदारों की शैली को अतिरिक्त खर्च के लिए जिम्मेदार मानता है। लेखक के अनुसार ऐसे व्यक्ति वे होते हैं जिनके पास पैसे तो काफी होते हैं पर मन खाली होता है। उन्हें पता नहीं रहता कि क्या लेना जरूरी है और क्या गैरजरूरी। जो अच्छा लगा खरीदते जाते हैं और अंत में बाजार को दोष देते हैं। दूसरों को अतिरिक्त खर्च के लिए जिम्मेदार ठहराते हैं।

वहीं कुछ ऐसे भी लोग होते हैं जो सारा बाजार घूम-घूमकर देखते हैं, पर खरीदते कुछ नहीं। वे अपने पैसों को जमाकर रखने में ही खुश रहते हैं। मन को मारकर या बंदकर बाजार जाने वाले ये होते हैं। उन्हें पैसों में ही सारी शक्ति दिखाई देती है। फिजूल वस्तुएं खरीदने के बजाय पैसों को जमाकर रखने में ही उन्हें आनंद मिलता है। ये कुछ ज्यादा ही चुस्त लोग होते हैं। मानो बाजार को चुनौती दे रहे हों, देखो मैं तुम्हारी चकाचौंध देख तो रहा हूँ पर उसके प्रभाव में नहीं आने वाला। लेखक इसे धन संचय की तृष्णा ही मानता है, जिसे वैभव की चाहत होते हुए भी स्वयं पर कठोर नियंत्रण होता है।

लेखक ने भगत चूरन वाले के माध्यम से संतुलित मन से बाजार जाने वाले व्यक्ति का भी उदाहरण दिया है। भगत जी सिर्फ और सिर्फ अपनी जरूरत का सामान खरीदते हैं। उनके काम करने का, कमाई का, खरीदारी और बिक्री का सुनिश्चित नियम है। अत्यंत सधे हुए संतुलित मन से वे बाजार जाते हैं। बाजार के रूप का जादू उन पर असर नहीं करता शायद उनकी यह नियम बाध्यता ही उन्हें लोकप्रिय बना देती है। बाजार को उसकी समग्रता में देखते हैं। आसपास के लोगों को भी देखते हैं। अत्यंत सरल और संतुष्ट भाव के साथ बाजार का सम्मान करते हुए अपनी जरूरत की चीजें हैं वे खरीदते हैं, उनके लिए बाजार की इतनी ही उपयोगिता है।

यहाँ लेखक मात्र बाजार को लेकर क्रेता और विक्रेता ही नहीं बल्कि अर्थ की शक्ति के विषय में भी बहुत कुछ कह जाते हैं। पैसे में कितनी ताकत है वह हम मानव मन को किस प्रकार प्रभावित करता है। जिसके पास बहुत कुछ है, लोग उससे प्रभावित होते हैं।

जिसके पास कुछ कम है वह अधिक की लालसा रखता है। जैसे कि पैदल चलने वाला स्कूटर की चाह रखता है, स्कूटर वाला कार की इत्यादि। चीजों के प्रति आकर्षण का यह भाव वस्तु की मांग को बढ़ा देता है और मांग बढ़ने पर महंगाई भी बढ़ती है।

लेखक बाजार के जादू को रूप का जादू मानता है, जोकि बिना किसी भेदभाव के मात्र क्रय शक्ति को पहचानता है। जो खरीद सकता है वह उसके लिए श्रेष्ठ है। इसका दूसरा पहलू यह भी है कि यह उपभोक्तावादी संस्कृति किसी न किसी स्तर पर सामाजिक समता भी दर्शाती है। बाजार की असली कृतार्थता आवश्यकता के समय काम आने में है। संचय की तृष्णा और वैभव की चाह व्यक्ति को कमजोर ही प्रमाणित करती है। बाजार को सार्थकता वही प्रदान करता है, जो जानता है कि उसे क्या खरीदना है। जिन्हें यह नहीं पता होता कि उन्हें क्या खरीदना है वे बाजारूपन को जन्म देते हैं। एक दूसरे की देखादेखी लोग हैसियत से बाहर खरीदारी करना चाहते हैं। यदि सामर्थ्य है तो धन का अपमान और सामर्थ्य नहीं है तो छल-कपट व गलत तरीके से धन प्राप्ति का प्रयोग समाज में गलत प्रवृत्तियों को बढ़ाता है। अंततः बाजार का अर्थशास्त्र, अनीति शास्त्र में बदल जाता है। दूसरों की समृद्धि देखकर स्वयं के प्रति हीन भावना पैसों की व्यंग्य शक्ति ही है।

निबंध में सरल, सहज और प्रभावशाली भाषा का प्रयोग किया गया है। लेखक ने हर स्थिति और घटना का वर्णन रोचक और स्पष्ट शैली में विस्तारपूर्वक किया है। हिंदी के साथ उर्दू, फारसी, अंग्रेजी भाषा के शब्दों के प्रयोग ने लेखन शैली को समृद्धि प्रदान की है।

(अंग्रेजी-एनर्जी, परस्पेसिंग पावर, बैंक, मनीबैग, फैंसी स्टोर, उर्दू, फारसी नाहक, पेशगी, बेहया, खलल, हर्ष, दरकार जैसे शब्दों का प्रयोग हुआ है।)

यह निबंध उपभोक्तावाद एवं बाजारवाद की अंतर्वस्तु को समझाने में सहायक है। बाजार उपभोक्ता सामान और उपभोक्तावादी संस्कृति दोनों के लिए जिम्मेदार है। इसका सारा कारोबार ही इस पर निर्भर है। बाजार का आकर्षण मानव मन को भटका देता है। उसे ऐशो-आराम की वस्तुओं को खरीदने को आकर्षित करता है। लेखक ने भगत जी के माध्यम से नियंत्रित खरीदारी का महत्व बतलाया है कि बाजार हमारी जरूरतों को पूरा करें इसी में उसकी सार्थकता है। अन्यथा समाज में लूट-खसोट और ईर्ष्या को ही बढ़ावा मिलेगा। बाजार को सार्थकता वही देगा जो अपनी आवश्यकताओं को जानता है। जो नहीं जानता वह बाजार को शोषक का रूप देता है। अंततः लेखक कहना यही चाहता है कि जैसे बाजार हमारे लिए उपयोगी और आवश्यक है वैसे हम में अपनी जरूरतों का ज्ञान और संतुलित मन आवश्यक है।

८.१.४ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण

“उस आमंत्रण में यह खूबी है कि आग्रह नहीं है, आग्रह तिरस्कार जगाता है। लेकिन ऊँचे बाजार का आमंत्रण मूक होता है और उससे चाह जागती है।”

संदर्भ : उपर्युक्त अवतरण डॉ. अनिल सिंह जी द्वारा संपादित पुस्तक 'निबंध विविधा' में संकलित निबंध 'बाजार दर्शन' से उद्धृत है। इसके निबंधकार जैनेन्द्र कुमार हैं।

प्रसंग : निबंधकार जैनेन्द्र कुमार जी ने अपने इस निबंध के माध्यम से बाजार की महिमा तथा उसमें होनेवाले छल-कपट का लेखा-जोखा प्रस्तुत किया है । उपभोक्तावादी संस्कृति तथा बाजारवाद पर तीखा कटाक्ष भी है।

व्याख्या : निबंधकार बाजार के जादू से अवगत कराते हुए कहते हैं कि बाजार में एक चुंबकीय आकर्षण होता है । जो ग्राहक को सहज ही अपनी ओर आकर्षित करता है । बाजार की चमक-दमक लोगों को एक मूक आमंत्रण देती है जिससे ग्राहक स्वयं उस ओर आकर्षित हो खींचा चला जाता है और अपने आप ही बाजार में बिक रही वस्तु का अभाव महसूस करने लगता है। जिस कारण उस वस्तु को खरीदने की चाह उस ग्राहक में प्रबल हो उठती है। फिर वह व्यक्ति उस वस्तु की खरीदारी किए बिना नहीं रह पाता।

विशेष : यहाँ मानव मन की दुर्बलता और बाजार द्वारा निर्मित प्रलोभन, आकर्षण का सटीक विशेषण हुआ है।

बोध प्रश्न -

१. बाजार दर्शन निबंध की कथावस्तु लिखिए |

२. बाजार दर्शन निबंध के विषय पर विवेचन कीजिए |

३. बाजार दर्शन आज की समस्याओं को उजागर करता है सिद्ध कीजिए |

वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

प्रश्न 1. कौन बुद्धिमान होते हैं ?

उत्तर : जो पैसा बहाते हैं वे बुद्धिमान होते हैं।

प्रश्न 2. किसका आमंत्रण मूक होता है ?

उत्तर : ऊँचे बाजार का आमंत्रण मूक होता है ?

प्रश्न 3. मन खाली होने पर मन तक किसका निमंत्रण पहुँच जाता है ?

उत्तर : मन खाली हो तो बाजार की अनेकानेक चीजों का निमंत्रण उस तक पहुँच जाता है।

प्रश्न 4. बाजार की असली कृतार्थता किसमें है ?

उत्तर : आवश्यकता के समय काम आना बाजार की असली कृतार्थता है।

प्रश्न 5. सच्चा कर्म सदा कैसा होता है ?

उत्तर : सच्चा कर्म सदा अपूर्णता की स्वीकृति के साथ होता है।

वैकल्पिक प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. बाजार एक क्या है ?

अ) पर्यटन ब) दुकान **क) जादू** ड) खेल

2. क्या खाली हो तो बाजार न जाओ ?

अ) मन ब) बटवा क) घर ड) दुकान

3. किस पर बाजार का जादू नहीं चल सकता ?

अ) बच्चों पर ब) ज्ञानी पर क) वृद्धों पर **ड) चूरनवाले भगतजी पर**

4. 'जो जानता है कि वह क्या चाहता है' वह मनुष्य बाजार को क्या देता है ?

अ) पैसे **ब) सार्थकता** क) ग्राहक ड) घाटा

८.२ पाप के चार हथियार - कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर

८.२.१ लेखक परिचय :

कन्हैयालाल मिश्र जी का जन्म 26 सितम्बर, 1906 को उत्तरप्रदेश के देवबन्द गाँव में हुआ। आप हिन्दी के कथाकार, निबन्धकार, पत्रकार तथा स्वतन्त्रता सेनानी थे। आपने पत्रकारिता में स्वतन्त्रता के स्वर को ऊँचा उठाया। आपके निबन्ध भारतीय चिन्तनधारा को प्रकट करते हैं। आपका सम्पूर्ण साहित्य मूलतः सामाजिक सरोकारों का शब्दांकन है। आपने साहित्य और पत्रकारिता को व्यक्ति और समाज के साथ जोड़ने का प्रयास किया है। मिश्र जी भारत द्वारा 'पद्मश्री' सम्मान से विभूषित हैं। आपकी भाषा सहज-सरल और मुहावरेदार है जो कथ्य को दृश्यमान और सजीव बना देती है। तत्सम शब्दों का प्रयोग भारतीय चिन्तन-मनन को अधिक प्रभावशाली बनाता है। आपका निधन 1995 में हुआ।

प्रमुख कृतियाँ : 'धरती के फूल' (कहानी - संग्रह), 'जिन्दगी मुस्कुराई' , 'बाजे पायलिया के घुँघरू', 'जिन्दगी लहलहाई', 'महके आँगन - चहके द्वार (निबन्ध-संग्रह), 'दीप जले, शंख बजे', 'माटी हो गयी सोना' (संस्मरण एवं रेखाचित्र) आदि। निबन्ध का अर्थ है- विचारों को भाषा में व्यवस्थित रूप से बाँधना है। हिंदी साहित्यशास्त्र में निबन्ध को गद्य की कसौटी माना गया है। निबन्ध विधा में जो पारंगत है वह गद्य की अन्य विधाओं को सहजता से लिख सकता है। निबन्ध विधा में वैचारिकता का अधिक महत्त्व होता है तथा विषय को प्रखरता से पाठकों के सम्मुख रखने की सामर्थ्य होती है।

८.२.२ प्रस्तावना :

मानव समाज में युगों-युगों से महापुरुषों का आविर्भाव विभिन्न रूपों में होता रहा है। ये सभी विचारक, संत, महात्मा के रूप में आते रहे हैं। वहीं समाज में पापी, दुष्कर्मी,

अपराधी प्रवृत्ति का वर्ग भी निरंतर बना रहा है। समाज के सुधारक महापुरुष समाज को इन दुष्प्रवृत्तियों से मुक्ति का मार्ग बतला रहे हैं और मानव समाज भी जाने-अनजाने उनका अनुसरण करता रहा है। पर महान सुधारकों की जयंती, उनके स्मारक हमें याद दिलाने के लिए एक स्मरण चिन्ह से अधिक नही रह गए हैं। हम उन्हें याद तो करते हैं पर उनके द्वारा दी गई शिक्षा को नहीं अपनाते, उनके आचरण को नहीं अपनाते। आखिर ऐसा क्यों होता है ? लेखक ने इसी प्रश्न का उत्तर खोजने का प्रयास इस निबन्ध के माध्यम से किया है।

८.२.३ व्याख्या/ समीक्षा :

पाप के चार हथियार के माध्यम से लेखक ने ज्वलंत सांसारिक, सामाजिक समस्या का विश्लेषण किया है। संसार में चारों ओर पाप, अन्याय और अत्याचार व्याप्त है। यदि कोई संत, महात्मा, पैगम्बर इनसे मुक्ति का मार्ग बतलाता है तो लोग उसकी बातों पर ध्यान नहीं देते, उसकी अवहेलना करते हैं, आलोचना करते हैं, इतना ही नहीं सुधार के प्रयास में सुधारक को अपनी जान से भी हाथ धोना पड़ता है।

लेखक के अनुसार समाज पीड़ित और पीड़क वर्ग में बँट गया है। इसके अतिरिक्त एक ऐसा भी वर्ग है जो मात्र मूक दर्शक बना हुआ है जब जैसी स्थिति होती है वह स्वयं को उसके अनुकूल बना लेता है। विपरीत स्थितियों के विरोध में सुधारक आते हैं। सुधार हेतु सत्य का संदेश देना चाहते हैं तो वह पीड़क वर्ग जिसे लेखक ने पाप का संबोधन दिया है सुधारक की उपेक्षा करता है, किंतु इसका सुधारक पर कोई असर न होता देख वह उसकी निंदा करना शुरू करता है। निंदा का असर यह होता है कि सुधारक का सत्य और भी तीव्र हो जाता है और वह अपने क्षेत्र को भी बदल देता है। सुधारक के इस कृत्य से बौखलाया पाप अपने तीसरे और भयानक शस्त्र का प्रयोग सत्य को पराजित करने के लिए करता है।

पाप का यह हथियार होता है हत्या। इतिहास के पन्नों में सुकरात, ईसा और दयानंद स्वामी के उदाहरण मिलते हैं। समाज सुधारक के अस्तित्व को ही समाप्त कर देने के कई उदाहरण हमारे इतिहास में दर्ज हैं। लेकिन यह हथियार भी सुधारक के प्रभाव को नहीं समाप्त करता। जिसे जीते जी नहीं स्वीकार किया, निरंतर विरोध किया, उस सुधारक की हत्या समाज में आक्रोश पैदा कर देती है और उस आक्रोश से बचने के लिए पाप, सुधारक का महिमागान करने लगता है। उसे बंदनीय कहकर उसके स्मारक बनवाकर, उसके सत्य को ग्रंथ, भाष्य, जयंती और पुण्यतिथि तक सीमित कर दिया जाता है। लोग उसकी व्याख्या तो करते हैं पर आचरण में नहीं लाते। अंततः होता यही है कि जहाँ से सुधारक ने आरंभ किया था वहीं इति हो जाती है यहीं सत्य की पराजय होती है। इस प्रकार श्रद्धा उसका अंतिम शस्त्र होता है।

जनमानस अपनी सोच बदलना नहीं चाहता, उपेक्षा, निंदा, हत्या और श्रद्धा का क्रमशः प्रयोग समाज में निरंतर चलता रहता है। सुधारक आते रहते हैं और पाप के हथियारों के शिकार बनकर चले जाते हैं, और रह जाती है उनकी समृतियाँ, पुतले और पुस्तकें। पाप और सुधार का यह खेल समाज में सदैव होता रहता है। जिस अन्याय अत्याचार और

बुरे कामों से सुधारक समाज को मुक्त करना चाहते हैं वे सब समाज में चलते रहते हैं। लेखक ने इस निबंध के माध्यम से सामाजिक विक्षोभ व्यक्त किया है और अंततः वह सत्य को पराजित मान लेता है। वह कहना चाहता है कि सुधारकों, महात्माओं आदि महान हस्तियों के जीवनकाल में उनके विचारों पर अमल करने से ही समस्याओं का समाधान होता है न कि उनके स्मारक, मंदिर बनाकर स्मरण मात्र करने से।

८.२.४ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण :

“जीवन अनुभवों का साक्षी है कि सुधारक के जो जितना समीप है, वह उतना ही बड़ा निंदक होता है। यही कारण है कि सुधारकों को प्रायः क्षेत्र बदलने पड़ते हैं।”

संदर्भ : उपर्युक्त अवतरण डॉ. अनिल सिंह जी द्वारा संपादित पुस्तक ‘निबंध विविधा' में संकलित निबंध ‘पाप के चार हथियार' से उद्धृत है। इसके निबंधकार कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर जी हैं।

प्रसंग : इस निबंध के माध्यम से निबंधकार यह बताना चाहते हैं कि, दुनिया में इतने महापुरुषों का जन्म हुआ, इतने अवतार हुए लेकिन अन्याय, अत्याचार, भ्रष्टाचार, पाप और दुष्कर्म कम होने की बजाए बढ़ता गया।

व्याख्या : निबंधकार बताते हैं कि, सुधारक समाज में व्याप्त पापों के खिलाफ अपनी आवाज बुलंद करता है। तब पहले लोग उनकी उपेक्षा करते हैं, परंतु जब उनकी बातों का प्रभाव पड़ने लगता है और वह समाज सुधाकर की बातों को सुनने के लिए विविश हो जाते हैं तो लोग सुधारक की निंदा करने लगते हैं। इस निंदा की शुरुवात सुधारक का सबसे समीप का ही व्यक्ति करता है। ऐसे में सुधारक को अपने कार्य वहीं स्थगित कर उस क्षेत्र से दूर हट जाना पड़ता है।

विशेष : यहाँ पाप के सर्वव्यापी प्रभाव का तथा सुधारकों द्वारा इस पाप को दूर करने के प्रयत्न और उनकी विफलता पर कटाक्ष हुआ है।

८.२.५ बोध प्रश्न :

१. पाप के चार हथियार निबंध समाज सुधार का एक प्रयास है समझाईए|

२. पाप के चार हथियार निबंध का सारांश लिखिए|

३. पाप के चार हथियार निबंध में समाज पीड़ित और पीड़क वर्ग के विभाजन को विस्तृत समझाइए|

८.२.६ वस्तुनिष्ठ/ लघुत्तरी प्रश्न :

वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

प्रश्न १. समाज किन वर्गों में बँट गया है ?

उत्तर : समाज पीड़ित और पीड़क वर्गों में बँट गया है।

प्रश्न २. पाप के चार शस्त्र कौन से हैं ?

उत्तर : पाप के चार शस्त्र हैं – उपेक्षा, निंदा, हत्या और श्रद्धा।

प्रश्न ३. सुधारक का सबसे बड़ा निंदक कौन होता है ?

उत्तर : सुधारक का सबसे बड़ा निंदक वही होता है जो उसके सबसे समीप होता है।

प्रश्न ४. सुधारक का सत्य किससे प्रखर हो जाता है ?

उत्तर : सुधारक का सत्य निंदा की रगड़ से प्रखर हो जाती है।

८.२.७ वैकल्पिक प्रश्न :

वैकल्पिक प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

१. जीवन की विडंबनाओं पर कौन चोट करता है ?

अ) शोषक ब) व्यवस्था **क) सुधारक** ड) परिस्थितियाँ

२. पाप के पास कितने शस्त्र हैं ?

अ) चार ब) तीन क) सात ड) पाँच

३. सुधारक किसके विरुद्ध झंडा बुलंद करता है ?

अ) गरीब ब) सरकार क) आडंबर **ड) पाप**

४. सुधारकों को प्रायः क्या बदलने पड़ते हैं ?

अ) चोला ब) घर **क) क्षेत्र** ड) शिष्य

❖❖❖❖

९

निबंध विविधा (निबंध संग्रह)

मनुष्य की सर्वोत्तम कृति : साहित्य

हिम्मत और ज़िंदगी

इकाई की रूपरेखा :

९.० इकाई का उद्देश्य

९.१ प्रस्तावना

९.२ मनुष्य की सर्वोत्तम कृति : साहित्य

- ९.२.१ लेखक परिचय
- ९.२.२ व्याख्या/ समीक्षा
- ९.२.३ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण
- ९.२.४ बोध प्रश्न
- ९.२.५ वस्तुनिष्ठ / लघुत्तरी प्रश्न
- ९.२.६ वैकल्पिक प्रश्न

९.३ हिम्मत और ज़िंदगी

- ९.३.१ लेखक परिचय
- ९.३.२ व्याख्या/ समीक्षा
- ९.३.३ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण
- ९.३.४ सारांश
- ९.३.५ बोध प्रश्न
- ९.३.६ वस्तुनिष्ठ / लघुत्तरी प्रश्न
- ९.३.७ वैकल्पिक प्रश्न

९.० इकाई का उद्देश्य

इकाई में हम निबंध विविधा (निबंध संग्रह) के दो निबंध संग्रह का अध्ययन करेंगे पहला निबंध है- मनुष्य की सर्वोत्तम कृति साहित्य (हजारी प्रसाद द्विवेदी),और दूसरा निबंध है हिम्मत और जिंदगी (रामधारी सिंह दिनकर)| इस इकाई के अध्ययन से विद्यार्थी निम्न लिखित मुद्दों से अवगत होंगे –

*लेखक का परिचय जान सकेंगे |

* निबंध की विस्तार से समीक्षा कर सकेंगे |

* निबंध के कुछ अंश की संदर्भ सहित व्याख्या कर सकेंगे |

९.१ प्रस्तावना

हिन्दी साहित्य को अमूल्य योगदान देनेवाले आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदीजी की रचनाओं में भारतीय संस्कृति और साहित्य के विविध रूपों का विचारात्मक और आलोचनापरक स्वरूप दिखलाई देता है। आलोचना के क्षेत्र में इनका महत्त्वपूर्ण स्थान है। इनके साहित्य में मानवता का परिशीलन सर्वत्र दिखाई देता है।

भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' जी का हिन्दी साहित्य में महत्त्वपूर्ण स्थान है। 'संस्कृति के चार अध्याय' उनकी कालजयी रचना मानी जाती है। दिनकर जी की रचनाओं में सामाजिक और आर्थिक शोषण के विरोधी स्वर दिखाई देते हैं। राष्ट्रवाद और प्रगतिवाद के साहित्यिक आंदोलनों से जुड़े दिनकर जी की रचनाओं में जोश और राष्ट्रीयता का भाव है। हिम्मत और जिंदगी निबंध में लेखक ने जीवन में दुःख और संघर्ष को महत्त्व देते हुए उसे ही जीवन की अर्थवत्ता समझने में सहायक माना है।

९.२ मनुष्य की सर्वोत्तम कृति : साहित्य - आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी

९.२.१ लेखक परिचय :

प्रसिद्ध आलोचक और निबंधकार आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी का जन्म बलिया के आरत दूबे का छपरा नामक गाँव में 19 अगस्त, 1907 को हुआ था। प्रारम्भिक शिक्षा स्थानीय गाँव से सम्पन्न होने के उपरांत वे उच्च अध्ययन के लिए काशी आए और काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से उच्च शिक्षा हासिल की थी। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ज्योतिष शास्त्र में पीएच.डी. कर वहीं प्राध्यापक नियुक्त हुए। कुछ वर्षों तक काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में अध्यापन करने के बाद फिर स्थानीय राजनीति के शिकार हुए और विश्वविद्यालय से बाहर निकाल दिए गए। उसके बाद उन्हें आसरा मिला रवीन्द्रनाथ टैगोर द्वारा स्थापित विश्वभारती में। वहीं उन्होंने अपने अध्यापन जीवन का अधिकांश हिस्सा व्यतीत किया। रवीन्द्रनाथ टैगोर की छत्रछाया में उनकी प्रतिभा खूब निखरी, फली-फूली। सूर और कबीर की आलोचनात्मक पुस्तक उन्होंने विश्व भारती के प्रांगण में ही लिखी। कबीर को आज जो मुकम्मल स्थान हासिल हो सका है, उसमें आचार्य द्विवेदी के 'कबीर' नामक पुस्तक की भूमिका बेहद महत्त्वपूर्ण रही है।

'हिन्दी साहित्य की भूमिकाएँ', 'हिन्दी साहित्य : उद्भव और विकास', 'हिन्दी साहित्य का आदिकाल' नामक तीन इतिहास की पुस्तकें लिखकर उन्होंने न केवल आचार्य रामचन्द्र शुक्ल की स्थापनाओं को चुनौती दी थी बल्कि साहित्येतिहास की दृष्टि को नये सिरे से व्यापक बनाया था। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी का निबंध विधा के विषय में अहम

योगदान रहा है। उन्होंने ललित निबंधों की दुनिया में साक्षात्कार का उद्घोष किया तो दूसरी तरफ 'भारतीय चिंता का स्वाभाविक विकास' करवाया।

हजारी प्रसाद द्विवेदी का निबंध अशोक के फूल (1948), कल्पलता (1951), विचार और वितर्क (1954), कुटज (1964) और आलोक पर्व (1977) इनके प्रसिद्ध निबंध संग्रह हैं । इनके निबंधों में भारतीय संस्कृति, इतिहास, परम्पराएँ, लोकजीवन का घुलामिला अद्भुत रूप दिखाई पड़ता है । हजारी प्रसाद द्विवेदी के चार उपन्यास भी प्रकाशित हुए हैं- बाणभट्ट की आत्मकथाएँ (1946), चारु चंद्रलेख (1963), पुनर्नवा (1973) और अनाम दास का पोथा (1976) । ये चारों उपन्यास हिन्दी उपन्यास की विकास यात्रा के मील का पत्थर साबित हुए हैं । साहित्य के क्षेत्र में अमूल्य तथा अविस्मरणीय योगदान के लिए आचार्य द्विवेदी को पद्म भूषण, साहित्य अकादमी आदि सम्मानों से नवाजा गया।

९.२.२ व्याख्या/ समीक्षा:

साहित्य को मनुष्य की सर्वोत्तम कृति मानते हुए द्विवेदी जी मानव जीवन में सामंजस्य को महत्त्व देते हैं और उसी को जीवन की सुंदरता भी मानते हैं, इसके लिए वे मनुष्य की आकांक्षाओं की अभिव्यक्ति के तौर-तरीकों को महत्त्वपूर्ण मानते हैं । जैसे एक सफल चित्रकार कुशलतापूर्वक रंगों का प्रयोग करता है, उसी प्रकार साहित्य का लेखन, पठन, अध्ययन, अध्यापन इत्यादि क्रियाएँ मनुष्य के भीतर मनुष्यता और सामंजस्य का अनुपात बनाती हैं। जहाँ अन्य कलाएँ काल विशेष तक सीमित रहती हैं, साहित्य सदा के लिए होता है। साहित्य और कला हमें जीवन की बेहतर समझ देते हैं। लेखक साहित्य को अन्य कलाओं की तुलना में श्रेष्ठ मानते हैँ। हालाँकि साहित्य रचना हर किसी के वश की बात नहीं है पर साहित्य का अध्ययन तो अधिकाँश लोग करते ही हैं। धन से संपन्न व्यक्ति अपनी धन संबंधी जरूरतें पूरी कर सकता है। धन से दूसरों की सहायता भी कर सकता है किंतु आवश्यक नहीं कि उसके कर्म और विचार समाज के लिए सही हो, उसके कार्य स्मरणीय हों। धर्म संबंधी दान-दाताओं के भी स्मृति चिन्ह लगाए जाते हैं, लोग उन्हें पढ़ते हैं फिर भूल जाते हैं।

साहित्य के विषय में ऐसा नहीं होता। साहित्य मनुष्य के मन में सद्प्रवृत्तियों को जगाने का कार्य करता है । यही सद्प्रवृत्तियाँ व्यक्ति में सामंजस्य के भाव को जन्म देती हैं । सामंजस्य से परिपूर्ण व्यक्ति ही समाज में उत्थान कार्य करता है और संसार में अपनी अमूल्य स्मृतियाँ छोड़कर जाता है।

सामंजस्य को महत्त्वपूर्ण बतलाते हुए लेखक ने जीवन में उच्छृंखलता और सौंदर्यबोध के अंतर को भी समझाया है। वर्तमान सामाजिक स्थिति को देखते हुए उचित और अनुचित सौंदर्यबोध के मानदण्ड बदले हुए दिखाई देते हैं। साहित्य का अध्ययन इसके अंतर को सही रूप में समझाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। अतः साहित्य समाज के कल्याण के लिए आवश्यक है इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए लेखक ने साहित्य को मनुष्य की सर्वश्रेष्ठ कृति माना है । मनुष्य में इच्छा है और उसे मूर्त रूप देने का सामर्थ्य भी है । जबकि मनुष्येतर प्राणी में यह नहीं है। मनुष्य की इच्छा का सुंदर और हितकारी होना

आवश्यक है जैसे प्रकृति में रंगों का सामंजस्य सुंदर दिखाई देता है। विसंगतियों से परे होता है। लेकिन श्मशान में पड़ी चिताभस्म और नदी में पड़ी गलिच्छ सामग्री वीभत्स होती है क्योंकि वहाँ किसी प्रकार का सामंजस्य नहीं होता।

जिस प्रकार कुशल चित्रकार रंगों के प्रभावशाली संयोजन की जानकारी रखता है ठीक उसी प्रकार लेखक इस संसार को विशाल कलाकृति के रूप में देखता है और उसमें व्याप्त भद्देपन को, कुरुपताओं को दूर करने के लिए साहित्य की रचना को सार्थक मानता है। साहित्य मानव जीवन में छोटी-छोटी चीजों में सामंजस्य की शुरुआत करता है और धीरे-धीरे सामंजस्य कर पाने की क्षमता विकसित होती है। सामंजस्य पूर्ण जीवन ही सार्थक है, विभिन्न जातियों में मनुष्यता का परिणाम उनकी निजी और सामाजिक जीवन शैली से जुड़ा होता है। जो जाति साहित्य के सर्वोत्तम रूप को समझ लेती है वही मनुष्यता के सर्वोत्तम रूप को भी समझ सकती है।

जिसके पास पैसा है, समय है, सहृदयता है वह दान-पुण्य कर सकता है पर वह कब किसे और कैसे करना चाहिए ये कुछ ही लोग जानते हैं। दान-पुण्य भले ही अच्छा हो पर लेखक के अनुसार वह चीज ज्यादा अच्छी है जो मनुष्य को पशु समान वृत्तियों से परे ले जाए और यह कार्य साहित्य करता है अतः वह श्रेष्ठ है। लेखक ने इस संदर्भ में ग्रीक संस्कृति का उदाहरण दिया है। ग्रीक संस्कृति आज भी संसार में श्रेष्ठ मानी जाती है, इसका श्रेय लेखक, ग्रीक साहित्य को देते हैं। ग्रीक संस्कृति में साहित्य और कला का प्रभाव है। जबकि इटली की संस्कृति में पशुता और बर्बरता के लक्षण हैं। इससे यही साबित होता है कि किसी भी जाति के उत्कर्ष और अपकर्ष से उस जाति विशेष के साहित्य का पता चलता है। हमारे देश में भी गुप्तकालीन साहित्य और अठारहवीं शताब्दी में रचित साहित्य में ऐसा ही अन्तर दिखलाई देता है। लेखक रूसी साहित्य को सामंजस्य की दृष्टि से श्रेष्ठ मानते हैं।

विषय के अनुकूल परिमार्जित भाषा और वर्णनात्मक शैली में लेखक ने साहित्य को मनुष्य की सर्वश्रेष्ठ कृति मानते हुए जटिलताओं में उलझे मानव को सामंजस्य की ओर ले जाने के लिए साहित्य को ही सात्विक और श्रेष्ठ माना है।

९.२.३ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण:

“सारे मानव समाज को सुन्दर बनाने की साधना का नाम साहित्य है। सौन्दर्य को ठीक से समझने से ही आदमी सौन्दर्य का प्रशंसक और सृष्टा बन सकता है।”

संदर्भ : उपर्युक्त अवतरण डॉ. अनिल सिंह जी द्वारा संपादित पुस्तक ‘निबंध विविधा' में संकलित निबंध ‘मनुष्य की सर्वोत्तम कृति' से उद्धृत है। इसके निबंधकार आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी जी हैं।

प्रसंग : साहित्य को मनुष्य की सर्वोत्तम कृति मानते हुए द्विवेदीजी मानव जीवन में सामंजस्य को महत्व देते हुए उसी को जीवन की सुंदरता भी मानते हैं।

व्याख्या : लेखक का मानना है कि साहित्य एक तरह से साधना है। यह ऐसी साधन है जिसने सारे मानव समाज को सुन्दरता प्रदान की है। साहित्य और कला मनुष्य को ज्यादा सुन्दर, ज्यादा बेहतर बनाने में सहायक होती है। लेखक का मानना है कि साहित्य जीवन की सुंदरता को समझने में सहायक होती है। और जो मनुष्य अधिक सौन्दर्य प्रेमी होगा, जीवन के सौन्दर्य को ठीक से समझने का प्रयास करेगा, उसमें मनुष्यता भी अधिक होगी। वही सुंदरता को पहचान सकता है और वही सौन्दर्य की गढ़ना भी जान सकता है।

विशेष : प्रस्तुत निबंध द्वारा लेखक (निबंधकार) जीवन में साहित्य के महत्व का प्रतिपादन करता है।

९.२.४ बोध प्रश्न :

१. हजारी प्रसाद द्विवेदी जी का परिचय देते हुए मनुष्य की सर्वोत्तम कृति साहित्य निबंध की समीक्षा कीजिए |

२. मनुष्य की सर्वोत्तम कृति साहित्य निबंध में साहित्य को किस प्रकार दर्शाया गया है | समझाइए |

९.२.५ वस्तुनिष्ठ/ लघुत्तरी प्रश्न :

वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

प्रश्न 1. मनुष्य जगत में विकास कैसे किया गया ?

उत्तर : मनुष्य जगत में विकास प्रयत्नपूर्वक किया गया।

प्रश्न 2. सौंदर्य किसमें होता है ?

उत्तर : सौदर्य सामंजस्य में होता है।

प्रश्न 3. किसका नाम साहित्य है ?

उत्तर : सारे मानव समाज को सुंदर बनाने की साधना का नाम साहित्य है।

प्रश्न 4. साहित्य द्वारा किसी जाति के बारे में क्या पता लगता है ?

उत्तर : साहित्य द्वारा किसी जाति के उत्कर्ष और अपकर्ष का पता लगता है।

९.२.६ वैकल्पिक प्रश्न :

वैकल्पिक प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. सभी मनुष्य स्वभाव से ही क्या होते है?

अ) साहित्य प्रेमी ब) साहित्यकार क) कवि ड) लेखक

2. सुंदरता को तलाश करने की शक्ति किसके द्वारा प्राप्त होती है?

अ) गहनों ब) वंदना **क) साधना** ड) आँखों के द्वारा

3. मनुष्य की सर्वोत्तम कृति क्या है?

अ) मूर्ति **ब) साहित्य** क) चित्र ड) इमारत

4. निबंध में साहित्य का अर्थ किससे है?

अ) कविता ब) गद्य क) कला **ड) सात्विक चिंता धारा**

९.३ हिम्मत और जिंदगी : रामधारी सिंह 'दिनकर'

९.३.१ लेखक परिचय:

रामधारी सिंह 'दिनकर' का जन्म बिहार स्थित मुंगेर जिले के सिमरिया घाट नामक गाँव में 23 सितम्बर, 1908 को हुआ था। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा-दीक्षा घर पर ही हुई थी। मैट्रिक की परीक्षा में इन्हें हिन्दी विषय में सबसे ज्यादा अंक प्राप्त हुए, इस उपलब्धि के लिए इन्हें 'भूदेव' नामक स्वर्ण पदक प्राप्त हुआ था। बी.ए. की परीक्षा पटना से उत्तीर्ण करने के बाद एक स्कूल में प्रधानाचार्य के पद पर नियुक्त हुए। जल्दी ही उन्होंने इस नौकरी को छोड़ दिया। फिर इन्हें सीतामढ़ी में रजिस्ट्रार के पद पर नियुक्ति मिली। बाद में रामधारी सिंह दिनकर भागलपुर विश्वविद्यालय के कुलपति बनाए गए। वे सन् 1952 से 1963 के राज्यसभा के सदस्य भी रहे। रामधारी सिंह दिनकर की ख्याति कविता विधा में खूब हुई थी।

रेणुका, हुंकार, रसवंती, सामधेनी, उर्वशी, रश्मिरथी, परशुराम की प्रतीक्षा काव्य कृतियों के माध्यम से हिन्दी साहित्य के संसार में दिनकर प्रसिद्ध रचनाकार के रूप में स्थापित हुए। इनकी कविता में राष्ट्र प्रेम का ओजपूर्ण और क्रांतिकारी स्वर मुखर रूप से अभिव्यक्त हुआ। इस कारण ही इन्हें 'राष्ट्र कवि' का दर्जा हासिल हुआ। रामधारी सिंह 'दिनकर' ने प्रचुर मात्रा में गद्य लेखन भी किया। 'संस्कृति के चार अध्याय' उनकी कालजयी रचना में शुमार हैं।

निबंध संग्रह - शुद्ध कविता की खोज, साहित्योमुखी, काव्य की भूमिका, मिट्टी की ओर, अर्धनारीश्वर शीर्षक से प्रकाशित हुए हैं। इनके निबंध वैचारिक तथा समीक्षापरक हैं। रामधारी सिंह दिनकर को साहित्य सेवा में अविस्मरणीय योगदान के लिए पद्म भूषण की उपाधि से नवाजा गया। इन्हें प्रतिष्ठित भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार तथा साहित्य अकादमी पुरस्कार भी प्राप्त हुआ। हिन्दी भाषा के सबसे मुखर आवाज और अपने समय का सूर्य 24 अप्रैल, 1974 को देह त्यागकर इस संसार से विदा हो गए।

९.३.२ व्याख्या/ समीक्षा:

लेखक के अनुसार जीने की सार्थकता तभी है जब व्यक्ति में हिम्मत हो, साहस हो। साहसी होना बेहतर जिंदगी की पहली शर्त है। हालाँकि हिम्मत और साहस जिंदगी में मुश्किलें भी लाता है पर लेखक के अनुसार हिम्मती व्यक्ति मुश्किलों से नहीं डरता, मुश्किलों का सामना डटकर करना और आगे बढ़ना उसके लिए वह जीवन का एक हिस्सा है। अनेक घटनाओं का उल्लेख करते हुए लेखक श्रम और कष्ट को ही जीत का सेहरा पहनाते हैं। बड़े मकसद को पाने के लिए बड़े संघर्षों की तैयारी भी रखनी चाहिए। जो व्यक्ति जीवन में विपरीत स्थितियों का सामना करता है वही जीवन के मर्म को समझ सकता है। सुख-सुविधाओं में जीने वाला व्यक्ति न तो काम के महत्त्व को जानता है और न ही प्रकृति के। एक ऊँचे मकसद को लेकर जीना उसे पूरा करना हिम्मत वालों का काम है। चाहे जितने रोड़े, कष्ट, परेशानियाँ जीवन में आएँ, निडरता से हर स्थिति का मुकाबला करते हुए आगे बढ़ना ही जिंदगी है। लेकिन हर किसी के बस की यह बात नहीं होती है।

लेखक ने एक और भी जीवन शैली का वर्णन किया है जिसे वह गोधूली में जीनेवाली आत्मा का संबोधन देते हैं। ऐसे व्यक्ति निर्लिप्त भाव से जीनेवाले होते हैं हर जीत और हार में समभाव रखने वाले किसी भी प्रकार की खुशी और साहस के बगैर दोनों ही स्थितियों में समभाव रखनेवाले सुस्त से लोग। ऐसे लोगों के पास कोई मकसद नहीं होता न ही वे जीवन को पूर्णता में जीते है न बहुत सुखी न दुखी। ये झुंड में चलने वाले लोग भेड़ चाल के होते हैं जबकि साहसी व्यक्ति अकेला भी निडर होता है। खतरों से बचने का प्रयास व्यक्ति को एक दायरे में सीमित कर देता है। जिंदगी के सही मायने उसे नहीं मिलते।

जनमत को ही महत्ता देनेवाला व्यक्ति अक्सर सही फैसलों से चूक जाता है। दूसरों का अनुगमन ही करता रहता है, अपनी कोई राह नहीं बना पाता न ही पहचान। जीवन में न जीत है न हार। इसलिए ऐसे लोगों को लेखक ने गोधूलि में जीनेवाला कहा है जैसे एक सुनिश्चित समय पर अपने ठिकाने निकलकर, शाम ढले वहीं लौट आना पशुओं का नित्य का काम है। कुछ इसी तरह की जीवनशैली कुछ मनुष्यों की भी होती है। लेखक इसे जीने का सही तरीका नहीं मानते, यह कोई जिंदगी नहीं है। जनमत की उपेक्षा करके अपनी पहचान बनाना साहस का काम है। साहसी व्यक्ति किसी की नकल नहीं करता, कायर नहीं होता। धूप में तपकर चाँदनी की शीतलता को पूरी शिद्दत के साथ महसूस करना, सुखों का मूल्य पहले काम से, हिम्मत से साहस से चुकाना फिर उसका अनुभव करना, संकट की घड़ियों में हताश हुए बिना संयम से जीना ही जिंदगी को हिम्मत के साथ जीना है। बड़ी चुनौतियों को झेलकर ही बड़ी हस्तियाँ बनती हैं।

लेखक ने महाभारत में पांडवों की जीत का श्रेय उनके द्वारा चुनौतियों से लड़ने के साहस को दिया है। जबकि कौरव राजसी जीवन जीते हुए भी आत्मसाहस की कमी से हारे। लेखक ब्रिटिश नेता विन्सेंट चर्चिल का उल्लेख देते हुए उनके कथन का समर्थन करते हैं कि जिंदगी की सबसे बड़ी खूबी हिम्मत होती है। इंसान में सारे गुण उसके हिम्मती होने

से ही पैदा होते हैं । मनुष्यता को साहसी व्यक्ति ही जीवित रखता है । जीवन की चुनौतियों को स्वीकार न कर पाने वाले सुख का अनुभव नहीं कर सकते। ऐसे लोग स्वयं को हारा हुआ महसूस करते हैं, जितनी पूँजी लगाते हैं, जिन्दगी से उतना ही पाते हैं। यह पूँजी लगाना जीवन में संकटों का सामना करना है, जिसके लिए साहस का होना जरूरी है।

जो जीवन के अंतिम क्षण तक हार न माने, अपने संकल्प पर डटा रहे, दुनिया नहीं बल्कि अपने मकसद को पहचान कर उसके साथ जिये वही सच्चा शूर है । मनुष्य के पास अथाह शक्ति है लेखक इसी सत्य की ओर संकेत करते हैं कि मन, विचार और संकल्प की शक्ति अनन्त है, जरूरत है उसे पहचानने की, उसका निर्भय होकर उपयोग करने की ओर अपने संकल्प को दृढ़ रखने की तभी वह सार्थक होगी। कष्ट सहने की हिम्मत, भोगी बनकर भोगना नहीं बल्कि त्याग के साथ भोगना है। यही हमारे उपनिषद् भी कहते हैं।

९.३.३ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण:

"साहसी मनुष्य की पहली पहचान यह है कि वह इस बात की चिंता नहीं करता कि तमाशा देखने वाले लोग उसके बारे में कया सोच रहे हैं।"

संदर्भ : उपर्युक्त अवतरण डॉ. अनिल सिंह जी द्वारा संपादित पुस्तक 'निबंध विविधा' में संकलित निबंध 'हिम्मत और जिंदगी' से उद्धृत है। इसके निबंधकार रामधारी सिंह दिनकर जी हैं।

प्रसंग : इस निबंध के माध्यम से निबंधकार बताते हैं कि जीवन का सुख वही मनुष्य भोगता है जो हिम्मती होता है। वे मनुष्य को साहसी बनने की प्रेरणा देते हैं।

व्याख्या : निबंधकार का मानना है कि साहसी व्यक्ति को ही जीवन का असली रस प्राप्त होता है। साहसी लोग तमाशा देखने वालों की परवाह नहीं करते हैं। जो व्यक्ति अपने सपनों को पूरा करने करने के लिए अपने ही धुन में लगे रहते हैं, उन्हें इस बात की चिंता नहीं रहती है कि लोग उनके बारे में क्या सोचेंगे। वे बस अपने काम को पूरा करने में लगे रहते हैं साथ ही उस काम को पूर्ण करने में आनेवाली हर मुसीबत का साहस के साथ डँटकर सामना करते हैं और कार्य पूरा करके ही दम लेते हैं।

विशेष : यहाँ निबंधकार ने हिम्मत और साहस से जीवन जीने की शर्त को ही जीवन की सार्थकता माना है।

९.३.४ सारांश :

इकाई में हमने निबंध विविधा (निबंध संग्रह) के दो निबंध संग्रह के दो निबंध का अध्ययन किया | आशा है कि इस इकाई के अध्ययन से विद्यार्थी लेखक का परिचय जान सकें,निबंध की विस्तार से समीक्षा कर सकें,निबंध के कुछ अंश की संदर्भ सहित व्याख्या से अवगत हुए होंगे –

९.३.५ बोध प्रश्न:

१. निबंधकार ने हिम्मत और साहस से जीवन जीने की शर्त को ही जीवन की सार्थकता माना है। विस्तार से समझाइए |

२. हिम्मत और जिंदगी निबंध की समीक्षा कीजिए |

३. हिम्मत और जिंदगी निबंध का उद्देश्य की विस्तृतता पर प्रकाश डालिए |

९.३.६ वस्तुनिष्ठ/ लघुत्तरी प्रश्न :

वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

प्रश्न १. जिंदगी के असली मजे किसके लिए नहीं हैं ?

उत्तर : जिंदगी के असली मजे उसके लिए नहीं है जो फूलों के छाँह से नीचे खेलते और सोते हैं।

प्रश्न २. किनके लिए आराम ही मौत है ?

उत्तर : जिन्हें आराम आसानी से मिल जाता है उनके लिए आराम ही मौत है ?

प्रश्न ३. मोती लेकर बाहर कौन आयेंगे ?

उत्तर : लहरों में तैरने का जिन्हें अभ्यास है वो मोती लेकर बाहर आयेंगे।

प्रश्न ४. जिंदगी से अंत में हम कितना पाते हैं ?

उत्तर : जिंदगी से अंत में हम उतना ही पाते हैं जितनी उसमें पूँजी लगाते हैं ?

प्रश्न ५. अड़ोस-पड़ोस को देखकर चलना यह किसका काम है ?

उत्तर : अड़ोस-पड़ोस को देखकर चलना यह साधारण जीव का काम है ?

९.३.७ वैकल्पिक प्रश्न :

वैकल्पिक प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

१. निबंध के अनुसार हम किसका मूल्य पहले चुकाते हैं ?
अ) सुखों का ब) वस्तु का क) भोजन का ड) प्रकृति का

२. उपवास और संयम किसके साधन नहीं हैं ?

अ) तपस्या के **ब) आत्महत्या के** क) योग के ड) आहार के

३. बड़ी चीजें किसमें विकास पाती हैं?

अ) बड़ी चीजों में ब) धन में **क) बड़े संकटों में** ड) बड़े लोगों में

४) जिंदगी की कितनी सूरते हैं?

अ) एक ब) चार क) तीन **ड) दो**

❖❖❖❖

१०

निबंध विविधा (निबंध संग्रह)

अगर मुल्क में अखबार न होते

रसायन और हमारा पर्यावरण

इकाई की रूपरेखा:

१०.० इकाई का उद्देश्य

१०.१ प्रस्तावना

१०.२ अगर मुल्क में अखबार न होते

१०.२.१ लेखक परिचय - नामवर सिंह

१०.२.२ व्याख्या/ समीक्षा

१०.२.३ संदर्भसहित स्पष्टीकरण

१०.२.४ बोध प्रश्न

१०.२.५ वस्तुनिष्ठ / लघुत्तरी प्रश्न

१०.२.६ वैकल्पिक प्रश्न

१०.३ रसायन और हमारा पर्यावरण

१०.३.१ लेखक परिचय - डॉ. एन. एल. रामनाथन

१०.३.२ व्याख्या/ समीक्षा

१०.३.३ संदर्भसहित स्पष्टीकरण

१०.३.४ बोध प्रश्न

१०.३.५ वस्तुनिष्ठ / लघुत्तरी प्रश्न

१०.३.६ वैकल्पिक प्रश्न

१०.० इकाई का उद्देश्य

इस इकाई में हम निबंध विविधा (निबंध संग्रह) के दो निबंध का अध्ययन करेंगे पहला है अगर मुल्क में अखबार न होते (नामवर सिंह) और दूसरा है रसायन और हमारा पर्यावरण

(डॉ. एन. एल. रामनाथन) विद्यार्थी दोनों निबंधों के लेखक का परिचय जान सकेंगे | निबंध का समीक्षात्मक अध्ययन कर सकेंगे |

१०.१ प्रस्तावना

हिंदी साहित्य में नामवर सिंह को हिंदी आलोचना का शलाका पुरुष कहा गया है, और उनकी आलोचना को जीवंत आलोचना। इनकी रचनाओं में आधुनिकता के साथ-साथ पारंपरिकता के भी दर्शन होते हैं। 'अगरमुल्क में अखबार ना हों' निबंध इनकी अन्य रचनाओं से कुछ अलग है। अखबार का दैनंदिन जीवन में महत्वपूर्ण स्थान है। यह सामान्य ज्ञान और शिक्षा के प्रसार का शक्तिशाली माध्यम है। इस निबंध के माध्यम से लेखक ने अखबार को लेकर लोगों की वर्तमान सोच को उजागर किया है या यूं कहें तो अखबार की वर्तमान स्थिति को प्रेषित किया है।

डॉ.एन.एल. रामनाथन पेशे से वैज्ञानिक हैं। इन्होंने भौतिकी एवं पर्यावरण के क्षेत्रमें महत्त्वपूर्ण शोधकार्य किया है। 'रसायन औरहमारा पर्यावरण' निबंध में लेखक ने रसायन का प्रयोग और दवाइयों के निर्माण में रासायनिक यौगिकों की भूमिका पर चर्चा की है। साथ ही मानव जीवन पर इन रसायनों के प्रभाव एवं दुष्प्रभावों को उदाहरण सहित प्रस्तुत किया है।

१०.२ अगर मुल्क में अखबार न होते - नामवर सिंह

१०.२.१ लेखक परिचय :

नामवर सिंह का जन्म 25 जुलाई, 1926 को जीयनपुर, बनारस, उत्तरप्रदेश में हुआ था। वे हिन्दी आलोचना के 'शलाका पुरुष' थे। लगभग पाँच दशक तक हिन्दी आलोचना के शीर्ष परकायम रहे। बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय से एम.ए. करने के बाद वहीं अध्यापन के लिए नियुक्त हुए। वहाँ कुछ ही वर्षों अध्यापन किए थे कि 1959 मेंच किया चन्दौली लोकसभा क्षेत्र से भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के टिकट से चुनाव लड़ गए। एक तरफ उन्हें उस चुनाव में हार का मुँह देखना पड़ा, दूसरी तरफ विश्वविद्यालय प्रशासन ने उन्हें नौकरी से बाहर का रास्ता दिखा दिया। इसके बाद वे कई वर्षों तक अध्ययन में लगे रहे, फिर सागर विश्वविद्यालय में उनकी नियुक्ति हुई। वहाँ भी ठहर न सके। जोधपुर विश्वविद्यालय में प्रोफेसर के पद पर नियुक्ति हुई। यहाँ भी लम्बे समय तक नहीं रहे। जवाहरलाल विश्वविद्यालय में उन्हें राहत मिली। एक तरह से जे एन यू का भाषा अध्ययन केन्द्र बनाने का अवसर उन्हें मिला। अपनी अकूत प्रतिभा और योग्यता के बल पर उन्होंने देश को सबसे बेहतरीन केन्द्र के रूप में स्थापित किया। लम्बे समय तक वे 'आलोचना' पत्रिका के सम्पादक भी रहे। आलोचना के क्षेत्र में नामवर सिंह का बहुत सम्मान है। 'इतिहास और आलोचना', 'आधुनिक साहित्य की प्रवृत्तियाँ', 'छायावाद', 'नई कहानी', 'कविता के नए प्रतिमान', 'दूसरी परम्परा की खोज' जैसी प्रमुख आलोचनात्मक ग्रंथों के जरिये उन्होंने आलोचना विधा को मुखर किया। इन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार जैसे अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। 19 फरवरी, 2019 को इनका निधन हुआ।

१०.२.२ व्याख्या/ समीक्षा:

किसी जमाने में महत्वपूर्ण सूचनाओं के प्रचार-प्रसार हेतु प्रकाशित होने वाले अखबार आज सार्वभौमिक सूचना का माध्यम बन गए हैं। अखबार के विषय में हर किसी की अपनी धारणा बन गई है। कुछ लोग अखबार में छपी खबरों को पढ़कर दिनभर उसी की चर्चा करते रहते हैं, वहीं कुछ अखबार पढ़ने में विश्वास नहीं करते, एक और भी पाठकों की श्रेणी होती है जो अखबारों के समाचार से अपने ज्ञान और स्थान के अनुरूप व्याख्या करते रहते हैं।

लेखक भी सोच में पड़ जाता है। जब वह अपने गाँव के मुंशीजी के पास अखबार पढ़ने के लिए जाता है और उसे उत्तर मिलता है कि कुछ खास नहीं है। अखबार में दूसरी ओर चौधरी कोभी यही उत्तर मिलता है। अखबार के बारे में एक विचित्र तरीका समाज में प्रचलित है, वह है स्वयं ना खरीदकर दूसरों से मांगकर अखबार पढ़ना। चौधरी जी भी इसी श्रेणी में आते हैं। उन्हें अखबार के विज्ञापन युवाओं को भटकाने वाले लगते हैं, तो प्रधानमंत्री का भाषण विज्ञापन लगता है। चौधरी जी अखबार को पैसेवालों, सत्ताधारी, राजनीति और विज्ञापन का प्रचार माध्यम मानते हैं, और यह काफी हद तक सच है। अखबारों में विज्ञापन, दुकान, मकान, गाड़ी, वस्त्र, किराना तक सब कुछ बेचने कामाध्यम बना हुआ है। जिससे कई लोगों की रोजी-रोटी का भी प्रबंध होता है। शिक्षक, शिक्षार्थी, घरेलू महिलाएं, बुजुर्ग हर किसी के लिए कुछ ना कुछ होता है, यहाँ तक कि कानूनी और स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं के हल भी मिलते हैं।

लेखक के अनुसार अखबार की एक और विशेषता उसके नाम को लेकर होती है। उसे जन से जुड़ा जाकर जनमत का वाहक कहा जाता है। जनकल्याण के लिए माना जाता है पर देखा गया है कि अधिकांश अखबार व्यक्ति प्रधान हैं। इन पर भी धनाढ्य वर्ग का प्रभाव दिखाई देता है। सत्ता और प्रसिद्धि की चाह में अखबार प्रकाशित करवाना, अपनी मर्जी के अनुसार समाचार छपवाना इनका शौक बन गया है। लेखक को परेशानी इस बात से है कि अखबारों के मालिक अल्प शिक्षित या अशिक्षित होते हैं, और पढ़े-लिखे सुशिक्षित व्यक्तियों को अपने इशारों पर चलाते हैं। यहीं लेखक के मन में प्रश्न उठता है कि स्थिति का भविष्य क्या होगा। उसे अखबार से ही पता चलता है कि अखबारों पर भी सामंती सत्ता का प्रभाव है। जो जनमत के नाम पर भ्रम फैलाने का कामकर अपना स्वार्थ साध रहे हैं। ऐसे लोग अपने अखबार की गुणवत्ता बढ़ाने के लिए साहित्यकारों पर भी दबाव डालने से नहीं चूकते। लेखक को लगता है 'रुपया बनाम अखबार' बन गया है। दोनों का रंग एक ही हो गया है। 'कालाधन बनाम काली स्याही' एक ही ठप्पे से दोनों छप रहे हैं।

लेखक का इशारा उस वर्ग से है, जो अपनी अर्थशक्ति का प्रयोग समाज में हलचल मचाने के लिए, जनमानसकी सोच बदलने के लिए करते हैं। कब एक खबर आए और कब वही खबर खंडित हो जाए कहा नहींजा सकता। पहली खबर छापने की होड़ में कई दफा परस्पर विरोधी समाचार देखने पढ़ने को मिलते हैं। वर्तमान काल में सूचनाओं के प्रसारण के अनेकों दृक-श्राव्य माध्यम भी उपलब्ध हैं। पर आज भी अखबार लोकप्रिय

माध्यम है। भले ही सामाजिक, राजनैतिक विद्वेष ही फैला रहा हो। इनमें विज्ञापन की भ्रामक भूमिका भी है। गलत चीजों को सही बताकर समाज और स्वास्थ्य के लिए हानिकारक विज्ञापन भी छापे जाते हैं। यहाँ अर्थ शक्ति ही दिखाई देती है।

लेखक ने अखबार की तुलना सुगंधित फूल से की है, जिसकी सुगंध दूर-दूर तक जाती है। अखबार में छपी खबर भी दूर-दूर तक जाती है। जनमानस को गहरे प्रभावित करती है, भले ही झूठी खबर हो। सच को छापने का साहस विरले ही कर पाते हैं, क्योंकि सत्य को छापे जाने पर राजकीय शक्ति के प्रयोग किए जाने का डर रहता है, और ऐसे अखबार अल्पायु होते हैं। दूसरे शब्दों में अखबार भी बिकाऊ माध्यम ही है। फिर भी अखबार एक शक्तिशाली माध्यम है अतःसंपादन का दायित्व बढ़ जाता है। अंततः लेखक को भी अपनी बात कहने के लिए अखबार का ही सहारा लेना पड़ता है।

१०.२.३ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण :

"अखबार इस सभ्यता का सबसे बड़ा फूल है कि जिसकी सुगंध बिना हवा के संसार भर में फैल रहीहै। यों तो यह बारह मासा है परन्तु इसके फलने की विशेष ऋतु है युद्ध।"

संदर्भ :उपर्युक्त अवतरण डॉ. अनिल सिंह जी द्वारा संपादित पुस्तक 'निबंध विविधा' में संकलित निबंध 'अगर मुल्क में अखबार न होता' से उद्धृत है। इसके निबंधकार नामवर सिंह जी हैं।

प्रसंग :निबंधकार ने अखबार संस्कृति का उल्लेख करते हुए अखबार की आधुनिक शैली की चर्चा की है। आज के दैनंदिन जीवन में अखबार कितना आवश्यक अंग बन गया है इसका व्यंग्यात्मक रूप से चित्रण किया है।

व्याख्या :आज अखबार का दैनंदिन जीवन में महत्त्वपूर्ण स्थान है। यह हर प्रकार की खबरों को अपने में समाए हुए है। अतः हमारे आधुनिक जीवन में अखबार एक अहम हिस्साबन चुका है। अखबार में छपनेवाली खबरों की चाहे देशी यानी कि गाँव में रहनेवाला होया शहरों में रहनेवाला हो, हर कोई रसलेकर पढ़ता, सुनता और चर्चा भी करता है। वर्तमान में अखबार पूरे देश-विदेश की सभ्यता का विषय बन गया है। निबंधकार इसे एक फूल की उपमा देते हुए कहते हैं कि जैसे फूल अपनी खुशबू चारों तरफ बिखेर देती है वैसे ही अखबार एक कागजी फूल है जिसकी सुगंध संसार भर में फैली हुई है। फूल तो मौसम के हिसाब से खिलते हैं परंतु अखबार रूपी फूल बारहों महीने खिला रहता है। लेकिन युद्ध के दौरान विशेष तौर पर अपनी महिमा दिखाता है।

विशेष :यहाँ अखबार दैनिक जीवन में कितना महत्त्वपूर्ण स्थान बना चुका है उसके महत्त्व पर प्रकाश डाला गया है।

१०.२.४ बोध प्रश्न:

१. लेखकद्वारा निबंध में संचित अखबार की महत्ताका वर्णन कीजिए|

२. अखबार किस प्रकार से सभ्यता का प्रतीक बन गया है| विस्तार से समझाइए|

३. अखबार निबंध के उद्देश्य पर चर्चा कीजिए|

१०.२.५ वैकल्पिक प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

प्रश्न 1. लेखक जब से गाँव आये उन्हें क्या नहीं मिला?

उत्तर : लेखक जब से गाँव आये उन्हें अखबार नहीं मिला।

प्रश्न 2.लेखक अखबार पढ़ने किसके पास जाते हैं?

उत्तर : लेखक अखबार पढ़ने मुंशीजी के पास जाते हैं।

प्रश्न 3.चौधरी अखबार को क्या कहते हैं?

उत्तर : चौधरी अखबार को नशा कहते हैं।

प्रश्न 4. आजकल एक ही ठप्पे से क्या छपते हैं?

उत्तर : आजकल अखबार और रुपया एक ही ठप्पे से छपते हैं।

प्रश्न 5.आज की सभ्यता का सबसे बड़ा फूल क्या है?

उत्तर : आज की सभ्यता का सबसे बड़ा फूल अखबार है।

१०.२.६ वैकल्पिक प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. किसकी सुगंध बिना हवा के संसार भर में फैल रही है?

क) राजनेता ब)इत्र **क)अखबार** ड)फूल

2. अखबार के फलने की विशेष ऋतु कौन सी है?

अ) महामारी **ब)युद्ध** क) चुनाव ड) राजनीति

3. अखबार के सिर उठाते ही किसकी ऊँगली उठ जाती है?

अ) सरकार की ब) जनता की क) पत्रकार की ड) समाज की

4. इस जमाने में मुँह से बोलना भी क्या है?

अ) बड़ी बात ब) प्रशंसा क) मजाक **ड) गुनाह**

१०.३ रसायन और हमारा पर्यावरण -डॉ. अनिल रामनाथन

१०.३.१ लेखक परिचय:

डॉ . रामनाथन का जन्म 1927 ई . में केरल में हुआ था।कोचीन से आरंभिक शिक्षा के बाद आपने काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से भौतिकी में एम एससी की उपाधि प्राप्त की। बंगलौर तथा कलकत्ता मेंरहते हुए आपने भौतिकी और पर्यावरण के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण शोध कार्य किया। जादवपुर विश्वविद्यालय से इन्हें पी एच.डी. की उपाधि प्रदान की गयी।

१०.३.२ व्याख्या/ समीक्षा:

मानव जीवन पर रसायन के दुष्प्रभाव पर भी विचार प्रस्तुत किए हैं। लेखक के अनुसार सभी जड़, चेतन, प्राणी, वस्तुएं रसायन से ही बनी हैं। रसायन ही धरती पर जीवन है। यहाँ तक कि पानी भी एक रासायनिक मिश्रण है। इंधन, दवाइयाँ, फल, सब्जियाँ सभी कुछ रसायन ही है। इनमें कुछ रसायन जहरीले होते हैं, जो प्राणियों के माध्यम से मानव शरीर तक पहुँचकर बीमारियों का कारण बनते हैं, जैसे कि प्रदूषित जल में रहने वाली मछलियाँ। कुछ रसायन दीर्घ काल के उपरांत अपना विषैला प्रभाव दिखाते हैं। इसके लिए लेखक ने एस्बेस्टेस शीट का उदाहरण दिया है, जिसे पहले सुरक्षित समझा जाता था पर लंबे समय के उपयोग के बाद उसमें कैंसर जैसी बीमारी का अवगुण पता चला।

औद्योगिकीकरणने गैस, वाष्प और धातु जैसी चीजों के माध्यम से रासायनिक खतरों को बढ़ाया है। तकनीकी उन्नति ने सुख के साधन तो बढ़ाए हैं, पर पर्यावरण को भी प्रदूषित किया है। जिसका दुष्प्रभाव मानव, पशु, पौधे, मिट्टी, जल, फसल और फल-सब्जियों पर पड़ रहा है। कुछ तो हमारे शरीर में जल और वायु के साथ प्रविष्ट हो जाते हैं। कुछ खाद्य पदार्थों के माध्यम से ऐसे रसायन अपना दुष्प्रभाव डालते हैं, और कुछ के विषैले प्रभाव को तो हम जानते ही हैं, पर उससे बचने के लिए क्या किया जाए? इस दिशा में और ज्यादा खोज जरूरी है। रसायनों के खतरों को जानना बहुत जरूरी है, क्योंकि संसार में ऐसा कुछ भी नहीं जो रसायन मुक्त हो। इसलिए लेखक नेग्राह्य और अग्राह्य रसायन के खतरे का अंतर बतलाया है। जैसे कि कीटनाशक रसायन जहरीले होते हैं, पर पर्यावरण में इसका इस्तेमाल करने के पहले इसे भली-भांति परखा जाता है तब इसके इस्तेमाल की अनुमति दी जाती है। क्योंकि अधिक पैदावार का लाभ इससे होता है। रसायनों के कारण ही कृषि में क्रांतिकारी प्रगति हो रही है। खेतों की उर्वरा शक्ति बढ़ी है। खाद्य रसायन, जैविक पदार्थों के रूप में मांस, सलाद, दूध इत्यादि अपने मुख्य घटकों जैसे कार्बोहाइड्रेट, लिपिड और प्रोटीन में जैव रसायन के रूप में ग्राह्य हैं।

इसीप्रकार अन्य कीटनाशकों के नियंत्रित प्रयोग को ग्राह्य जोखिम कहा जाता है। इनका मूल्यांकन, समय और परिस्थिति के अनुसार बदल भी जाता है, जैसे कि डीडीटी कीटनाशक पहले इसका प्रयोग सुरक्षित समझा जाता था। पर वर्तमान में अधिकांश देशों में इसका प्रयोग प्रतिबंधित है। कई रसायन सुरक्षित तो होते हैं पर अन्य रसायनों से मिलने पर हानिकारक बन जाते हैं या फिर उपयोगी बन जाते हैं, जैसे कि जल पेय है पर समुद्री जल पेय की दृष्टि से जहरीला है। नमक आवश्यक है पर अधिक मात्रा में इसका सेवन बीमारी का कारण बन जाता है। इस प्रकार मात्रा और जहरीलापन दोनों ही जोखिम का कारण बन जाते हैं। कैंसर कोभी लेखक पर्यावरण और रसायन से जोड़कर देखते हैं।

रसायनों से होने वाले खतरों से बचाव के लिए सरकार ने कई कानून बनाए हैं, पर सामाजिक दृष्टिकोण से हमें व्यक्तिगत स्तर पर भी ध्यान रखने की जरूरत होती है। नशा करने वाले चेतावनी दिए जाने के बावजूद अपनी सेहत के प्रति लापरवाह होते हैं।

अंततःहमें स्वयं यह समझना होगा कि समस्त चराचर में रसायन व्याप्त है । वह हमारे लिए आवश्यक है पर उसका उपयोग किस रूप में करते हैं, कबऔर कहाँ करते हैं, इसका ज्ञान भी आवश्यक है । इस निबंध में लेखक ने वातावरण में होने वाली रासायनिक प्रतिक्रियाओं और उनके मानव जाति और पर्यावरण पर होने वाले प्रभाव के परिणाम स्वरूप, होनेवाले खतरों के विषय में सचेत किया है । रसायनों के विषैले प्रभाव से पर्यावरण को बचाना जरूरी है । प्रकृति के बिना जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती । पंच तत्वों (जल, थल, वायु, अग्नि और आकाश) से ही मनुष्य का जीवन है, और इसी में अंत भी । इसलिए हमें भविष्य में जीवन की संभावना सुनिश्चित करने के लिए अपने पर्यावरण को स्वस्थ और सुरक्षित रखना होगा । यह हम सब की साझी जिम्मेदारी है ।

१०.३.३ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण :

"रसायनों में कुछ दीर्घकालिक खतरे भी होते हैं क्योंकि कुछ रसायनों के सम्पर्क में अधिक समय तक रहने पर चाहे उन रसायनों का लेश मात्र ही क्यों न हो, शरीर में बीमारियाँ पैदा हो सकती हैं ।"

संदर्भ : उपर्युक्त अवतरण डॉ. अनिल सिंह जी द्वारा संपादित पुस्तक 'निबंध विविधा' में संकलित निबंध 'रसायन और हमारा पर्यावरण' से उद्धृत है । इसके निबंधकार डॉ. अनिल रामनाथन जी हैं ।

प्रसंग : इसमें निबंधकार ने रसायन का प्रयोग और दवाइयों के निर्माण मेंरा सायनिक यौगिकों की भूमिका पर चर्चा की है। मानव जीवन पर रसायन के दुष्प्रभाव पर भी चर्चा प्रस्तुत की गयी है ।

व्याख्या : निबंधकार रसायन के प्रभावों की चर्चा करते हुए कहते हैं कि कुछ रसायन के प्रभाव अल्पकालिक होते हैं परंतु कुछ ऐसे भी रसायन होते हैं जिसका दुष्प्रभाव दीर्घकालिक होता है । यानी कि वर्तमान में हमें उसका असर शायद कम या बिलकुल भी परिलक्षित ना हो परंतु निरंतर अगर हम उसके संपर्क में आते हैं तो उसका हम पर या हमारे शरीर पर धीमी गति से असर हो रहा होता है और यह भविष्य में कई भयंकर बीमारियों का कारण बनती है। एस्बेस्टेस शीट का कैंसर जैसी भयंकर बीमारी का कारण बनना जैसे उदाहरण निबंध में दिए गए हैं ।

विशेष :यहाँ रसायन के प्रयोग से उसके लाभ तथा होनेवाली हानियों का सैद्धांतिक विवेचन हुआ है ।

सारांश :- इस इकाई में हम निबंध विविधा (निबंध संग्रह) के दो निबंध का अध्ययन किया है आशा है कि इस इकाई के अध्ययन से विद्यार्थी 'अगर मुल्क में अखबार न होते' (नामवर सिंह) और 'रसायन और हमारा पर्यावरण' (डॉ. एन. एल. रामनाथन) विद्यार्थी दोनों निबंधों के लेखक का परिचय जान सकें | निबंध का समीक्षात्मक अध्ययन कर सकें |

१०.३. ४ बोधप्रश्न :

१. मानव जीवन पर रसायन के दुष्परिणाम को लेखकने किस प्रकार समझाया है | विस्तार पूर्वक बताएँ |

२. 'रसायन और हमारा पर्यावरण' निबंध की समीक्षा कीजिए |

३. 'रसायन और हमारा पर्यावरण' निबंध में किस प्रकार हमारे पर्यावरण को हानि पहुंचाई गई है | विवरण दीजिए |

१०.३.५ वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

प्रश्न 1.हम कौन से युग में रह रहे हैं?

उत्तर : हम रसायनों के युग में रह रहे हैं।

प्रश्न 2.कौन से रसायन में कैंसर पैदा करने का अवगुण है?

उत्तर : ऐस्बेस्टस रसायन में कैंसर पैदा करने का अवगुण है।

प्रश्न 3. एक सर्वव्यापी विष क्या है?

उत्तर : सीमा (लेड) एक सर्वव्यापी विष है।

प्रश्न 4. सबसे पहले किससे पहचानना जरूरी है?

उत्तर : सबसे पहले खतरों को पहचानना जरूरी है?

प्रश्न 5. डी.डी.टी.पर किस वर्ष प्रतिबंध लगा दिया गया है?

उत्तर : सन् 1972 में डी.डी.टी. पर प्रतिबंध लगा दिया गया।

१०.३.६ वैकल्पिक प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. रसायन न होते तो धरती पर क्या नहीं होता?

अ) जीवन ब) मृत्यु क) पानी ड) आग

2. जापान में मिनामाटा मछली खानेवाली आबादी किस रोग से ग्रस्त से पायी गयी?

अ) कैंसर ब) टी.बी. **क) अपंगता** ड) पीलिया

3. रसायन हमेशा कहाँ मौजूद है?

अ) पर्यावरण में ब) अनाज में क) अंतरिक्ष में ड) प्रयोगशाला में

4. रासायनिक सुरक्षा को कार्य मान लिया जाना चाहिए?

अ) बेकार का **ब) प्रतिदिन का** क) विज्ञान का ड) प्रयोगशाला का

❖❖❖❖

११

निबंध विविधा (निबंध संग्रह)

आंगन का पंछी व्याख्या/ समीक्षा

पाँत का आखिरी आदमी

इकाई की रूपरेखा

११. ० इकाई का उद्देश्य

११. १ प्रस्तावना

 ११. १.१ लेखक परिचय -विद्यानिवास मिश्र

 ११. १.२ आंगन का पंछी व्याख्या/ समीक्षा

 ११. १. ३ संदर्भसहित स्पष्टीकरण

 ११. १. ४ बोधप्रश्न

 ११. १.५ वस्तुनिष्ठ / लघुत्तरीप्रश्न

 ११. १.६ वैकल्पिक प्रश्न

११.२ पाँत का आखिरी आदमी

 ११. २.१. लेखक परिचय - कुबेरनाथ राय

 ११. २. २पाँत का आखिरी आदमी - व्याख्या/ समीक्षा

 ११. २. ३. संदर्भसहित स्पष्टीकरण

 ११. २. ४ सारांश

 ११. २. ५ बोधप्रश्न

 ११.२.६ वस्तुनिष्ठ / लघुत्तरीप्रश्न

 ११. २. ७ वैकल्पिक प्रश्न

आँगन का पंछी - डॉ विद्यानिवास मिश्र

११.० इकाई का उद्देश्य

इस इकाई में हम निबंध विविधा (निबंध संग्रह) के दो निबंध का अध्ययन करेंगे जो इस प्रकार है - १ आंगन का पंछी (विद्यानिवास मिश्र), २ पांत का आखिरी आदमी (कुबेरनाथ राय) | विद्यार्थी इस इकाई के अध्ययन से लेखकों का जीवन परिचय, निबंधका समीक्षात्मक अध्ययन और निबंध के अवतरणों की संदर्भसहित व्याख्या कर सकेंगे |

११.१ प्रस्तावना

डॉ विद्यानिवास मिश्र जी पद्म श्री ., पद्म विभूषण जैसे पुरस्कारों से नवाजे गए बहुमुखी प्रतिभा के धनी, कलम के कुशल चितेरे हैं। उनकी रचनाओं में ललित निबंध विशेष है। विद्यानिवास मिश्र जी के लेखन में समस्त विश्व के प्रति संवेदना का भाव दिखाई देता है। समाज, संस्कृति और मानवता इनकी रचनाओं का केंद्र बिंदु है तो परंपरा से आधुनिकता की झलक और सहज चिंतन का तीव्र संयोग भी है। आँगन का पंछी निबंध में गौरैया पक्षी को लेकर लेखक ने भारतीय संस्कृति, सामाजिक परंपराएँ व प्रकृति प्रेम का विवेचन किया है।

कुबेरनाथ राय आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी की परंपरा के निबंधकार हैं। इनके निबंधों में भारतीय संस्कृति के साथ इतिहास के नवीनतम बोध को प्रदान करने का प्रयास है, अतः पाठक एवं लेखक के मध्य आत्मीयता का एक सेतु बन जाता है। पाँत का आखिरी आदमी पत्रात्मक शैली में लिखा गया निबंध है। इसमें गाँधीवादी विचारधारा का प्रभाव दिखलाई देता है। लेखक अपनी पुत्रवधू मणिपुतुल को संबोधित करते हुए, वर्तमान व्यवस्था में व्याप्त भ्रष्टाचार का विश्लेषण करते हुए उसे समझाने का प्रयास करते हैं। जीवन में उच्च कोटि की योग्यता, सफलता दिलाए ऐसा जरूरी नहीं है।

१०.१.१ लेखक परिचय :

विद्यानिवास मिश्र का जन्म 28 जनवरी, 1926 को उत्तर प्रदेश के गोरखपुर जिले में हुआ था। उनकी प्रारम्भिक शिक्षादीक्षा स्थानीय स्कूल में सम्पन्न होने के बाद उच्च शिक्षा - गोरखपुर विश्वविद्यालय से सम्पन्न हुई। इसी विश्वविद्यालय से उन्होंने'पाणिनीय व्याकरण की विश्लेषण पद्धति' में पीएचकी डिग्री हासि .डी.ल की है। विद्यानिवास मिश्र संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान के रूप में स्थापित रहे हैं। हिन्दी निबंधों को उन्होंने एक नई ऊँचाई प्रदान की है। उनके निबंधों का लालित्य आज भी बरकरार है। विद्यानिवास मिश्र के प्रमुख निबंध संग्रह हैं -'छितवन की छाँह', 'तुम चंदन हम पानी', 'स्वरूप विमर्श', 'बसंत आ गया पर कोई उत्कण्ठा नहीं', 'भारतीय संस्कृति के आधार' , 'भ्रमणनंद का पचड़ा', 'रहिमन पानी राखिए', 'लोक और लाक का स्वर' आदि। विद्यानिवास मिश्र के निबंधों में भारतीय संस्कृति का चित्रण सबसे अधिक हुआ है। लोक संस्कृति का बहुआयामी रेखांकन करने वाले विद्यानिवास मिश्र को पद्मश्री, मूर्ति देवी पुरस्कार, विश्वभारती सम्मान, मंगला प्रसाद

पारितोषिक सम्मान प्राप्त हुए। साहित्य अकादमी का महत्तर सदस्यता सम्मान भी उन्हें प्राप्त हुआ है ।

११.१.२ व्याख्यासमीक्षा /

आँगन का पंछी निबंध में गौरैया पक्षी को लेकर लेखक ने भारतीय संस्कृति, सामाजिक परंपराएँ व प्रकृति प्रेम का विवेचन किया है। गौरैया की गतिविधियों की (हरकतों की) तुलना वे छोटे बच्चों से करते हैं। लेखक के अनुसार गौरैया बालपन का प्रतीक है। जीवन क्रम को आगे ले जाने वाले व्यक्ति बच्चों के महत्त्व को उनकी गतिविधियों को भली भाँति समझते हैं। जिस प्रकार बच्चे घर के आँगन कीशोभा होते हैं, उनकी किलकारियाँ, खेलकूद आँगन को गुलजार कर देता है लेखक को गौरैया में भी वैसी ही निश्छलता, निडरता और निश्चिंतता दिखाई देती है। गौरैया सर्वव्यापी पक्षी है उसकी उड़ान बहुत ऊँची नहीं होती न ही रूप सौंदर्य होता है, पर वह निडरता पूर्वक विचरण करती है। अन्न के दानों को चुगती है, साथ ही अनाज के कीड़ों को भी साफ करती जाती है। भारतीय संस्कृति में गौरैया का मान है। जैसे मनुष्यों में ब्राह्मण वर्ग वैसे ही पक्षी समुदाय में गौरैया। गौरैया मनुष्य की शत्रु नहीं मित्र है। सुबह की कोमलता और भीनेपन में नहीं बल्कि तपती दोपहरी में वह आती है। उसे लेखक सुखदुःख का साथी और भारतीय आँगन की शोभा - मानते हैं।

आँगन को लेकर लेखक ने तुलसी के पौधे के महत्त्व को भी बतलाया है। भारतीय संस्कृति के अनुसार तुलसी का पौधा पवित्र माना जाता है, धार्मिक विश्वास के चलते पूज्य भी है और प्रकृति प्रेम, सात्विकता और पवित्रता का प्रतीक है। प्रकृति को मानव जीवन का अविभाज्य अंग माना गया है। भारतीय संस्कृति में धरती को माता का रूप माना गया है। हमारे पैर भले ही जमीन पर रहें, हम पलते धरती की गोद में ही हैं वह जीवनदायिनी है वह हमें सब कुछ देती है। हमारी संस्कृति में परिवार के प्रति प्रेम को सर्वोपरि माना गया है। यहाँ देवीदेवताओं के प्रति आस्था-, नदी, पर्वत, तीर्थधाम-, आचार्य मठ की कल्पना पारिवारिक विस्तार का ही रूप है और यह भाव ही हमारी संस्कृति और साहित्य में व्याप्त है। ग्रहों और नक्षत्रों के द्वारा जीवन को परखने और समस्याओं का हल खोजने का प्रयास वसुधैव कुटुम्बकम का ही रूप है। जैसे परिवार में छोटेबड़े सभी के अधिकार सुरक्षित होते हैं वैसे ही सृष्टि में हम- 'अणोरणीयान' और 'महती महीयान' को समान दृष्टि से देखते हैं।

चीन में गौरैया के प्रति हिंसक रवैये के बारे में जानकर लेखक गौरैया के विषय में सोचने पर विवश हो जाते हैं कि चीन सरकार गौरैया को फसल को हानि पहुँचानेवाला पक्षी मानकर उनको समूल नष्ट करने का अभियान चला रही है। चीन के इस कृत्य को लेखक उनकी अभाव ग्रस्तता और वीरत्व का अपमान मानते हैं। वे गौरैया के अन्य गुणों की ओर नहीं देख रहे। उसे मारकर वे अपना ही नुकसान कर रहे हैं। लेखक के मन में सहज प्रश्न उठता है कि क्या वहाँ घरआँगन-, बच्चे, किलकारियाँ, हँसीखिलखिलाहट नहीं है। कभी - बुद्ध की दया, क्षमा, मैत्री का संदेश देने वाला नैतिक मूल्यों की दुहाई देने वाला देश प्रकृति की व्यवस्था के साथ किस तरह का खिलवाड़ कर रहा है। यह अति बौद्धिकता का

ही परिणाम है । इसी के चलते एक देश दूसरे देश के साथ हिंसक व्यवहार कर रहा है। रचना की बजाए संहार का भाव जीवन मूल्यों को नष्ट कर रहा है।

पैदावार कम होने का आरोप गौरैया पर लगाकर उन्हें मारने की प्रवृत्ति स्वार्थी है। लेखक इस अभियान को समस्त मानवता के लिए खतरे का सूचक मानता है। आगे चलकर यह अभियान अन्य प्राणियों को भी अपनी चपेट में ले सकता है और घरों में रहनेवाले मनुष्यों तक भी पहुँच सकता है। चीन की ऐसी नीति अन्य देशों में भी विस्तारवादी नीति के चलते, धर्म, भाषा, जाति और संप्रदाय संबंधी विषमता को जन्म दे सकती है। विषमता से फैलनेवाली यह राजनीतिशिक्षा-, साहित्य और जनमानस को प्रभावित करने वाली यह घृष्टता समस्त विश्व के लिए घातक होगी।

लेखक भारतीय संस्कृति में परिवेश और पर्यावरण के प्रति कृतज्ञता का भाव देखता है। उनके अनुसार भारतीय संस्कृति में एक दूसरा ही शक्ति प्रवाह है जो मनुष्य को सृष्टि के साथ जोड़ने में गौरव मानती है। गौरैया के प्रति प्रीति को लेखक निजी स्वार्थ से प्रेरित मानते हैं, अन्य पक्षियों की तुलना में साधारण ही सही पर वह मानवजीवन में-, कृषि में अपना विशेष स्थान रखती है, जैसे अन्य पौधों की तुलना में तुलसी का पौधा।

आँगन का पंक्षी निबन्ध की भाषा शैली संस्कृत निष्ठ है, इसमें मुहावरों का प्रयोग लोकजीवन की झलक देता है। निबंध के विषयानुसार भाषा शैली लालित्यपूर्ण है। डॉ . विद्यानिवास मिश्र शब्दों के शिल्पी हैं। उन्होंने गौरैया के खिलाफ चलाए जा रहे अभियान पर आक्रोश व्यक्त करते हुए अपने विचारों को बहुत ही रोचक शैली में व्यक्त किया है।

आँगन का पंछी में उन्होंने भौगोलिक सीमाओं से परे अपने मानवीय संवेदना से पूरित चिन्तन को विस्तार दिया है, जिसमें 'वसुधैव कुटुम्बकम' का भाव तो है ही इसके साथ पर्यावरण के प्रति परिवेश और प्रकृति के प्रति कृतज्ञता के भाव को भी वे आवश्यक मानते हैं।

११.१.३ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण :

“गौरैया दाना चुगती है पर शायद जिस मात्रा में दाना चुगती है उससे कहीं अधिक लाभ वह खेत का इस प्रकार करती है कि अनाज में लगने वाले कीड़ों को वह साफ करती रहती है।”

संदर्भ :उपर्युक्त अवतरण डॉअनिल सिंह जी द्वारा संपादित पुस्तक . ‘निबंध विविधा' में संकलित निबंध ‘आँगन का पंछी' से उद्धृत है। इसके निबंधकार विद्यानिवास मिश्र जी हैं।

प्रसंग :निबंधकार गौरैया के खिलाफ चलाए जा रहे अभियान पर आक्रोश व्यक्त करते हैं। वे गौरैया को अपनी विरासत मानते हैं और उसके प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने का आग्रह करते हैं।

व्याख्या :गौरैया पक्षी साधारण होते हुए भी हमारी संस्कृति का एक अहम हिस्सा है और उसके खिलाफ चलाए जा रहे अभियान को देखते हुए निबंधकार कहते हैं कि गौरैया

आकार में बहुत ही छोटीसी होती है। वह बहुत ही कम मात्रा में दाना चुगती है। इतना ही - नहीं तो वह जितना दाना चुगती है उससे अधिक वह हमारे खेत में अनाज पर लगनेवाले कीड़ों को साफ करने का काम करती है। यद्यपि गौरैया अप्रत्यक्ष रूप से अनाज के संरक्षण में हमारी सहायता ही करती है फिर भी गौरैया को अनाज खराब करनेवाली बताकर चीन जैसे देश गौरैया का वध कर इनको समूल नष्ट करने पर लगे हैं। इनके इस क्रूर कृत्य की लेखक भर्त्सना करते हैं। निबंधकार बताते हैं कि गौरैया एक हानिकारक नहीं बल्कि मन को आनंदित करनेवाली प्रकृति प्रेमी पक्षी है और उसका संवर्धन हमें करना चाहिए।

विशेष : गौरैया पक्षी को लेकर भारतीय संस्कृति, सामाजिक परंपराएँ व प्रकृति प्रेम का विवेचन किया गया है।

११.१.४ बोधप्रश्न :

१. आँगन का पंछी निबंध में गौरैया पक्षी को लेकर लेखकने भारतीय संस्कृति, सामाजिक परंपरा एँव प्रकृति प्रेम का विवेचन किस प्रकार किया है।

२. गोरैया के महत्व को रेखांकित करते हुए, चीन में गोरैया के साथ व्यवहार का विस्तृत विवेचन कीजिए |

३. आँगन का पंछी निबंध की समीक्षा कीजिए |

११.१.५ वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

प्रश्न १. जिस घर में गौरैया अपना घोंसला नहीं बनाती वह घर क्या हो जाता है?
उत्तर: जिस घर में गौरैया अपना घोंसला नहीं बनाती वह घर निर्बल हो जाता है। :

प्रश्न २. चिड़ियों का शिकार करनेवाले किस चिड़िया को मारना पाप समझते हैं?

उत्तर: चिड़ियों का : शिकार करनेवाले गौरैया को मारना पाप समझते हैं?

प्रश्न ३. चीन की सरकार ने किसे खेती का शत्रु माना है?

उत्तर: चीन की सरकार ने गौरैया को खेती का शत्रु माना है। :

प्रश्न ४. हमारा सांस्कृतिक जीवन किससे आप्लावित है?

उत्तर: हमारा सांस्कृतिक जीवन पारिवारिक प्रेम से आप् :लावित है।

प्रश्न ५. लेखक के एक मार्क्सवादी मित्र ने उन्हें क्या संज्ञा दे रखी है?

उत्तर: लेखक के एक मार्क्सवादी मित्र ने उन्हें आनंदवादी संज्ञा दे रखी है। :

११.१.६ वैकल्पिक प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. मिनी कितने साल की है?

(अ) एक (ब) दो (क) तीन (ड) चार

2. पक्षियों में ब्राह्मण किस चिड़िया को कहा जाता है?

(अ) गौरेया (ब) सारिका (क) तोता (ड) शुतुरमुर्ग

3. अकिंचन से अकिंचन आँगन में भी कौन सा पौधा जरूर मिलता है-?

(अ) गुलाब (ब) कमाल (क) तुलसी (ड) नीम

4. गौरैया के खिलाफ किसने सामूहिक अभियान शुरू किया?

(अ) चीन (ब) जपान (क) रुस (ड) म्याँमार

११.२ पाँत का आखिरी आदमी -कुबेरनाथ राय

११.२.१ लेखक परिचय :

हिन्दी के प्रसिद्ध निबंधकार कुबेरनाथ राय का जन्म 26 मार्च, 1998 उत्तर प्रदेश के गाजीपुर जिले में हुआ था। 'पतसा' नामक गाँव में प्रारम्भिक शिक्षाद- ई। ीक्षा सम्पन्न ह उच्च शिक्षा के लिए वे बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय आए और फिर कलकत्ता विश्वविद्यालय मे उच्च शिक्षा ग्रहण की। बाद में गाजीपुर स्थित सहजानन्द महाविद्यालय में र्य के पर कार्यरत रहे।प्राचा5 जून, 1996 को उनका निधन हो गया।

साहित्यिक निबंधों में कुबेरनाथ राय का नाम आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी की परम्परा में सबसे अधिक लिया जाता है। ललित निबंधकार के रूप में उन्होंने खूब यश कमाया। 'प्रिय नील के कंठी', 'रस आक 'गंध मादन', 'निषाद बाँसुरी', 'विषद योग', 'महाकवि की तर्जनी', 'कामधेनु', 'उत्तर कुरु', 'अंधकार में अग्निशिक्षा' शीर्षक से उनके प्रमुख निबंध संग्रह प्रकाशित हुए हैं। साहित्य साधना के लिए उन्हें भारतीय ज्ञानपीठ का प्रतिष्ठित मूर्ति देवी पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इसके अतिरिक्त उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान के द्वारा उन्हें 'साहित्य भूषण सम्मान भी प्रदान किया गया है ।

११.२.२ व्याख्यासमीक्षा /

वर्तमान काल में मानव विडम्बनाओं में जी रहा है, हर कहीं चतुराई और मक्कारी का बोलबाला है। चतुराई का शिकार व्यक्ति अक्सर अवदमित हो जाता है। वामपंथी बन जाता है। अवदमन का प्रभाव जीवन के हर क्षेत्र में दिखाई देता है। ऐन्द्रिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक अनेक प्रकार के अवदमन आधुनिक संस्कृति के क्रिया कलापों में दिखाई देते हैं कहीं सम्बंधों के तो कहीं भाषा और व्यवहार के रूप में।

लेखक इसी अवदमन से मणिपुतुल को बचाना चाहता है। पाश्चात्य लेखक हरबर्ट मारक्यूज की 'काम और सभ्यता' में वर्णित 'मानवीय सभ्यता के आधुनिक संकट' की व्याख्या इसी अवदमन के आधार पर की गई है। अवदमन की प्रतिक्रियता के स्वरूप जो जीवनशक्ति पैदा होती है वह कहीं ना कहीं मन में मलाल लिए होती है और अवसर पाते ही व्यक्त होने लगती है। अवदमन की विषम परिणामों की तुलना में जयप्रकाश नारायण की सौंदर्यमयी क्रांति का भी उल्लेख किया है। सौंदर्यमयी क्रांति का भी उल्लेख किया है। सौंदर्यमयी क्रांति वह है जो जीने की उत्कट इच्छा और शिवव लिए सुंदर होने का भा-होती है। गाँधीजी के सर्वोदय के पीछे भी इसी जीजिविषा आधारित क्रांति की अवधारणा है ऐसा वो मानते हैं और मणिपुतुल से कहते हैं—तुम्हारी पूरी की पूरी पीढ़ी इस अवदमन की पीड़ा से ग्रस्त है विश्व में हर कहीं यही हो रहा है। नई पीढ़ी का आक्रोश आन्दोलन का रस लेता है।

आज का युग आदर्शों के प्रति मोहभंग का युग है। जो संपन्न है उसके लिए मानसिक दुख है जो विपन्न है रोजीहताशा मणिपुतुल की -रोटी और अन्न वस्त्र का दुख है। यह निराशा-ही नहीं कमोबेश सभी की किसी न किसी रूप में है। जो छात्रजीवन में प्रथम पाँत में होने हैं, सांसारिकता में पीछे आ जाते हैं, जो अध्ययन में तीसरे पाँत पर हैं वे पहली पंक्ति में आ जाते हैं तो यह भी एक प्रकार का अवदमन ही है। इस अन्याय का मूल हमारी व्यवस्था में है जिसे लेखक ने 'चालू व्यवस्था' – (Prevaling System) प्रिवेलिंग सिस्टम कहा है। लेखक इस व्यवस्था में विश्वास नहीं करता। सभी राजनीतिक दल के प्रतिनिधि चालू व्यवस्था के ही है। ऊपरी तौर पर आदर्श और ईमान की बातें करते हैं लेखिन कार्यशैली चालू व्यवस्था की ही होती है। इसलिए आम आदमी तक किसी सुविधा का कोई अवसर नहीं पहुँचता। पाँत का आखिरी आदमी शीर्षक इसी सदर्भ में है। इस चालू व्यवस्था के अंतर्गत बुद्धिजीवी, सुशिक्षित, संपन्न और राजनीति और शासन व्यवस्था से जुड़ा वर्ग आत्मकेंद्रित तो होता ही है। ज्यादा से ज्यादा कमाने का ध्येय रखता है। इस वर्ग को निम्न वर्ग से, ग्रामीण वर्ग से लेना देना नहीं रहता। निचले वर्ग से आया हुए प्रतिनिधि भी चालू वयवस्था से जुड़ने पर बदल पाते हैं।

लेखक ने इस व्यवस्था की तुलना उस महाभोज से की है जो शुरुआत में काफी दमदार लगता है। पाँत पर पाँत बैठती जाती है लेकिन आखिरी पाँत के आने पर भोजन सामग्री बचतौ ही नहीं। शुरुआती पंक्ति के लोग डकारते हुए जाते हैं, तो आखिरी पंक्ति के आधा पेट, कई बार तो भूखे ही रह जाते हैं। ठीक यही स्थिति हमारे देश की 'चालू व्यवस्था' की है। जैसे आखरी पाँत के व्यक्ति की भूख से किसी को कुछ लेनादेना ही नहीं होता। इस -ता अधिकारी और व्यवस्था में भी आम आदमी तक कुछ भी नहीं पहुंचता। सारा कुछ ने उनके चमचे ले उड़ते हैं। समाज का दुर्बल घटक सब कुछ सहता रहता है। इस व्यवस्था के प्रतिनिधि जनवादी बातें और दमनवादी कृत्य करते हैं। राज्य व्यवस्था और अर्थव्यवस्था की इस घपलेबाजी के चलते आम आदमी विवश है।

ऐसी व्यवस्था के चलते कुबेरनाथ जी मणिपुतुल से दुखी ना होने की बात कहते हैं। अपने ही गाँव की डोम बस्ती की महुआ का उदाहरण देते हैं। महुआ कुशल बांस शिल्पी है पर उसका कोई लाभ उसे नहीं मिलता क्योंकि मार्गदर्शन, आर्थिक सहायता नहीं मिल रही।

वह भी पाँत के आखिरी आदमी जैसी स्थिति में है। उसका दुख मणिपुतुल से भी ज्यादा है क्योंकि वह सर्वहारा वर्ग से है। लेखक मणिपुतुल को इस अभिशप्त वर्ग की ओर देखने को कहते हैं। तुम उनसे बेहतर हो इसलिए अपना चुनाव ना होने पर दुखी न हो, बल्कि समाज के उपेक्षित निर्धन वर्ग की शक्ति बनो। गांधीजी की कामनवादी दृष्टि को अपनाओ।

इस निबंध में लेखक गांधीवादी विचारधारा का समर्थन करते हुए दिखाई देते हैं। जिसमें मनुष्य में मनुष्यता, दर्शन, ग्रामीण, संस्कृति और श्रम सादगी पूर्ण जीवन शैली को महत्व दिया गया है। आजादी के बाद देश की शासन व्यवस्था और सामाजिक विषमता ने देश की अर्थव्यवस्था को बुरी तरह प्रभावित किया है। आम आदमी त्रस्त है। मणिपुतुल भी उस मध्यवर्ग प्रतीक है जो चालू व्यवस्था का शिकार बनती है जिसके गुणों और क्षमता की उपेक्षा होती है। लेखक ने गांधी विचारधारा का समर्थन करते हुए लघुयान और महायान से जुड़ने की इच्छा व्यक्त की है। लघुयान वृक्ष का बीज है तो महायान उसकी शाखा प्रशाखा जो उसे विस्तारित करती है। गांधीवाद को लेखक गांधीयान कहते हैं। गांधीवाद के अनुसार सरलता सादगी स्वच्छता संतुष्टि रचने वाली ऊर्ध्वगामी दृष्टि का होना आवश्यक है। लेखक को खादी के भीतर, परिश्रम आश्रित जीवन के भीतर और सादगी भरे जीवन में गांधीवादी सौंदर्य का बोध होता है। आजादी के उपरांत जनमानस ने गांधीजी की असफलताओं को सफलता से ज्यादा महत्व दिया। वहीं लेखक ने गांधीवाद का भविष्य लघुयान और महायान के रूप में देखा है मणिपुतुल को भी वह यही संदेश देते हैं। दूसरे अर्थ में वह समाज को भी यही बतलाना चाहते हैं।

इस निबंध में पत्रात्मकक शैली के माध्यम से लेखक ने अपने विचार प्रस्तुत किए हैं। निबंध की भाषा शैली विषय के अनुरूप होने के साथसाथ ललित और रोचक भी है। - विषय संप्रेषण के लिए विभिन्न प्रति को लक्षण एकता और बिम्ब योजना का आधार भी है इतिहास और पुराण का उल्लेख नूतन संदर्भ मे लिया गया ़ किया गया है लेखन शैली में प्रतीकात्मकता और चित्रात्मकता भी है। लेखक ने बड़ी संवेदना के साथ व्यवस्था और आम जनता से जुड़े कटु और दुखद अवदमन की स्थिति का विश्लेषण किया है जिसमें देश के भविष्य की चिंता भी दिखलाई देती है।

११.२.३ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण:

“सबकुछ भोग रहे हैं वे जो भण्डारगृह के पास उजाले में बैठे हैं। शेष में से कोई सूखी पूरी चबा रहा है, किसी के पत्तल में महज चटनी पड़कर रह गयी है और पाँत के आखिरी आदमी की तो पत्तल ही खाली है।”

संदर्भ :उपर्युक्त अवतरण डॉनिल सिंह जी द्वारा संपादित पुस्तकअ . ‘निबंध विविधा' में संकलित निबंध ‘पाँत का आखिरी आदमी' से उद्धृत है। इसके निबंधकार कुबेरनाथ राय जी हैं।

प्रसंग :निबंधकार अपनी छोटी बहू को संबोधित करते हुए पत्रात्मक शैली में निबंध लिखकर वर्तमान व्यवस्था की खामियों को उजागत करने का प्रयास करते हैं।

व्याख्या : यहाँ निबंधकार गाँव के भोज का उदाहरण देकर हमारे देश की व्यवस्था की वास्तविकता को उजागर करने का प्रयत्न करते हैं। वे समझाते हुए कहते हैं कि, पहले और दूसरे आदमी को सब कुछ मिल जाता है परंतु आखिरी आदमी कुछ नहीं पाता, पाँत पर पाँत बैठती जाती है, तो आखिरी पाँत के आने पर भौजन सामग्री बचती ही नहीं। शुरुआती पंक्ति के लोग डकारते हुए जाते हैं, तो आखिरी पंक्ति के आधे पेट या कई बार तो भूखे ही रह जाते हैं। ठीख यहाँ स्थिति हमारे देश की चालू व्यवस्था की है। इस व्यवस्था में भी आम आदमी तक कुछ नहीं पहुँचता।

विशेष : यहाँ पाँत के आखिरी आदमी के उदाहरण स्वरूप हमारे देश की व्यवस्था और आम जनता से जुड़कर और दुःखद अवदमन की स्थिति का बड़ा ही संवेदनात्मक वर्णन हुआ है

११.२.४ सारांश इस इकाई में हमने निबंध विविधा (निबंध संग्रह) के दो निबंध का अध्ययन किया - १ आंगन का पंछी (विद्यानिवास मिश्र), २ पांत का आखिरीआदमी (कुबेरनाथ राय) | आशा है कि विद्यार्थी इस इकाई के अध्ययन से लेखकों का जीवन परिचय, निबंध का समीक्षात्मक अध्ययन और निबंध के अवतरणों की संदर्भसहित व्याख्या आदि मुद्दों को जान सके |

११.२.५ बोधप्रश्न:

१. निबंधकार कौनसी शैली में निबंध लिखकर वर्तमान व्यवस्था की खामियों को उजागत करने का प्रयास करते हैं। विस्तार से समझाइए |

२. लेखकने पाश्चात्य लेखक हरबर्ट मारक्यूज की काम और सभ्यता में वर्णित मानव सभ्यता के आधुनिक संकट को किस प्रकार उल्लेखित किया है?

३. पांत का आखिरी आदमी निबंध की समीक्षा कीजिए |

११.२.६ वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

प्रश्न १. मणिपुतुल की असफलता का कारण क्या बनी?

उत्तर: मणिपुतुल की असफलता :का कारण बनी सारी उम्मीद्वारों से उसकी सर्वोच्च योग्यता।

प्रश्न २. आजकल नियुक्तियाँ कैसी होती है?

उत्तर: आजकल नियुक्तियाँ पूर्व निश्चित होती है। :

प्रश्न ३. 'द रिवोल्यूशन ब्यूटीफुल' निबंध के लेखक कौन हैं?

उत्तर : 'द रिवोल्यूशन ब्यूटीफुल' निबंध के लेखक जयप्रकाश नारायण है।

प्रश्न ४. जेल डायरी में किसका संवर्ग आता है?

उत्तर : का संदर्भ आता है। जेल डायरी में चालू व्यवस्था

प्रश्न ५. हरेक राजनीतिक दल के पास किसकी एक रूपरेखा है?

उत्तर: हरेक राजनीतिक दल के पास भण्डारगृह की अपनी एक रूपरेखा है। :

११.२.७ वैकल्पिक प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

१. 'पाँत का आखिरी आदमी' निबंध में लेखक पत्र किसे लिखे है?

(अ) बेटो को (ब) बहु को (क) बहन को (ड) भतीजी को

२. अब सच्चाई कहाँ निवास करती है?

(अ) नौकरी में (ब) जंगल में (क) साँप की बाँबी में (ड) गुफाओं में

३. मनुष्य की आधुनिकता का मूलाधार क्या है?

(अ) अवदमन (ब) अन्वेषण (क) सामाजिकता (ड) विद्रोह

४) कौन एक नये अवदमन की जननी हो जाती है?

(अ) सभ्यता (ब) संस्कृति (क) जिजीविषा (ड) क्रांति

❖❖❖❖

१२

निबंध - विविधा (निबंध - संग्रह)

मनुष्य और ठग

ओ वसंत तुम्हें मनुहा रता कचनार

इकाई की रूपरेखा:

१२.० इकाई का उद्देश्य

१२.१ प्रस्तावना

१२. २ मनुष्य और ठग

१२. २.१ लेखक परिचय - प्रेमजनमेजय

१२. २.२ व्याख्या/ समीक्षा

१२. २. ३ संदर्भसहित स्पष्टीकरण

१२. २. ४ बोधप्रश्न

१२. २. ५ वस्तुनिष्ठ / लघुत्तरी प्रश्न

१२. २. ६ वैकल्पिक प्रश्न

१२. ३ ओ वसंत तुम्हें मनुहा रता कचनार

१२. ३. १ लेखक परिचय - श्रीराम परिहार

१२. ३. २ व्याख्या/ समीक्षा

१२. ३. ३ संदर्भसहित स्पष्टीकरण

१२. ३. ४ सारांश

१२. ३. ५ बोधप्रश्न

१२. ३. ६ वस्तुनिष्ठ / लघुत्तरी प्रश्न

१२. ३. ७ वैकल्पिक प्रश्न

१२.० इकाई का उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन से विद्यार्थी निबंध - विविधा (निबंध - संग्रह) के दो निबंध का अध्ययन करेंगे | ये निबंध है - १. मनुष्य और ठग (प्रेमजनमेजय), २ ओव संत तुम्हे मनुहा रता कचनार (श्रीराम परिहार) का सम्पूर्ण अध्ययन करेंगे जिसमे लेखकों का परिचय, निबंध की समीक्षा और प्रमुख अवतरणों की संदर्भसहित व्याख्या आदि पहलु का अध्ययन किया जायगा |

१२.१ प्रस्तावना

प्रेम जनमेजय हिन्दी व्यंग्यकारों में तीसरी पीढ़ी के सशक्त हस्ताक्षर हैं। व्यंग्य श्री सम्मान और व्यंग्य भूषण सम्मान जैसे अनेकों पुरस्कार और सम्मानों से विभूषित हैं। हिंदी के सुप्रसिद्ध व्यंग्यकार हरिशंकर परसाई की परंपरा को आगे ले जाने वाले लेखकों में प्रेम जनमेजय व्यंग्य को गंभीर कर्म, सुशिक्षित मस्तिष्क के प्रयोजन की विधा मानते हुए व्यंग्य के प्रति पूरी तरह समर्पित हैं। 'व्यंग यात्रा' इनकी अपनी पत्रिका है, जिसके माध्यम से वे सामाजिक विसंगति, भ्रष्टाचार, शोषण और राजनीति के गिरते स्तर की स्थितियों पर प्रहार करते हैं।

हिंदी साहित्य में नई पीढ़ी के प्रख्यात निबंधकार, सशक्त आलोचक, लेखक श्रीराम परिहार जी अनेकों साहित्यिक, सांस्कृतिक, शैक्षणिक, सरकारी, गैर सरकारी संस्थाओं द्वारा पुरस्कृत हैं। 'निबंध लेखन का शास्त्र', 'ललित निबंध स्वरूप और परंपरा' उनकी पुस्तकें हिंदी साहित्य में अपनी तरह की विशेष कृतियाँ हैं। निबंध लेखन में श्रीराम परिहार जी हजारी प्रसाद द्विवेदी, विद्यानिवास मिश्र एवं कुबेरनाथ राय की परंपरा के वाहक हैं। लेखक को अपनी लोक संस्कृति की गहरी पहचान है। इनकी रचनाओं में लोकसंस्कृति, प्रकृति और कृषक जीवन की चुनौतियाँ और संघर्ष का वर्णन मिलता है।

१२.२ मनुष्य और ठग --प्रेम जनमेजय

१२.२.१ लेखक परिचय :

प्रेम जनमेजय हरिशंकर परिसाई की व्यंग्य परम्परा को संरक्षित रखने में खास भूमिका निभाने वाले व्यंग्यकार हैं जिनकी सबसे बड़ी विशेषता हैसामाजिक और राजनीतिक - विसंगतियों को प्रमुखता से रेखांकित करने का प्रयास। समकालीन व्यंग्य निबंधों की परम्परा में प्रेम जनमेजय का नाम बेहद सम्मान के साथ लिया जाता है। उनके निबंधों में विषयगत विविधता तो है ही, शिल्पगत प्रयोग भी इनके यहाँ खूब हुए हैं। प्रेम जनमेजय का जन्म 18 मार्च, 1948 को इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश में हुआ। उनका रचनात्मक लेखन व्यंग्य विधा पर केन्द्रित रहा। इस कारण ही वे व्यंग्य निबंधों को एक अनुपम पहचान दिलाने में सफल रहे हैं। 'राजधानी में गँवार', 'सत्यमेव जयते', 'पुलिस', 'मैं नारि माखन खायी', 'मेरी इक्यावन व्यंग्य रचनाएँ', 'शर्म मगर क्यों आती', 'डूबते सूरज का इश्क', 'कौन कुटिल खेल का भी', 'ज्यों ज्यों बूडे श्याम रंग' शीर्षक से उनके निबंध संग्रह प्रकाशित हुए हैं। साहित्य के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान के लिए उन्हें अनेक सम्मानों

पुरस्कारों से नवाजा गया है । व्यंग्य श्री सम्मान, व्यंग्य भूषण सम्मान, साहित्यकार सम्मान, हरिशंकर परसाई स्मृति पुरस्कार, प्रकाशवीर शास्त्री सम्मान से सम्मानित किए गए हैं।

१२.२.२ व्याख्या समीक्षा /

'मनुष्य और ठग' प्रेम जनमेजय द्वारा उनके लेखन के आरंभिक दौर में लिखा गया निबंध है। लेखक ने इस निबंध के माध्यम से शोषण और भ्रष्टाचार की श्रृंखलाबद्ध योजना की ओर संकेत किया है। कथात्मक शैली में क्रमबद्ध रूप से घटनाओं का वर्णन किया गया है। निबंध के घटक पात्रों की कल्पना चार ठगों के रूप में की गई है। इन चार ठगों द्वारा शोषण के चार प्रकारों का चित्रण आम आदमी को केंद्र में रखकर किया गया है। किस प्रकार भ्रष्टाचार और राजनीति के नारे और विषम स्थितियां जनमानस को झकझोर देती हैं। शासन व्यवस्था का दबाव उसे पंगु बना देता है।

पहला ठग अहिंसा और खादी का प्रेमी गांधीवाद में विश्वास करने वाला शांति और अहिंसा के नाम पर मनुष्य को त्याग और दयालुता का पाठ पढ़ाकर उनकी सुरक्षा को समाप्त कर देता है। जिसका परिणाम आगे चलकर दूसरे ठग के रूप में मनुष्य जीवन में आ जाता है।

दूसरा ठग धर्मांधता का प्रतीक है। वह मनुष्य को धर्म का पाठ पढ़ाता है, उसे अंधा बना देता है। उसके मन मस्तिष्क को अपनी बातों से प्रभावित कर, उसे धर्मांध ही नहीं बल्कि आँखों से भी अंधा बना देता है। अब धर्मांध व्यक्ति या समाज को अपने धर्म और मान्यताओं में ही जीवन का सत्य दिखाई देता है। उसकी सोच यहीं तक सीमित रह जाती है। धर्म के नाम पर की जाने वाली भ्रष्ट नीति का प्रतीक यह दूसरा ठग होता है। इसका ठगने का तरीका प्रभावशाली होता है। क्योंकि अपना धर्म सभी को प्यारा होता है। इसकी बातों से लोग जल्दी प्रभावित हो जाते हैं।

तीसरा ठग घोड़े पर सवार राजसी वस्त्रों में सजा स्वयं को राजा बतलाकर मनुष्य को आगे बढ़ने से रोकता है। क्योंकि मनुष्य पहले ही अपनी सोचने समझने और देखने की शक्ति हो चुका है। रुकना उसकी नियति है। अहिंसा और धर्म ने हर अन्याय को सहने को बाध्य कर दिया है। तीसरा ठग उसकी व्यवस्था का लाभ उठाकर उसे खिला-पिलाकर उसकी जीभ काट लेता है। फुसलाकर कहता है कि हम हमेशा उसका ध्यान रखेंगे, लेकिन जैसे ही उस पर विश्वास कर मनुष्य निश्चिंत मन से झपकी लेता है। तीसरा ठग उसके झोले को उठा लेता है और भागकर अपने साथियों के पास चला जाता है। यह उन नेताओं का प्रतीक है, जो भोलीतरह के आश्वासन तो देते हैं-भाली जनता को तरह-, लालच देकर उसका मुंह बंद कर देते हैं, और वोट मिलने पर उन्हें भुला देते हैं।

चौथा ठग अपंग और लाचार मनुष्य को उठाकर चल देता है, और अपने साथियों से कहता है मैं इससे श्रम करवाऊँगा और उसका फल मैं लूँगा। इस तरह यह हमेशा मेरे काम आएगा। चौथा ठग शासकीय नीतियों और व्यवस्था का प्रतीक है, जो आम जनता का शोषण करती है। लोकतंत्र में जहाँ हर व्यक्ति को अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और

सम्मानित जीवन जीने का अधिकार है। वह इस ठगीय व्यवस्था के चलते आम जनता को नहीं मिलता। पूँजी और सत्ता का चतुराई भरा खेल लगातार चलता रहता है। देश की चतुर चालू व्यवस्था में अहिंसा, धर्म, दान और सहायता के नाम पर सुनियोजित शोषण की परंपरा चली आ रही है।

इस कथात्मक शैली में लिखे गए निबंध में लेखक ने मनुष्य के जीवन में व्याप्त विसंगतियों को लक्ष्य बनाकर अपनी बात कही है। तमाम अंतर्विरोध सामाजिक राजनैतिक परिस्थितियों से अनुस्यूत विविध विचारधाराओं और घटनाओं से लेकर, मानव स्वभाव, व्यापार और आचरण में सभी जगह पाए जाते हैं। पाखंड और विसंगति को लोकहित में उजागर करना ही व्यंग्यकार का मुख्य उद्देश्य है।

अपनी रचनाओं में विषय गत विविधता और शिल्प आयोजन के लिए प्रसिद्ध प्रेम जनमेजय जी ने घटनाक्रम के द्वारा इस निबंध को लघुकथा के रूप में लिखा है। व्यंजना के द्वारा प्रतीकों और शब्द बिंबो द्वारा प्रतीकात्मक भाषा में लेखक का व्यंग पाठक के मन को प्रभावित करने में सक्षम है, यही लेखक की सफलता है।

१२.२.३ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण:

“ हम यहाँ के राजा हैं और हमें ईश्वर ने तेरी भलाई के लिए भेजा है। हमें तू ईश्वर के समान शक्तिशाली समझ। तेरी सुरक्षा का भार अब हम पर है। हम तेरे हितों की रक्षा करेंगे।”

संदर्भ : उपर्युक्त अवतरण डॉअनिल सिंह जी द्वारा संपादित पुस्तक . ‘निबंध विविधा' में संकलित निबंध ‘मनुष्य और ठग' से उद्धृत है। इसके निबंधकार प्रेम जनमेजय जी हैं।

प्रसंग :इस निबंध में निबंधकार ठगी की नई तकनीकों को उजागर करते हैं। समाज में व्याप्त शोषण और भ्रष्टाचार की श्रृंखलाबद्ध योजना की ओर संकेत किया है।

व्याख्या :दूसरे ठग द्वारा मनुष्य ठगे जाने पर जब आगे बढ़ता है तो उसे रास्ते में राजसी वेश मे तीसरा ठग मिलता है। वह खुद को राजा बताकर अपने हुक्म का पालन करने का आदेश मनुष्य को देता है। ठग यह भी आश्वासन देता है कि ईश्वरीय शक्ति के कारण वह उसकी सुरक्षा करेगा और उसके हितों की भी रक्षा करेगा। जैसे ही मनुष्य आश्वस्त होता है वह उसे खिलाका प्रतीक है पिलाकर उसकी जीभ काट लेता है। यह उन नेताओं-, जो भोलीतरह के आश्वासन देकर-भाली जनता को तरह-, लालच देकर उसका मुँह बंद कर देते हैं और वोट मिलने पर उसे भुला देते हैं।

विशेष :यहाँ देश की चतुर चालू व्यवस्था में अहिंसा, धर्म, दान और सहायता के नाम पर सुनियोजित शोषण की परंपरा का उद्घाटन हुआ है।

१२.२.३ बोधप्रश्न:

१. मनुष्य और ठग निबंध में गांधीजी के विचार किस प्रकार प्रतिपादित हुए है | समझाइए |

२. मनुष्य और ठग निबंध की समीक्षा कीजिए |

३. मनुष्य और ठग निबंध को आज के परिदृश्य में व्याख्यायित कीजिए |

१२.२.४ वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

प्रश्न १. मनुष्य जब करीब आया तो पहला ठग क्या करने लगा?

उत्तर: मनुष्य जब करीब आया तो पहला ठग भजन गाने लगा। :

प्रश्न २. पहले ठग ने मनुष्य को क्य पहनाया?

उत्तर: पहले ठग ने मनुष्य को टोपी और खादी के वस्त्र का जोड़ा पहनाया। :

प्रश्न ३. दूसरे ठग ने कैसा वस्त्र धारण किया था?

उत्तर: दूसरे ठग ने गेरुए वस्त्र धारण किया था। :

प्रश्न ४. तीसरे ठग ने मनुष्य का कौन सा अंग काट लिया?

उत्तर: तीसरे ठग ने मनुष्य की :जीभ काट ली।

प्रश्न ५. चौथे ठग ने मनुष्य के लिए क्या किया?

उत्तर: र पेय का प्रबंध किया।चौथे ठग ने मनुष्य के लिए स्वादिष्ट भोजन औ :

१२.२.५ वैकल्पिक प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

१. कुल कितने ठग थे?

(अ) चार (ब) छह (क) तीन (ड) पाँच

२. ठगों को सामने से कौन आता दिखाई दिया?

(अ) जानवर (ब) बच्चा (क) मनुष्य (ड) गाड़ी

३. तीसरे ठगने कैसा वस्त्रधारण किया था?

(अ) गेरुआ (ब) राजकीय (क) साधारण (ड) खादी

४. मनुष्य का थैला किसने चुराया?

(अ) पहले ठगने (ब) दुसरे ठगने (क) तीसरे ठगने (ड) चौथे ठगने

१२.३ ओ वसन्त- तुम्हें मनुहारता कचनार :श्रीराम परिहार

१२.३.१ लेखक परिचय :

समकालीन निबंध विधा में अपनी विशिष्ट पहचान रखने वाले श्रीराम परिहार का जन्म 16 फरवरी, 1953 को खंडवा, मध्यप्रदेश में हुआ। इनके निबंधों में भारतीय लोक संस्कृति का प्रतिबिंब न सबसे अधिक हुआ जीवन का दुख, उसका संघर्ष तथा किसानों की चुनौतियों का रेखांकन बेहद प्रभावशाली ढंग से करने वाले श्रीराम परिहार ने चकाचौंध से हमेशा दूरी बनाकर रखी। साहित्य साधना उनका मुख्य ध्येय रहा है। किसी जोड़तोड़ की राजनीति से विमुख श्रीराम परिहार के निबंधों में पर्यावरण की चुनौतियाँ, कृषक जीवन की त्रासदी, आधुनिकता और परम्परा, हाशिए का जीवन स्पष्ट दिखाई पड़ता है। एक निबंधकार के रूप में श्रीराम परिहार ने खूब ख्याति बटोरी है। 'आँच अलाव की', 'अँधेरे में उम्मीद', ‘बजे तो वंशी, गूँजे तो शंख', 'ठिठरे पल पंखुरी पर', 'रसवंती बोलो तो', 'झरते फूल हरसिंगार के', 'धूप का अवसाद', 'हँसा करो पुरातन बात', 'भय के बीच भरोसा', 'परम्परा का पुनराख्यान', 'रचनात्मकता और उत्तर परम्परा' शीर्षक से श्रीराम परिहार के निबंध संग्रह प्रकाशित हुए हैं। आप नवगीत केन्द्रित पत्रिका ‘अक्षत' का सम्पादन कर रहे हैं। साहित्य साधना के लिए श्रीराम परिहार वागीश्वरी पुरस्कार, चक्रधर सम्मान, निर्मल पुरस्कार जैसे अनेक सम्मानों से नवाजे गये हैं।

हिंदी साहित्य में नई पीढ़ी के प्रख्यात निबंधकार, सशक्त आलोचक, लेखक श्रीराम परिहार जी अनेकों साहित्यिक, सांस्कृतिक, शैक्षणिक, सरकारी, गैर सरकारी संस्थाओं द्वारा पुरस्कृत हैं। 'निबंध लेखन का शास्त्र', 'ललित निबंध स्वरूप और परंपरा' उनकी पुस्तकें हिंदी साहित्य में अपनी तरह की विशेष कृतियाँ हैं। निबंध लेखन में श्रीराम परिहार जी हजारी प्रसाद द्विवेदी, विद्यानिवास मिश्र एवं कुबेरनाथ राय की परंपरा के वाहक हैं। लेखक को अपनी लोक संस्कृति की गहरी पहचान है। इनकी रचनाओं में लोकसंस्कृति, प्रकृति और कृषक जीवन की चुनौतियाँ और संघर्ष का वर्णन मिलता है।

१२.३.२ व्याख्या समीक्षा / :

'ओ बसंततुम्हें मनुहारता कचनार : !' निबंध में लेखक ने वर्तमान शिक्षा प्रणाली को केंद्र में रखकर उसके मानव समाज और समस्त सृष्टि पर पड़ने वाले प्रभाव पर चिंतनमनन - किया है। वर्तमान में गुरुकुल की परंपरा समाप्त हो गई है। इसके साथ ही पुरानी परंपरा और आस्था भी नहीं रही। डिग्री धारियों की संख्या बढ़ रही है, और सुजान नागरिकों की संख्या घट रही है। आज शिक्षा का संबंध नौकरी पाने तक ही सीमित रह गया है। बूढ़े और खखराए हुए कचनार के पेड़ को देखकर लेखक को वसंत ऋतु में भी इसी कचनार के फूलों से भर जाने पर छा जाने वाली सुंदरता स्मरण हो जाती है। वह अपने छात्रों को वसंत के विषय में बताना चाहते हैं, पर छात्रों को इस विषय में कोई रुचि नहीं है। लेखक सोच में पड़ जाता है, उसे लगता है आज की शिक्षा पद्धति बेजान हो गई है। तभी कोयल का स्वर मानो 'कौन ठगवा नगरिया लूटल हो' कुछ ऐसा अर्थ दे जाता है। उसे लगता है

प्रकृति को आधुनिक शिक्षा पद्धति ने बुरी तरह लूटाखसोटा है। प्रकृति से मनुष्य क्यों - रहा है और किस प्रकार दूर होता जा? क्या यही शिक्षा हम नई पीढ़ी को दे रहे हैं?

शिक्षा की यह नीति सिर्फ अर्थोपार्जन सिखा रही है। इसका जीवन की वास्तविकता और व्यवहार से कोई सरोकार नहीं है। मशीनों के युग ने मनुष्य के चरित्र को बदलकर रख दिया है। शहरीकरण को बढ़ावा दिया है और ग्रामीण संस्कृति का विनाश किया है। आज शिक्षा ग्रहण करने के दो ही मकसद रह गए हैं, शिक्षा प्राप्त कर नौकरी करना या फिर राजनीतिक पार्टियों की शरण में जाना। झंडे उठाकर तोड़फोड़ और आंदोलन की नीति अपना लेना। जहाँ रचना होनी चाहिए वहाँ विध्वंस का भाव दिख रहा है। शिक्षा ने प्रकृति के दोहन का भी तरीका इजाद किया है। मनुष्य प्रकृति से छेड़छाड़ करने की कला में कुशल हो गया है। वृक्षारोपण के कृत्रिम तरीके अधिक उपज के लालच में फूल, फल, सब्जियों के साथ भी अप्राकृतिक तरीके अपनाए जा रहे हैं। इन तरीकों ने धान्य और वन संपदा को तो नुकसान पहुंचाया ही है, मानव स्वास्थ्य से संबंधित समस्याओं को भी बढ़ाया है। प्राचीन काल में शिक्षा ज्ञान की परंपरा का वाहक, संस्कृति की संरक्षक हुआ करती थी, पर आज अर्थोपार्जन का साधन बन गई है। यह शिक्षा पद्धति उपाधि धारकों को नौकरी दिलाने मैं सहायक है, पर सुजान नागरिक नहीं बनाती। सुंदर फूल और फलों के बजाय बबूल के कंटीले पेड़ उगा रही है।

आर्थिक उन्नति के आधार पर चकाचौंध वाले जीवन की लालसा ने हमारी नई पीढ़ी को भारतीय संस्कृति से विमुख कर दिया है। हमारे पौराणिक ग्रंथों का स्थान आधुनिक विज्ञान ने ले लिया है। पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव ने जीवन में व्यावहारिकता के मायने बदल दिए हैं। पतझड़ का शिकार हो चली है। आज मनुष्य अनेकों प्राकृतिक आपदाओं को झेल रहा है। यह मनुष्य द्वारा प्रकृति में अपनी चेतना को प्रस्थापित करने का परिणाम है।

प्रकृति हमारे जीवन में संसाधनों का पूरक ही नहीं बल्कि एक व्यवस्था भी है। बदलते मौसम, उनसे जुड़े उत्सव, तिथियाँ हमारे जीवन में निखार लाते हैं। हिमालय की ऊंचाई देश की सुरक्षा ही नहीं, धर्म और दृढ़ता का भी संदेश देती है। प्रकृति से मानव की दूरी ने विषम परिस्थितियों को ही जन्म दिया है। किताबों का स्थान जीवन में ना रहकर मशीनों में हो गया है। चैत्रफरवरी पढ़ाया जा रहा है। नागरिक शास्त्र -वैशाख के स्थान पर जनवरी- पर राजनीति शास्त्र हावी हो गई है। स्वदेशी भाषा से दूरी और विदेशी भाषाओं के प्रति नत से अनप्रेम बढ़ता जा रहा है। पर्यावरण विषय पढ़ाया जाता है पर कृषक की मेह◌ाज हमें मिलता है। मनुष्य के साथ अन्य प्राणियों को भी जीने का अधिकार है। इसका ज्ञान भी आवश्यक है प्रकृति के नियम तोड़कर मनुष्य प्राकृतिक आपदाओं को ही निमंत्रित कर रहा है।

मानव सृष्टि का सबसे बुद्धिमान प्राणी है। प्रकृति ने उसे बहुत कुछ दिया है, सिखाया है जो एक दूसरे के पूरक हैं। मानव और प्रकृति पतझड़ और बसंत हमें जीवन में उतारचढ़ाव - का संदेश देते है। कवि की काव्य कल्पना भी प्रकृति को गोद में ही जन्म लेती है और विज्ञान के सिद्धांत भी। प्रकृति और मानव चेतना के बीच भावनात्मक संबंध है जीवन में

ति और साआंतरिक शांधना का भाव भी प्रकृति ही देती है। यहाँ श्रीराम परिहार जी ने धर्मवीर भारती कृत अंधा युग का उल्लेख किया है। अंधा युग के माध्यम से कवि ने जीवन में चुनौतियों, आस्था और मर्यादा के मापदंडों को समझने का, स्वीकार करने का संदेश दिया है। इस कला को हम प्रकृति और लोक संस्कृति से जोड़कर सीख सकते है। लेकिन वर्तमान शिक्षा पद्धति में हमारी संस्कृति के आस्था और मर्यादा से जुड़े सोपान नहीं हैं।

लेखक नई पीढ़ी को संदेश देना चाहते हैं कि तकनीकी विकास के साथ अपने संस्कृति का तालमेल भी आवश्यक है। विदेशी संस्कृति की अच्छी बातें पूर्ण करें पर अपनी संस्कृति का मूल संरक्षण फूलों में सुगंध की तरह करें। नई पीढ़ी हमारा भविष्य है, उन्हें संस्कार देना हमारी जिम्मेदारी है। लेखक आशान्वित है, हालाँकि कचनार का पेड़ सूखा है पर उसकी छाती में कुछ हरियाली अभी भी है, और उसके नीचे नन्हा सा पलाश का पौधा उग आया है। कचनार में दिख रही किंचित हरियाली और पलाश का पौधा लेखक के मन में भविष्य के प्रति उम्मीद जगाते हैं कि आनेवाली पीढ़ी संस्कृति और प्रकृति के महत्व को समझेगी। इनसे टूटा संबंध पुनः प्रगाढ़ होगा और मानव जीवन सुरभीत होगा।

प्रस्तुत निबंध में प्रकृति और संस्कृति को लेकर लेखक की शोध दृष्टि और चिंतन परिलक्षित होता है। अपने देश की संस्कृति के मूल्यों के आधार पर उसकी विशेषताओं को प्रस्तुत किया गया है। भारतीय संस्कृति से विमुख हो रही पीढ़ी को भौतिकता की अंधी दौड़ से बचाने का प्रयास भी है। संस्कृति, प्रकृति और मनुष्य को लेकर अपने अंतस के क्रंदन को लेखक ने अत्यंत प्रांजल और लालित्य पूर्ण ढंग से व्यक्त किया है। निबंध की विषयानुकूल भाषा में सौम्यता भी है जो कि लेखक के लेखन शैली की विशेषता है।

१२.३.३ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण:

“एक बेजान शिक्षा पद्धति नयी पीढ़ी की जमीन पर रोपी जाती रही। विद्यालयों और महाविद्यालयों में जो कुछ पाया जा रहा है उसका पढ़लिख जाने के बाद जीवन और -व्यवहार से कितना सरोकार शेष रहता है, यह छुपा नहीं है।”

संदर्भ :उपर्युक्त अवतरण डॉअनिल सिंह जी द्वारा संपादित पुस्तक . ‘निबंध विविधा' में संकलित निबंध ‘ओ वसंततुम्हें मनुहारता कचनार !' से उद्धृत है। इसके निबंधकार श्रीराम परिहार जी हैं।

प्रसंग :निबंधकार वर्तमान शिक्षा व्यवस्था पर अपने विचार व्यक्त करता है। उनका मानना है कि आज की पीढ़ी को विद्यालयों या महाविद्यालयों कके पाठ्यक्रम में जो भी शिक्षा दी जा रही है वह बिलकुल ही बेजान है। जिसमें व्यावहारिक ज्ञान जरा भी नहीं रह गया है। विद्यार्थी धनवान, विद्वान, वैज्ञानिक, नेता और अफसर तो बन जा रहे हैं ऐसी शिक्षा लेकर लेकिन आदमी और नागरिक नहीं बन पा रहे। आज की शिक्षा पद्धति में न प्राकृतिक प्रेम है, ना सांस्कृतिक संरक्षण की बात रह गयी है, अपितु केवल अर्थोपार्जन का साधन बन गई है।

विशेष :यहाँ वर्तमान शिक्षा पद्धति को लेकर निबंधकार की चिंता साफ प्रकट हुई है। शिक्षा व्यवस्था में परंपरा, संस्कृति के अभाव के चलते विद्यार्थियों के दिशाहीन होने से लेखक के अंतस की पीड़ा बड़ी सौम्यता से प्रकट हुई है।

१२.३.४ सारांश

इस इकाई के अध्ययन से विद्यार्थी निबंध - विविधा (निबंध - संग्रह) के दो निबंधका अध्ययन किया है | ये निबंध है - १. मनुष्य और ठग (प्रेमजनमेजय), २ ओ वसंत तुम्हे मनु हारता कचनार (श्रीराम परिहार) आशा है कि इस इकाई के अध्ययन से विद्यार्थी लेखकों का परिचय, निबंध की समीक्षा और प्रमुख अवतरणों की संदर्भसहित व्याख्या आदि पहलु ओं से अवगत हुए होंगे |

१२.३.५ बोध प्रश्न:

१. आज की शिक्षा पद्धति में न प्राकृतिक प्रेम है, ना सांस्कृतिक संरक्षण की बात रह गयी है, अपितु केवल अर्थो पार्जन का साधन बन गई है । किस प्रकार लेखक ने निबंध में चर्चा व्यक्त की है | समझाइए |

२. 'ओ वसंत तुम्हे मनुहा रता कचनार' निबंध में प्राकृतिक प्रेम की और लेखक का रुझान क्यों और कैसे गया? विवरण दीजिए |

३. 'ओ वसंत तुम्हे मनुहा रता कचनार' निबंध की समीक्षा कीजिए |

१२.३.६ वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

प्रश्न १. वसंत ऋतु के आगमन की सूचना कौन देता है?

उत्तर: खिला हुआ कचनार वसंत ऋतु के आगमन की : सूचना देता है।

प्रश्न २. कैसी पद्धति नयी पीढ़ी की जमीन पर रोपी जा रही है।

उत्तर: जमीन पर रोपी जा रही है। एक बेजान शिक्षा पद्धति नयी पीढ़ी की :

प्रश्न ३. किताबी शिक्षा ने पीढ़ियों के दिमागों पर क्या बना दिया है?

उत्तर: किताबी शिक्षा ने पीढ़ियों के दिमागों पर :डामर की सड़कें बना दी हैं।

प्रश्न ४. गुरु और शिष्य के बीच में कौन सेतु बनता था?

उत्तर: ज्ञान ही सेतु बनता था। गुरु और शिष्य के बीच में :

प्रश्न ५. विकास किसका चोला पहनकर आया?

उत्तर: विकास अंग्रेजीयत का चोला पहनकर आया। :

१२.३.७ वैकल्पिक प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

१. हमारा भविष्य कौन है?

(अ) प्रकृति (ब) नयी पीढ़ी (क) पुरानी पीढ़ी (ड) सरकार

२. हम कौनसा चश्मा लगाकर स्वयं को देखने परखनेलगेहैं-?

(अ) काला (ब) स्वदेशी (क) विदेशी (ड) सांस्कृतिक

३.पढ़ाई लिखाई के बारे में आरम्भ से ही क्या पाने की धारणा जोड़ दी गयी है ?

(अ) नौकरी (ब) उच्च शिक्षा (क) समाज (ड) राजनीति

४.निबंधकार किसका स्वागत करते हैं?

(अ) वसंत का (ब) अतिथि का (क) विद्यार्थियों का (ड) भविष्य का

❖❖❖❖

नमूना प्रश्न पत्र

Semester – VI Course – V

समय : 3:00 घंटे पूर्णांक : 100

सूचना : 1. अंतिम प्रश्न अनिवार्य है।

2. सभी प्रश्नों के लिए समान अंक है।

प्रश्न 1. स्वातंत्र्योत्तर कविता की संवेदना पर प्रकाश डालिए। 20

अथवा

स्वातंत्र्योत्तर निबंध साहित्य का विकास स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न 2. निम्नलिखित अवतरणों की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए। 20

क) "पग-पग पर तीर्थ है,
मंदिर भी बहुतेरे हैं;
तू जितनी करे परिकम्मा, जितने लगा फेरे
मंदिर से, तीर्थ से, यात्रा से।"

अथवा

क्या होती है, तुम्हारे भीतर धमस
कटकर गिरता है जब कोई पेड़ धरती पर ?
सुना है कभी
रात के सन्नाटे में अंधेरे से मुँह ढाँप
किस कदर रोती हैं नदियाँ ?

ख) "मैंने मन में कहा ठीक। बाज़ार आमंत्रित करता है कि आओ मुझे लूटो और लूटो। सब भूल जाओ, मुझे देखो।" 20

अथवा

"ताबड़तोड़ हरियाली लाने के लिए वानस्पतिक संसार के दावेदारों ने पोची हरीतिमा वाली जड़ों का पोषण शुरू कर दिया।"

प्रश्न 3. 'थोड़े-से बच्चे और बाक़ी बच्चे' कविता की संवेदनाएँ स्पष्ट कीजिए। 20

अथवा

'रात किसी का घर नहीं' कविता की मूलसंवेदना स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न 4. 'आँगन का पंछी' निबंध का भाव-सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए। 20

अथवा

'पाप के चार हथियार' निबंध का संदेश स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न 5. किन्हीं दो विषयों पर टिप्पणियाँ लिखिए। 20

क) 'चुप्पी टूटेगी' कविता की मूल संवेदना ख) 'नया कवि'कविता का भाव

ग) 'मनुष्य और ठग'का आशय घ) 'रसायन और हमारा पर्यावरण'निबंध का उद्देश्य